सूर्योदय : 6:07
सूर्यास्त : 5:34
अधिकतम तापमान : 31.0
न्यूनतम : 18.0

RNI NO : UPHIN/2010/31173

डाक पंजीकरण संख्या:
SSP/LW/NP-422/2014-2016

वर्ष-17 अंक-149 पेज-12
मूल्य : 3 रुपया

लखनऊ, सोमवार, 06 नवम्बर 2023
21 रबीउस्सानी, 1445 हिजरी

हिन्दी दैनिक

अवधनामा

www.avadhnama.com

रक्षामंत्री ने दिया महिला सैनिकों को दिवाली का बड़ा तोहफा

मिलेगी मैटरनिटी लीव

अधिकार

- अभी तक सिर्फ वुमन ऑफिसर्स को मिलती थी, अग्निवीरों को भी मिलेगी मैटरनिटी लीव

नई दिल्ली। केंद्र सरकार ने महिला सैनिकों को दिवाली से पहले बड़ा तोहफा दिया है। अब महिला सैनिकों को एक समान मैटरनिटी लीव मिलेगी, भले ही वो किसी रैंक पर हों। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने सभी महिला सैन्यकर्मियों को समान रूप से मातृत्व, शिशु देखभाल और दत्तक ग्रहण अवकाश देने संबंधी प्रस्ताव को मंजूरी दे दी है। रक्षा मंत्रालय ने कहा कि इस फैसले से सशस्त्र बलों में हर रैंक की महिलाओं की 'समावेशी भागीदारी' सुनिश्चित होगी। रक्षा मंत्रालय ने कहा रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने सशस्त्र बलों में महिला सैनिकों, नाविकों और वायु सैनिकों के लिए उनकी समकक्ष अधिकारियों के बराबर मातृत्व, शिशु देखभाल और दत्तक ग्रहण अवकाश देने संबंधी नियमों को लागू करने से जुड़े प्रस्ताव को मंजूरी दे दी है। मंत्रालय ने कहा, कि इन नियमों के जारी हो जाने से सेना में सभी महिलाओं को समान रूप से ये छुट्टियां मिलेंगी, भले ही वे कोई अधिकारी हो या किसी अन्य रैंक पर कार्यरत हों।

> अधिकारियों ने बताया कि इस समय महिला अधिकारियों को हर बच्चे के लिए 180 दिन का मातृत्व अवकाश मिलता है। यह नियम अधिकतम दो बच्चों पर लागू होता है। उन्होंने बताया कि महिला अधिकारियों को संपूर्ण सेवा कार्यालय में 360 दिन का शिशु देखभाल अवकाश मिलता है इसके लिए बच्चे की आयु 18 वर्ष से कम होनी चाहिए।

बड़े बदलाव की शुरुआत

मंत्रालय ने एक बयान में कहा, अवकाश संबंधी नियमों के विस्तार से सशस्त्र बलों में महिला-विशिष्ट पारिवारिक और सामाजिक समस्याओं से निपटने में काफी मदद मिलेगी। तीनों सेनाओं ने 'नारी शक्ति' का उपयोग करने की प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व वाली केंद्र सरकार की प्रतिबद्धता के अनुरूप सैनिकों, नाविकों और वायु सैनिकों के रूप में महिलाओं को शामिल करके एक बड़े बदलाव की शुरुआत की है।

कांग्रेस घोटालों की पार्टी: मोदी

पीएम मोदी ने दोहराई पांच सालों के लिए फ्री राशन की गारंटी

तंज

- गरीबी समझने के लिए कोई किताब पढ़ने की जरूरत नहीं

सिवनी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने रविवार को मध्य प्रदेश के सिवनी में चुनाव प्रचार के दौरान के विशाल जनसभा को संबोधित किया। इस दौरान उन्होंने अपनी सरकार के फैसले को दोहराते हुए गरीबों के लिए मुफ्त राशन योजना को पांच साल और बढ़ाने की बात कही।

उन्होंने कहा कि मैं गरीबी जीकर आया हूं, मुझे गरीबी जानने के लिए किसी किताब को पढ़ने की जरूरत नहीं है। रैली को संबोधित करते हुए पीएम मोदी बोले, मैंने गरीबों के दर्द को महसूस किया है। इसलिए हमने प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना जो दिसंबर महीने में पूरी हो जाएगी, उसे अगले 5 वर्षों के लिए जारी रखने का निर्णय लिया है. अब अगले पांच सालों तक फ्री राशन दिया जाएगा. यह मोदी की गारंटी है। पीएम ने आगे कहा कि यह बीजेपी है, जिसके लिए गरीब, पिछड़ा, दलित, आदिवासी सब परिवार का हिस्सा है। इस दौरान उन्होंने कांग्रेस पर हमला करते हुए कहा कि कांग्रेस का नारा है, गरीब की जेब साफ, काम हाफ से भी हाफ पीएम मोदी ने कांग्रेस के कार्यकाल को याद दिलाते हुए कहा, 2014 से पहले कांग्रेस का एक-एक घोटाला लाखों-करोड़ों का होता था, अब बीजेपी सरकार में घोटाले का कोई नामो निशान नहीं है। गरीबों के लिए बचाया गया पैसा उनकी राशन योजनाओं पर खर्च होता है। कांग्रेस की भ्रष्ट सरकार और बीजेपी सरकार में यहीं अंतर है। पीएम ने कहा कि हमारे ऋषि-मुनियों ने देश के लिए क्या-क्या नहीं किया। देश के कोने-कोने में जाकर देश को जोड़ा था।

कांग्रेस चुनाव लड़ने का कर रही ढोंग: पीएम

पीएम ने आरोप लगाया कि कांग्रेस पार्टी मध्य प्रदेश में चुनाव लड़ने का ढ़ोंग कर रही है। उन्होंने कहा, कांग्रेस के लिए अपने परिवार से बड़ा को नहीं है। कांग्रेस जहां भी सत्ता संभालती है, वहां सरकारी योजनाएं, सड़कें, गलियां सब कुछ उस परिवार के नाम पर होता है। कांग्रेस का न खुद कोई भविष्य है और न ही उनके पास मध्य प्रदेश के युवाओं के भविष्य के लिए कोई रोडमैप है. कांग्रेस आज भी अपने दादा-दादी के काम पर वोट मांगती है। यहा लोगों की गारंटी है कि बीजेपी यहां चुनाव जीते जा रही है।

नक्सलियों की छाती रौंदेगा यूपी का बुलडोजर: मुख्यमंत्री योगी

निशाना

- घोटाले पर घोटाला करना कांग्रेस का संस्कार बन चुका है

बस्तर। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि छत्तीसगढ़ में नक्सलियों की छाती को यूपी का बुलडोजर रौंदेगा। उन्होंने छत्तीसगढ़ की कांग्रेस सरकार पर घोटाले का आरोप लगाते हुए कहा कि गरीब की कमाई पर डकैती डालने वालों को यूपी जैसी सजा मिलनी चाहिए। मुख्यमंत्री ने रविवार को छत्तीसगढ़ के सुकमा और बस्तर में भाजपा प्रत्याशियों के समर्थन में चुनावी सभा को संबोधित किया। पूर्व मुख्यमंत्री रमन सिंह के समर्थन में रोड शो भी किया।

बस्तर में चुनाव प्रचार के आखिरी दिन रविवार को चुनावी सभा को संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री योगी ने कहा कि लव जेहाद के नाम पर भाजपा कार्यकर्ताओं, गरीबों, आदिवासियों की हत्या स्वीकार नहीं होगी। कहा कि घोटाले पर घोटाला करना कांग्रेस का संस्कार बन चुका है। भाजपा सरकार आने पर इनके घोटालों की जांच कराई जाएगी। उन्होंने कहा कि कांग्रेस के इशारे पर नक्सलियों ने भाजपा कार्यकर्ता रतन दुबे की हत्या की है। रतन दुबे की हत्या कांग्रेसियों व नक्सलियों की बौखलाहट है। उन्हें पता है कि डबल इंजन की सरकार आ रही है। आते ही यूपी का बुलडोजर इनकी छाती रौंदेगा। कहा कि नक्सलवाद का खात्मा होगा और धर्मांतरण भी रोका जाएगा। सीएम ने कहा कि छत्तीसगढ़ सरकार ने आस्था से खिलवाड़ किया है। कहा कि सरकार की नीयत साफ हो तो नियंता सब कुछ देता है। गरीब बेबस नहीं होना चाहिए, उसके चेहरे पर लाचारी नहीं होनी चाहिए।

सीएम ने रमन सिंह के लिए किया रोड शो

मुख्यमंत्री ने राजनांदगांव सीट से भाजपा प्रत्याशी पूर्व मुख्यमंत्री डॉ. रमन सिंह के समर्थन में रोड शो किया। रोड शो में हजारों लोगों ने योगी का स्वागत किया। उन्होंने कहा कि जनवरी में अयोध्या में रामलला अपने मंदिर में विराजमान होंगे। रामलला का अपने मंदिर में विराजमान होना ही रामराज्य की घोषणा है।

जन्मदिन पर विराट कोहली ने 49वें शतक के साथ बनाए पांच रिकॉर्ड

साउथ अफ्रीका 83 रन पर ढेर

कहर

- रवींद्र जडेजा ने पांच विकेट हासिल किए
- कोहली ने बनाए नाबाद 101 रन

कोलकाता। भारतीय टीम का विजयी अभियान विश्व कप में जारी है। पांच नवंबर को अंक तालिका में दूसरे स्थान पर काबिज दक्षिण अफ्रीका को बुरी तरह हरा दिया। विश्व कप के 37वें मुकाबले में भारत ने कोलकाता के ईडन गार्डन्स में 243 रन से जीत हासिल की। उनके अलावा रवींद्र जडेजा ने कातिलाना गेंदबाजी करते हुए पांच विकेट झटके।

भारत अब अपने आखिरी लीग मैच में नीदरलैंड के खिलाफ 12 नवंबर को बंगलूरू के एम चिन्नास्वामी स्टेडियम में उतरेगा। भारत ने 243 रन से मैच को जीतकर बड़ा रिकॉर्ड बना दिया। उसने दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ वनडे में रनों के हिसाब से सबसे बड़ी जीत हासिल की। टीम इंडिया ने पिछली बार अफ्रीकी टीम को 2003 में 153 रन से हराया था। इसके अलावा 2010 में ग्वालियर के मैदान पर भी 153 रन से ही हराया था। भारत ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करते हुए पांच विकेट खोकर 326 रन बनाए। भारत के लिए सबसे ज्यादा नाबाद 101 रन विराट कोहली ने बनाए। उन्होंने वनडे में 49वां शतक लगाया और सचिन के विश्व रिकॉर्ड की बराबरी की। श्रेयस अय्यर ने 77 और कप्तान रोहित ने 40 रन का योगदान दिया। दक्षिण अफ्रीका के लिए एडेन मार्करम को छोड़ सभी गेंदबाजों ने एक-एक विकेट लिया। यह मैच विराट कोहली के शानदार शतक और रवींद्र जडेजा की कातिलाना गेंदबाजी के लिए याद किया जाएगा। इस जीत में पूरी टीम का योगदान अहम है, लेकिन इनदोनों ने अपना अलग प्रभाव छोड़ा। कोहली ने मुश्किल परिस्थितियों में बल्लेबाजी करते हुए विकेट को संभाले रखा।

मैं सचिन जैसा कभी नहीं बन पाऊंगा

क्रिकेट के भगवान कहे जाने वाले सचिन तेंदुलकर ने विराट कोहली को 49 शतक लगाने पर बधाई दी। हालांकि, मैच के बाद जब कोहली को इस बारे में बताया गया तो वह भावुक हो गए। उन्होंने कहा कि मैं सचिन की कभी बराबरी नहीं कर पाऊंगा।

द. अफ्रीका के आठ बल्लेबाज दहाई का आंकड़ा नहीं छू सके

दक्षिण अफ्रीका की टीम सिर्फ 83 रन बना सकी। सबसे ज्यादा 14 रन मार्को यानसेन ने बनाए। उनके अलावा डुसेन ने 13 रन और बावुमा-मिलर ने 11-11 रन बनाए। इनके अलावा कोई भी अफ्रीकी बल्लेबाज दहाई का आंकड़ा पार नहीं कर पाया। भारत के लिए रवींद्र जडेजा ने पांच विकेट लिए। मोहम्मद शमी और कुलदीप यादव को दो-दो विकेट मिले। मोहम्मद सिराज ने एक विकेट लिया।

महुआ मोइत्रा मामले में बैठक सात को

मुंबई। तृणमूल कांग्रेस की सांसद महुआ मोइत्रा पर 'पैसे के बदले प्रश्न पूछने' के आरोपों की जांच कर रही लोकसभा की आचार समिति की अहम बैठक सात नवंबर को होगी। इस दौरान मसौदा रिपोर्ट को स्वीकार करने पर चर्चा की जाएगी। बैठक की तारीख से ऐसे मायने निकाले जा रहे हैं कि भाजपा सांसद विनोद कुमार सोनकर की अध्यक्षता वाली समिति ने अपनी जांच पूरी कर ली है और अब वह अपनी सिफारिश करेगी। इससे पहले समिति के सदस्य दो नवंबर को साथ आए थे। समिति में 15 सदस्य हैं, जिनमें बहुमत भाजपा का है। समिति मोइत्रा के आचरण पर गंभीर रुख अपना सकती है। खासकर तब जब उन्होंने पिछली बैठक में सोनकर पर गंभीर आरोप लगाए थे। सोनकर ने मोइत्रा के आरोपों से इनकार किया है। समिति में शामिल विपक्षी दलों के सदस्यों ने मोइत्रा के रुख का समर्थन किया। दो नंवबर की बैठक में हंगामे के बाद बाहर निकले।

मिजोरम और छत्तीसगढ़ में थमा चुनावी शोर

मतदान

- मिजोरम की सभी 40 और छत्तीसगढ़ की 20 सीटों पर सात नवंबर को होगी वोटिंग

इंफाल। सात नवंबर को होने वाले मिजोरम विधानसभा चुनाव के साथ छत्तीसगढ़ की 20 सीट के लिए तकरीबन दो माह से चल रहा चुनावी शोर रविवार शाम थम गया।

चुनाव आयोग की देखरेख में शनिवार तक 10,585 वरिष्ठ नागरिकों, दिव्यांगों ने घर पर वोट डाले और सरकारी कर्मचारियों ने पोस्टल बैलेट से मतदान किया। अतिरिक्त मुख्य निर्वाचन अधिकारी एच. लियानजेला ने रविवार को कहा कि 2,059 वरिष्ठ नागरिकों (80 वर्ष और उससे अधिक) और दिव्यांग लोगों को उनके घर पर मतदान का अवसर दिया गया। जबकि सुरक्षा बलों और चुनाव अधिकारियों समेत 8,526 सरकारी कर्मचारियों ने पोस्टल बैलेट से मतदान किया। घर पर मतदान और बैलेट वोटिंग में 11 जिलों में आइजल अव्वल रहा। स्वतंत्र, निष्पक्ष और पारदर्शी मतदान के लिए अधिकांशत: ईसाई आबादी वाले मिजोरम में शनिवार को लोगों ने चुनाव प्रचार में हिस्सा लिया और रविवार को आधिकारिक रूप से चुनाव प्रचार समाप्त हो गया।

दिल्ली में सांस लेना मुश्किल सरकार ने बुलाई अहम बैठक

प्रदूषण

- वर्क फ्रॉम होम और सम-विषम की होगी वापसी
- दिवाली तक हालत होंगे और खराब

नई दिल्ली। दिल्ली में खतरनाक होते प्रदूषण स्तर को देखते हुए सोमवार से सरकारी व निजी कार्यालय में घर से काम करने की सुविधा दी जा सकती है।

दिल्ली-एनसीआर के अधिकतर इलाकों में पिछले कुछ दिनों से प्रदूषण का स्तर गंभीर श्रेणी में बना हुआ है। इसे देखते हुए रविवार को ग्रैप के चरण-चार को लागू कर दिया गया है। इसके तहत कार्य योजना रविवार से पूरे एनसीआर में तत्काल प्रभाव से लागू हो गई है। इसे लेकर सोमवार को दिल्ली सरकार ने सुबह उच्च स्तरीय बैठक बुलाई है। इस बैठक में आधे कर्मचारियों को घर से काम करने की अनुमति दी जा सकती है। अधिकारियों ने बताया कि सोमवार को होने वाली बैठक में दिल्ली सरकार, नई दिल्ली नगरपालिका परिषद, दिल्ली नगर निगम, दिल्ली छावनी व निजी कार्यालयों में कर्मचारियों की क्षमता को 50 फीसदी करने का निर्णय लिया जा सकता है। अन्य 50 फीसदी कर्मचारियों को घर से काम करने की अनुमति दी जा सकती है। इसके अलावा केंद्र सरकार को भी अपने कार्यालय में कर्मचारियों की संख्या आधा करने की सलाह दे सकती है। इसके अलावा कॉलेज, शैक्षणिक संस्थान को बंद करने, गैर-आपातकालीन वाणिज्यिक गतिविधियों को बंद करने की सलाह भी दे सकती है। सड़कों पर वाहनों की संख्या को कम करने के लिए एक बार फिर से ऑड-ईवन नियम लागू किया जा सकता है।

सीएम योगी एक्स पर देश के दूसरे सबसे चर्चित नेता

नई दिल्ली। सोशल मीडिया प्लेटफार्म एक्स पर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ देश के दूसरे सबसे चर्चित राजनेता बन गए हैं। सोशल मीडिया हैशटैग ट्रैकिंग टूल ट्वीट बाइंडर की ताजा रैंकिंग में सामने आया है कि अक्तूबर में एक्स पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के बाद योगी के हैंडल को लेकर सबसे अधिक चर्चा हुई। ट्वीट बाइंडर ने भारत में एक्स यूजर्स की ओर से 1 अक्तूबर से 31 अक्तूबर तक पोस्ट की संख्या के आधार पर रैंकिंग तैयार की है। संपूर्ण रैंकिंग में पीएम मोदी, भारतीय क्रिकेटर विराट कोहली और साउथ के एक्टर विजय ही सीएम योगी से आगे हैं। भारतीय क्रिकेट टीम के कप्तान रोहित शर्मा, बालीवुड एक्टर सलमान खान, राहुल गांधी, शाहरुख खान और अक्षय कुमार भी सीएम योगी से बहुत पीछे हैं। वैश्विक पटल पर सीएम योगी के प्रशंसकों संख्या लगातार बढ़ती जा रही है। पाकिस्तान से लेकर ऑस्ट्रेलिया, इजरायल, अमेरिका और इंग्लैंड तक योगी के प्रशंसकों की बड़ी संख्या है।

22 अवैध एप और वेबसाइट पर लगा प्रतिबंध

नई दिल्ली। अवैध सट्टेबाजी मामले में केंद्र सरकार ने बड़ी कार्रवाई की है। इलेक्ट्रॉनिक्स और आईटी मंत्रालय ने देश में अवैध सट्टेबाजी पर नकेल कसते हुए 22 अवैध एप और वेबसाइट पर प्रतिबंध का फरमान जारी किया है। अश्विनी वैष्णव के मंत्रालय से जारी प्रतिबंध आदेश के मुताबिक अवैध सट्टेबाजी के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले मोबाइल एप्लिकेशन (एप) और वेबसाइट को ब्लॉक किया जाएगा। इलेक्ट्रॉनिक्स और आईटी मंत्रालय की तरफ से जारी बयान के मुताबिक महादेव बुक और रेड्डीअन्नाप्रिस्टोप्रो सहित 22 अवैध सट्टेबाजी एप और वेबसाइट्स को ब्लॉक करने के आदेश जारी किए गए हैं। यह कार्रवाई अवैध सट्टेबाजी ऐप सिंडिकेट के खिलाफ ईडी द्वारा की गई जांच और उसके बाद छत्तीसगढ़ में महादेव बुक पर छापे के बाद हुई है।

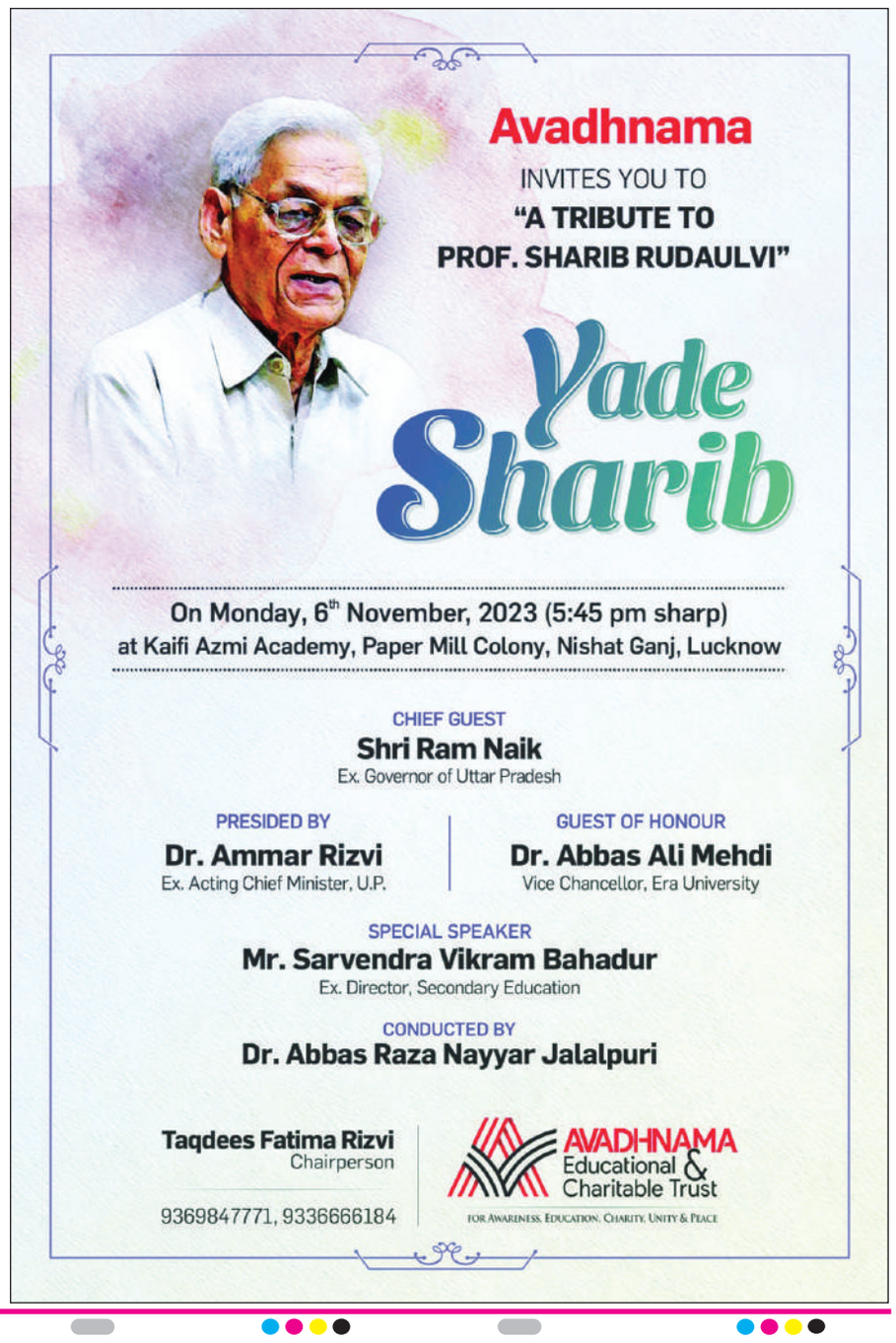

यूपी में बनेंगे 35 नये बाल आश्रय गृह

कामकाज

- 18 मंडल मुख्यालय सहित 19 जिलों में होगा निर्माण
- मुख्यमंत्री बाल आश्रय योजना के अंतर्गत 400 करोड़ रुपये प्रस्तावित

लखनऊ। घर से भागे हुए, गुमशुदा, तस्करी किये गये, कामकाजी, बाल भिखारियों, मादक द्रव्यों के सेवन करने वाले बच्चों की देखभाल के लिये प्रदेश में 35 नये आश्रय गृहों का निर्माण कराया जाएगा। महिला एवं बाल विकास विभाग की ओर से प्रदेश के 18 मंडल मुख्यालयों समेत 19 जनपदों में आश्रय गृहों का निर्माण कराया जाएगा। इसके लिए शासन स्तर पर कवायद तेज हो गई है।

विभाग की ओर से इसके लिए 400 करोड़ की धनराशि प्रस्तावित है। योगी सरकार प्रदेश के बच्चों को सर्वोच्च राष्ट्रीय संपत्ति मानकर उनके लिए संवेदनशील ईको सिस्टम को बढ़ावा देने के लिए संकल्पबद्ध है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की मंशा है कि प्रदेश के निराश्रित और अभावग्रस्त बच्चों के लिए स्वस्थ और खुशहाल बचपन सुनिश्चित कराया जाए। **सभी मंडलों में होगा सभी श्रेणियों का कम से कम एक गृह-** दरअसल, किराये और राजकीय भवनों में संचालित बाल आश्रय भवनों में से अधिकांश की स्थिति संतोषजनक नहीं है। जर्जर भवनों, तंग कमरों, भवनों में खुली हवा व क्षमता के सापेक्ष मूलभूत ढांचों का अभाव देखते हुए सरकार नये आश्रय स्थलों का निर्माण कराने जा रही है। यहां खुले हवादार कमरे, योग, व्यायाम, खेलकूद, बागवानी आदि के लिए खुले मैदान होंगे तो चाइल्ड केयर होम, ऑब्जर्वेशन होम, न्याय बोर्ड, सुप्रीटेंडेंट एवं वॉर्डन के आवास की भी सुविधा होगी। प्रस्तावित राजकीय गृहों में आगरा में 100 की क्षमता वाला एक बालिका गृह, अलीगढ़ में 100-100 की क्षमता वाला बाल गृह और किशोर संप्रेक्षण गृह, आजमगढ़ में 50 की क्षमता वाला शिशु गृह एवं 100 की क्षमता वाला बालिका गृह, अयोध्या में 375 की क्षमता वाला एकीकृत आश्रय सदन, देवीपाटन में 100-100 की क्षमता वाले बालिका गृह और किशोर संप्रेक्षण गृह, चित्रकूट में में 100-100 की क्षमता वाले बालिका गृह, किशोर संप्रेक्षण गृह और वाला शिशु गृह बनाए जाएंगे।

> महिला एवं बाल विकास विभाग की ओर से बालिकाओं के लिए 12 बाल गृह, बालकों के लिए 1 बाल गृह, शिशुओं और विशेषज्ञ दत्तकग्रहण यूनिट के लिए 6 बाल गृह, किशोरों के लिए 11 संप्रेक्षण गृह व 5 इंटीग्रेटेड होम का निर्माण प्रस्तावित है। योगी सरकार प्रदेश के सभी मंडलों में सभी श्रेणियों का कम से कम एक गृह संचालित करेगी।

CMYK

खीरी पहुंचे प्रभारी मंत्री, अफसरो की ली बैठक, जानी योजनाओं की प्रगति

अवधनामा संवाददाता

लखीमपुर खीरी। रविवार को जिले के प्रभारी मंत्री एवं प्राविधिक शिक्षा एवं उपभोक्ता मामले, उप्र के मंत्री आशीष पटेल अपने निर्धारित भ्रमण कार्यक्रम के अनुसार जनपद खीरी पहुंचे, जहां डीएम-एसपी ने पुष्प गुच्छ देकर उनका स्वागत किया।

प्रभारी मंत्री आशीष पटेल ने कलेक्ट्रेट सभागार में जनपद स्तरीय अधिकारियों के साथ केंद्र व राज्य सरकार की योजनाओं की प्रगति की गहन समीक्षा की, संबंधित को जरूरी दिशा निर्देश दिए। बैठक में भाजपा के क्षेत्रीय अध्यक्ष कमलेश तिवारी, विधायक योगेश वर्मा, विनोद शंकर अवस्थी, अपना दल के जिलाध्यक्ष राजीव वर्मा, जिपं अध्यक्ष प्रतिनिधि नरेंद्र सिंह, डीएम महेंद्र बहादुर सिंह, एसपी गणेश प्रसाद साहा, डीएफओ संजय विश्वाल, सीडीओ अनिल सिंह, एडीएम संजय सिंह, एएसपी नेपाल सिंह सहित सभी जिला स्तरीय अधिकारी मौजूद रहे।

बैठक की अध्यक्षता करते हुए प्रभारी मंत्री ने कहा कि सभी अफसर सरकार की नीतियों, कार्यक्रमों एवं योजनाओं सहित अच्छे कामों को जन-जन तक पहुंचाने के लिए

संकल्पित होकर काम करें। जीरो टॉलरेंस की नीति के साथ केंद्र व प्रदेश सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओ को जरूरतमंदों तक पहुंचाएं। जल जीवन मिशन के समीक्षा करते हुए प्रभारी मंत्री ने निर्देश दिए कि प्रत्येक विधानसभा क्षेत्र के जनप्रतिनिधियों से पांच-पांच परियोजना की सूची लेकर पीडब्ल्यूडी से गुणवत्ता की अनिवार्य रूप से जांच कराए। निराश्रित गोवंश की समीक्षा के दौरान सीडीओ अनिल कुमार सिंह ने बताया कि वर्तमान में 108 गौ आश्रय स्ल संचालित है। 14 पाइपलाइन में है जो निकट भविष्य में संचालित होगी। आश्रय स्थल बनवाने में विधायकों का महती सहयोग रहा है।

प्रभारी मंत्री के पूछने पर सीएमओ डॉ संतोष गुप्ता ने बताया कि जिले में 138 डेंगू, 279 मलेरिया एवं 38 जेई/एईएस के कन्फर्म केस है। मलेरिया की टीम सहित ग्रामीण क्षेत्रों में डीपीआरओ, शहरी क्षेत्र में ईओ में एंटीलार्वा का छिड़काव कराया जा रहा। स्थिति नियंत्रण में है। आयुष्मान कार्ड की गहन समीक्षा करते हुए अब तक आयुष्मान कार्ड बनाए जाने की प्रगति जानी। आज उचित दर दुकानों पर प्रशासन के प्रयासों के चलते 09 हजार से अधिक आयुष्मान कार्ड बनाए गए। निर्देश दिए कि जनवरी तक 5.40 पात्र गृहस्थियों वाले लाभार्थियों का आयुष्मान कार्ड बनाकर इस लक्ष्य को पूरा करें। मंत्री ने कहा कि अमृत वाटिका के पौधों का रखरखाव के विशेष प्रबंध किया जाए। वहीं पूर्व में डीएम के मार्गदर्शन में सीडीओ एवं डीपीआरओ के नेतृत्व में तैयार की योजना विषयक पत्रिका पर प्रशंसा जाहिर की।

डीएम ने प्रभारी मंत्री के समक्ष निर्माणाधीन मेडिकल कॉलेज के ब्लॉक डी के ध्वस्तीकरण, सीटी स्कैन सेल के शिफ्टिंग में आ रही समस्याओं से अवगत कराया। प्रभारी मंत्री के समक्ष जनप्रतिनिधियों ने बाढ़ खंड द्वारा क्रियान्वित परियोजनाओं पर प्रशंसा की।

सीएचसी फरधान पहुंचे प्रभारी मंत्री, आयुष्मान मेले का लिया जायजा

अवधनामा संवाददाता

लखीमपुर खीरी। आयुष्मान भवः अभियान के तहत रविवार को जिले की सभी सीएचसी पर आयुष्मान मेला कार्यक्रम आयोजित किये गए। जिसमे बड़ी संख्या ने आमजन ने स्वास्थ्य परीक्षण का लाभ लिया। गोला से वापसी के समय प्रभारी मंत्री आशीष पटेल ने सीडीओ अनिल कुमार सिंह के साथ सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र फरधान में आयोजित आयुष्मान मेला का निरीक्षण किया। उन्होंने मेले में लगे विभिन्न स्टालों का निरीक्षण किया। इस दौरान सीएमओ डॉ संतोष गुप्ता, अधीक्षक सीएचसी ने मेले के संबंध में जरूरी जानकारी दी।

प्रभारी मंत्री ने कहा कि पीएम मोदी की आयुष्मान योजना की वजह से ही देश में गरीबी के अंतिम पायदान तक निशुल्क उपचार पहुंचा है। जिसमें हर तबके का व्यक्ति पांच लाख रुपये तक का निशुल्क इलाज का लाभ उठा सकता है। इस दौरान स्वास्थ्य परीक्षण कराकर निशुल्क दवा एवं खून की जांच कराई गई। मेले में टीकाकरण एवं फिजिशियन, मानसिक रोग विशेषज्ञ, बाल रोग विशेषज्ञ, स्त्री रोग विशेषज्ञ, नाक कान गला रोग विशेषज्ञ आदि विभिन्न चिकित्सकों द्वारा मरीजों का उपचार किया। आयुष्मान मेले में मौजूद जिला अस्पताल, मेडिकल कॉलेज के विशेषज्ञ चिकित्सकों की टीम यथा स्त्री रोग विशेषज्ञ डॉक्टर प्रतिभा दंत रोग विशेषज्ञ डॉक्टर रोशनी फिजिशियन डॉक्टर पी के शुक्ला, ईएनटी डॉ मनोज शर्मा, डॉ शिखर बाजपेई से मेले में उनके द्वारा उपलब्ध कराई गई सेवाओं की जानकारी ली। प्रभारी मंत्री के पूछने पर एमओआईसी ने बताया कि आज इस मेले में 315 व्यक्तियों के आयुष्मान कार्ड बनाए गए।

कचेहरी परिसर के लाकअप से फरार बन्दी हरदोई से गिरफ्तार

लखीमपुर खीरी। थाना कोतवाली सदर पुलिस व क्राइम ब्रान्च संयुक्त टीम द्वारा दिनाँक 02.11.2023 को कचेहरी परिसर के लाकअप से फरार बन्दी व मु0अ0स0 1077/2023 धारा 223/224 भादवि के वांछित अभियुक्त करन उर्फ बब्लू पुत्र मलखान कलाबाज निवासी आस्थाई डेरा मूल निवासी कस्बा व थाना पिहानी जनपद हरदोई को ग्राम सहिजना के पास नहर पुल मानपुर रोड जनपद हरदोई से गिरफ्तार किया गया । अभियुक्त को विधिक कार्यवाही कर न्याया0 भेजा जा रहा है।

छात्र-छात्रा 10 लोगों को मत एवं मतदान के महत्व को बताकर जागरूक करें: सुभाष

लखीमपुर खीरी। मतदाता जागरूकता अभियान एंव निर्वाचक नामावलियों के संक्षिप्त पुनरीक्षण-2024 नये मतदाताओं के पंजीकरण के लिए प्रभावी कार्ययोजना के अंतर्गत युवराज दत्त स्नातकोत्तर महाविद्यालय, लखीमपुर-खीरी में दिनांक 04/11/2023 को प्राचार्य प्रो.हेमंत पाल के दिशानिर्देशन में राष्ट्रीय सेवा योजना प्रभारी एवं स्वीप कोआर्डिनेटर प्रोफेसर सुभाष चन्द्रा ने छात्र-छात्राओं को वोटर हेल्प लाइन एप तथा वोटर सर्विस पोर्टल की जानकारी देकर जागरूक किया। प्रोफेसर सुभाष चन्द्रा ने युवा विद्यार्थियों को कि बताया कि मतदाता के रुप में कर्तव्यों के प्रति न केवल हम सबको जागरूक होना पड़ेगा बल्कि लोकतंत्र की मजबूती के लिए अन्य लोगों को भी जागरूक करना होगा। प्रोफेसर चन्द्रा ने उपस्थित विद्यार्थियों को संकल्प दिलाया कि प्रत्येक छात्र-छात्रा अपने आस पास के 10 अन्य लोगों को मत एवं मतदान के महत्व को बताकर जागरूक करें,साथ ही 01.01.2024 को 18 की आयु पूर्ण करने वाले युवाओं के नाम मतदाता सूची में अधिक से अधिक संख्या में सम्मिलित कराने में सहयोग करें।

संपूर्णानगर में किशोरी आत्महत्या मामले में आरोपी की दुकान पर चला बुलडोजर

लखीमपुर खीरी। संपूर्णानगर में आपत्तिजनक वीडियो वायरल कर किशोरी को आत्महत्या के लिए मजबूर करने के आरोपी जोहिद अख्तर के परिवार की दुकान पर शनिवार को पीडब्ल्यूडी ने बुलडोजर चलवा दिया। यह दुकान पीडब्ल्यूडी की जमीन पर बनी थी। उधर, घटना के तीन दिन बाद भी अन्य तीन आरोपी पुलिस के हत्थे नहीं चढ़ सके। रविवार को भी कस्बे में भारी पुलिस बल मौजूद रहा। एसपी समेत पुलिस बल ने फ्लैग मार्च किया संपूर्णानगर कस्बे में हुए बवाल के बाद आईजी तरुण गाबा ने मौके पर पहुंचकर परिजनों को आरोपी की दुकान अवैध होने पर गिराने का आश्वासन दिया था शनिवार शाम को ही नपाई भी हुई थी। रविवार सुबह ही लोक निर्माण विभाग के अफसरों ने मुख्य आरोपी जोहिद अख्तर की फर्नीचर की दुकान पर नोटिस चस्पा किया निर्देश था कि 10 बजे तक सामान हटा लें जब ऐसा नहीं हुआ तो 11.30 बजे एसडीएम कार्तिकेय सिंह, सीओ आदित्य कुमार, निघासन सीओ राजेश कुमार व थाना प्रभारी मनबोध तिवारी ने पीडब्ल्यूडी विभाग के अधिकारियों की मौजूदगी में बुलडोजर से दुकान गिरा दी गई करीब एक घंटे तक चली कार्रवाई में आरोपी युवक की दुकान ध्वस्त कर दी गई। इस दौरान भारी संख्या में पुलिस बल व कस्बा वासियों की भीड़ लगी रही उधर, पुलिस अब तक जोहिद के अन्य दो भाइयों और पिता को गिरफ्तार नहीं कर सकी पुलिस सूत्रों के मुताबिक, आरोपी के परिवार की पूरनपुर के शेरपुर में रिश्तेदारी है, वहां से पुलिस ने कुछ लोगों को हिरासत में लिया है संपूर्णानगर में आपत्तिजनक वीडियो वायरल होने से आहत किशोरी ने आत्महत्या कर ली थी। मृतका की मां ने आरोप लगाया कि जोहिद उनकी बेटी का धर्म परिवर्तन कराना चाहता था विरोध करने पर उसने वीडियो वायरल कर दिया, जिससे आहत बेटी ने जान दे दी। मामले में जोहिद समेत चार लोगों के खिलाफ किशोरी का आपत्तिजनक वीडियो वायरल करने, धर्म परिवर्तन व आत्महत्या के लिए प्रेरित करने आदि धाराओं में केस दर्ज कराया गया। पुलिस ने मुख्य आरोपी जोहिद को गिरफ्तार कर लिया, जबकि उसका भाई शोएब, शोहिल और पिता जाहिद नूर पकड़ से दूर हैं।

स्वर्णप्राशन की एक-एक बूंद अमृत समान गुणकारी है: डॉ. डी.डी. सिंह

आजमगढ़। बच्चों के बार-बार बीमार होने से चिंतित माता-पिता के लिए अच्छी खबर है। चाइल्ड केयर क्लिनिक सिधारी में देसी नुस्खों से तैयार स्वर्णप्राशन नामक औषधि की व्यवस्था की गई है। द्रव्य रूप में उपलब्ध इस औषधि की एक-एक बूंद बच्चों की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाकर उन्हें शारीरिक व मानसिक रूप से मजबूत बनाएंगी। यह औषधि हर माह पुष्य नक्षत्र में दी जा रही है। शिशु व बाल रोग विशेषज्ञ डॉ. डी.डी. सिंह ने बताया कि छः माह से लेकर सोलह वर्ष तक के बच्चों के बार-बार बीमार होने का कारण उनकी कमजोर रोग प्रतिरोधक क्षमता है। इससे बच्चों का शारीरिक और मानसिक विकास बाधित होता है। विटामिन डी व खून की कमी हो जाती है। लंबाई पर असर पड़ता है। डॉ. डी.डी. सिंह के यहां पिछले पाँच वर्षों से स्वर्णप्राशन की खुराक पिलाई जा रही है। डॉ. सिंह ने बताया कि शहद व देसी घी में स्वर्ण के नैनो पार्टिकल के साथ कुछ बल व बुद्धिवर्धक औषधि मिलाकर स्वर्णप्राशन की खुराक तैयार की गई है। यह बच्चों के लिए काफी लाभकारी है।

चार दिवसिय 108 कुंडीय राष्ट्र जागरण गायत्री महायज्ञ का समापन

आजमगढ़। गायत्री शक्तिपीठ कोल पाण्डेय के मेदान में आयोजित एक 180 कुण्डीय राष्ट्र जागरण गायत्री महायज्ञ चौथा दिन मुख्य यज्ञमानों के साथ तमाम श्रद्धालुओं देव पूजन के साथ साथ विविध पूजन भागिदारी की । एक तरफ शान्ति कुंज हरिद्धार से आये विज्ञान ब्राम्हण जहॉ वेद मंत्रों का उच्चरण कर रहे थे वहीं श्रद्धालुगण भी अपनी-अपनी बेदियो पर बैठे, विधि विधान पूजा अर्चना कर रहे थे। पूजन अर्चन के बाद शान्ति कुंज से आयी ब्रम्हावादिनी टोली नायिका संध्या तिवारी ने श्रद्धालुओं के बीच प्रबचन के दौरान कहा कि यह महा यज्ञ जड़ चेतन सभी के लिये कल्याण कारी है। यज्ञ में देवी पूजन में भाग लेने का अर्थ हो ता है। द्विव्यगुणों को धारण करना और उसे अंगीकार कर अपने साथ-साथ अन्य लोगो का भी कल्याण करना होता है। श्रीमती तिवारी ने कहा कि यज्ञ में संगतिकरण अर्थात श्रेष्ठ जन सज्जन एकत्रीत हो अपने शक्ति का सुनियोजन करते है। जो श्रद्धालु यज्ञ में दान अर्थात अपना समय अपनी संपदा अपनी पुरूषार्थ, अपनी भावना, इस समाज को अर्पित करते है।

प्री दिवाली पार्टी का आयोजन, गीत-संगीत में बांधा समां

नवविवाहित जोड़े को दिया आशीर्वाद

लखनऊ। सृजन विहार में शिल्पा और उत्तम गांधी द्वारा प्री दिवाली पार्टी का आयोजन किया गया। जिसमें नवविवाहित अमन और मिकाशा की पहली दिवाली पार्टी के स्वागत के लिए जगमगाती पार्टी हुई। सांस्कृतिक कार्यक्रमों के साथ गीत, संगीत, नृत्य की विभिन्न शैलियों के साथ लोगों ने उत्साहवर्धन किया। नए ड्रेस कोड के साथ विक्की गुप्ता, आंचल, मिंटी, नवर्ष, शंभवी, हर्ष पसरीचा सहित सभी ने जश्न मनाया।

राजा महमुदाबाद की याद में निशुल्क मेडिकल कैंप का आयोजन

द एमएसजी फाउंडेशन ने निशुल्क मैडिकल कैंप एवं हेल्थ चेकअप कराया

अवधनामा संवाददाता

लखनऊ। द एमएसजी फाउंडेशन द्वारा आमिर मोहम्मद खान राजा महमूदाबाद के चालीसवें के मौके पर आज महमूदाबाद कलि में फाउंडेशन द्वारा निशुल्क मैडिकल कैंप का आयोजन किया गया।

इस मेडिकल कैंप में मरीजों को मुफ्त दवा के साथ-साथ निशुल्क हेल्थ चेकअप भी किया गया। द एमएसजी फाउंडेशन द्वारा लगाए गए इस कैंप में लगभग 300 मरीजों को मुफ्त दवाएं दी गई और उनका हेल्थ चेकअप भी किया गया। द एमएसजी फाउंडेशन के द्वारा लगाए गए इस कैंप का राजा महमूदाबाद के बेटों ने शुक्रिया अदा किया। और कहा आप लोग जो समाज में कार्य कर रहे हैं वह बहुत ही सराहनीय हैं। और आप लोग इसी तरह सामाजिक कार्य करते रहें।

मेडिकल कैंप की डॉक्टर टीम में डॉक्टर आसिफ, डॉक्टर महक बाक़री, डॉक्टर सय्यद अबुल क़ासिम, डॉक्टर मोहम्मद शाहनवाज़ हुसैन, डॉक्टर फराह आसिफ, डॉक्टर मोहम्मद उस्मान मौजूद रहे। इस कार्यक्रम में राजा महमूदाबाद के बेटे प्रोफेसर अली खान, आमिर खान महमूदाबाद और समाज के तमाम प्रतिष्ठित लोग मौजूद रहे।

वहीं इस कार्यक्रम में द एमएसजी फाउंडेशन की तरफ से फाउंडेशन के फाउंडर मोहम्मद सादिक, अध्यक्ष मोहम्मद आलम, उपाध्यक्ष शुजा अब्बास, वली मिर्ज़ा, सय्यद तक़ी, ज़हरा नक़वी और मुंतज़िर मौजूद रहे।

सरकार की व्यापार और उद्योग प्रोत्साहन नीति से राजस्व संग्रह में हो रही है बढ़ोत्तरी

अवधनामा संवाददाता

प्रयागराज। उत्तर प्रदेश में व्यापार के लिए बने भय मुक्त वातावरण और उद्योगों में योगी सरकार की निवेश प्रोत्साहन नीति से राज्य जीएसटी का राजस्व तेजी से बढ़ रहा है। योगी सरकार की व्यापार और कारोबार की प्रोत्साहन नीति का सीधा असर राजस्व संग्रह पर पड़ा है। राज्य आय कर विभाग की तरफ से जारी की गई रैंकिंग में प्रयागराज ने लंबी छलांग लगाई है। राज्य आयकर विभाग की तरफ से एसजीएसटी की अक्टूबर माह की जारी रैंकिंग में प्रयागराज ने प्रदेश में दूसरा स्थान हासिल किया है। प्रयागराज की एडिशनल कमिश्नर ग्रेड-वन ज्योत्सना पांडेय ने बताया है कि प्रयागराज में अक्टूबर में राजस्व में 241.97 करोड़ के राजस्व की वसूली हुई, जो पिछले वर्ष जबकि अक्टूबर में हुई वसूली का में 38 प्रतिशत से अधिक रहा।

इस सूची में गौतमबुद्ध नगर ने पिछले वर्ष पांचवें की तुलना में 52.71 प्रतिशत लगाकर सबसे अधिक राजस्व कि वसूली दर्ज की है और उसका स्थान पहला है। प्रयागराज इसके पहले पांचवे स्थान पर था। इस तरह प्रयागराज ने तीन पायदान की तरक्की की है।

व्यापारी संगठन बोले सरकार की उत्पीड़न मुक्त नीति और सख्त कार्यवाही से बढ़ा राजस्व

प्रयागराज। स्थानीय व्यापारी संगठन और कारोबारी इसे योगी सरकार की टैक्स दाताओं के लिए अपनाई गई नीति और प्रदेश में व्यापार के लिए तैयार हो रहे नया वातावरण का परिणाम मान रहे हैं। स्टेट जीएसटी की कर वसूली में हुई रिकॉर्ड बढ़ोत्तरी के लिए सरकार की तरफ से अपनाई गई समन्वय सहयोग की नीति को मुख्य वजह बताया जा रहा है। कर वसूली के लिए विभाग की तरफ से निरंतर अभियान चलाए गए हैं। खासकर ऐसे लोग जिन्होंने कागजात में हेर फेर करके कर की चोरी की है उनके साथ सख्त रवैया अपनाया गया है।

मंत्री दानिश आजाद अंसारी ने किया बबल्स के पहले टॉय स्टोर का शुभारम्भ

लखनऊ। इंदिरा नगर के मशहूर शालीमार चौराहे पर बच्चों को प्रभावित करने वाले विशेष खिलौने और स्टेशनरी के नए स्टोर बबल्स का आज शुभारंभ हो गया।आज अल्पसंख्यक कल्याण, मुस्लिम वक्फ एवं हज राज्य मंत्री दानिश आजाद अंसारी ने इसका उदघाटन किया। इस अवसर पर मंत्री जी ने कहा कि बबल्स स्टोर में बच्चों के लिए तमाम तरीके के खिलौने उपलब्ध है ये पहल सराहनीय है।इस बात का अंदाज़ा बच्चो की खुशी देख कर लगाया जा सकता है।मंत्री जी ने स्टोर के ओनर जुहैब उस्मानी को मुबारकबाद देते हुए कहा कि बब्ल्स की फ्रेंचाइजी प्रदेश के अलग-अलग ज़िलो मे खोलिए जिससे युवाओ को रोजगार के अवसर के साथ साथ उन्हे नई दिशा मिल सके।उन्होंने कहा कि बच्चे हमारे देश का भविष्य है।शोरूम के ओनर जुहैब उस्मानी ने बताया कि हमारे बबल्स स्टोर में बच्चों के लिए विभिन्न तरह के खिलौने स्टेशनरी एवम् नव जात बच्चो के समानो की तमाम वैरायटी उप्लब्ध हैं।जिसमें मुख्य रूप से बैग्स,टिफ़िन बॉटल,सॉफ्ट टु वायज, शिक्षा के खिलौने,कार, बाइक, बार्बी डॉल्स, हॉट व्हील कार उप्लब्ध है।श्री उस्मानी ने बताया कि बच्चे सभी की पसंद होते हैं।पेरेंट्स हो या ग्रैंड पैरेंट्स सभी लोग अपने बच्चों को खुश रखने के लिए सब कुछ करना चाहते हैं और उसकी खुशी के लिए एक खिलौने से ज्यादा बेहतर क्या होगा जब बच्चा 1 साल का होता है तो उसे एजुकेशनल टॉयज से परिचय कराना बहुत जरूरी होता है यह खिलौने उसे अक्षर,नंबर, शेप्स और रंगों के बारे में सिखाते हैं।

आयकर अधिकारियों व कर्मचारियों ने निकाली वाकाथन रैली

अवधनामा संवाददाता

प्रयागराज। सतर्कता जागरूकता सप्ताह के तहत मुख्य आयकर आयुक्त इलाहाबाद डा0 शिखा दरबारी के नेतृत्व में आयकर विभाग के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने वाकाथन रैली निकाली। केन्द्रीय सतर्कता आयोग के निर्देशन में आयकर विभाग इलाहाबाद द्वारा दिनांक 30 अक्टूबर से 05 नवम्बर तक सतर्कता जागरूकता सप्ताह का आयोजन किया गया। सप्ताह के अन्त में आज आयकर विभाग द्वारा वाकाथन रैली का आयोजन किया गया। सतर्कता सप्ताह के दौरान आयकर विभाग में निबन्ध प्रतियोगिता तथा भाषण प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया था। कार्यक्रम के प्रारम्भ में मुख्य आयकर आयुक्त डा0शिखा दरबारी द्वारा सतर्कता सप्ताह के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेता प्रतिभागियों को प्रशस्ति पत्र तथा पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया तदुपरान्त वाकाथन रैली को हरी झण्डी दिखाकर रवाना किया गया। वाकाथन रैली का नेतृत्व भी स्वयं मुख्य आयकर आयुक्त द्वारा किया गया। वाकाथन रैली आयकर भवन से प्रारम्भ होकर कम्पनी बाग तथा वहां से वापस आकर आयकर भवन में समाप्त हुई । वाकाथन के दौरान आयकर विभाग के अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा

राह में मिलने वाले आम जनमानस को भ्रष्टाचार के विरूद्ध सतर्क एवं जागरूक रहने सम्बन्धित पर्चियों का वितरण भी किया गया।

छात्र नेता अजय सम्राट के समर्थन में आये पूर्व छात्रसंघ अध्यक्ष

अवधनामा संवाददाता

प्रयागराज। इलाहाबाद विश्वविद्यालय के छात्र नेता अजय यादव सम्राट 105 दोनों के बाद नैनी जेल से रिहा होने पर इलाहाबाद विश्वविद्यालय छात्रसंघ भवन पर जाकर स्वतंत्रता सेनानी शहीद लाल पदमधर को माल्यार्पण किया और इलाहाबाद विश्वविद्यालय प्रशासन ने छात्र नेता अजय सम्राट के खिलाफ फर्जी एफआईआर दर्ज कर दी। जिसको लेकर विश्वविद्यालय के प्रत्येक छात्र छात्राओं एवं पूर्व पदाधिकारी में व्यापक आक्रोश है। इलाहाबाद यूनिवर्सिटी यूनियन के पूर्व अध्यक्ष विनोद चंद दुबे और के .के. राय ने कहा इलाहाबाद विश्वविद्यालय छात्र संघ भवन पर स्वतंत्रता सेनानी शहीद लाल पदमधर जिन्होंने देश को आजाद करने में अपनी प्राणों की आहुति दे दी। ऐसे महान पुरुष को देश का हर एक आम नागरिक माल्यार्पण करके पुष्पांजलि अर्पित की लालसा होती है। ऐसे में छात्र नेता अजय सम्राट को इलाहाबाद विश्वविद्यालय छात्रसंघ भवन पर शहीद लाल पदमधर को माल्यार्पण करने के विरोध में फर्जी तरीके से एफआईआर दर्ज करना यह है देश के शहीदों का अपमान है। इस तानाशाही रवैया और शहीदों की अपमान को विश्वविद्यालय के प्रत्येक छात्र व पूर्व पदाधिकारी बर्दाश्त नहीं करेंगे। इलाहाबाद यूनिवर्सिटी यूनियन के पूर्व अध्यक्ष सतीश अग्रवाल व कृष्णमूर्ति यादव ने कहा इलाहाबाद विश्वविद्यालय में जिस तरीके से छात्रों को अपराधी बनाने का काम इलाहाबाद विश्वविद्यालय प्रशासन कर रहा है। छात्रों के ऊपर फर्जी मुकदमे लिखवाकर जेल भेजना व बर्बरता पूर्वक लाठी से पीटना इलाहाबाद विश्वविद्यालय के छात्र व छात्रसंघ के पूर्व पदाधिकारी हरगिज बर्दाश्त नहीं करेंगे।

इस दिवाली अपनी सेहत को दुरुस्त बनाएं: ऋतिका समद्दर, रीजनल हेड- डायटेटिक्स

ऋतिका समद्दर, रीजनल हेड-डायटेटिक्स, मैक्स हेल्थकेयर, दिल्ली

दिवाली का खुशियों से भरा त्यौहार आने के साथ ही माहौल में रोमांच घुल गया है ऋतिका समद्दर, रीजनल हेड-डायटेटिक्स, मैक्स हेल्थकेयर, दिल्ली ने बताया आइये, आपके और आपके प्रियजनों के लिये रोशन और सेहतमंद दिवाली सुनिश्चित करने की कुछ महत्वपूर्ण रणनीतियों के बारे में जानते हैं।सोच-समझकर तोहफा दें, सोच-समझकर खाएं, शारीरिक गतिविधि को प्राथमिकता दें, सेहतमंद विकल्प चुनें , हाइड्रेटेड रहें दिवाली तोहफे देने और लेने का वक्त होता है। त्यौहार के उत्साह में अपने प्रियजनों को सेहत के लिये अच्छे तोहफे दें। उन्हें न्यूट्रियेंट्स से भरपूर बादाम तोहफे में देने की सोचें, जो न सिर्फ आपका प्यार दिखाएंगे, बल्कि त्यौहार के मौसम में उनकी सेहत को भी अच्छा बनाएंगे। बादाम तोहफे का एक परफेक्ट और हेल्दी विकल्प है, खासकर दिवाली जैसे त्यौहारी सीजनों के लिये। इनमें जरूरी पोषक-तत्व भरपूर मात्रा में होते हैं, वे न सिर्फ खुश कर देते हैं, बल्कि दिल की सेहत से लेकर डायबिटीज तक स्वास्थ्य को कई फायदे भी देते हैं। पोषक-तत्वों से प्रचुर यह नट्स प्रोटीन, फाइबर, सेहतमंद वसा, विटामिन्स और मिनरल्स का पावरहाउस हैं और इसलिये किसी भी डाइट में बेहतरीन तरीके से मिल जाते हैं। इसके अलावा, उनके विविधतापूर्ण उपयोग उन्हें तोहफे का रचनात्मक विकल्प बनाते हैं, बादाम के खूबसूरती से पैकेज किये हुए संग्रह से लेकर घर में बादाम से बने व्यंजनों तक।

विश्व हिंदू परिषद व बजरंग दल के तत्वावधान में रक्तदान शिविर का आयोजन

अवधनामा संवाददाता

आज़मगढ़। हुतात्मा दिवस के अवसर पर दधीचि रक्तदान शिविर का आयोजन प्रातः 9 बजे से सदर अस्पताल स्थित ब्लड बैंक पर किया गया। जिसका शुभारंभ अपर जिलाधिकारी प्रशासन,मुख्य चिकित्साधिकारी एवं अपर पुलिस अधीक्षक नगर द्वारा संयुक्त रूप से किया गया। इस अवसर पर कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए नगर कार्याध्यक्ष विश्व हिंदू परिषद रवि प्रताप सिंह ने कहा कि विश्व हिंदू परिषद का यह संकल्प है कि हम किसी भी हिंदू को रक्त के अभाव में मरने नहीं देंगे। कारसेवा में शहीद हुए कारसेवकों की याद में इस वर्ष भी रक्तदान शिविर की आयोजन किया गया है। बजरंग दल के जिला सहसंयोजक रुपेश विश्वकर्मा ने कहा की बजरंगी हिंदू समाज की रक्षा के निमित्त रक्त की उपलब्धता सुनिश्चित करने के उद्देश्य से रक्तदान कर समाज की सेवा करने के लिए सदैव कटिबद्ध है। कार्यकर्ताओं के उत्साहवर्धन हेतु अपर जिलाधिकारी वित्त एवं राजस्व आजाद भगत सिंह, प्रभारी निरीक्षक कोतवाली शशिमौलि पांडे तथा समाज के अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे। जिनके द्वारा रक्तदाता कार्यकर्ताओं का उत्साह वर्धन किया गया। समाचार लिखे जाने तक कल 61 यूनिट रक्तदान किया जा चुका था और अभी रक्तदान का कार्यक्रम जारी था। इस अवसर पर विश्व हिंदू परिषद के जिला सह मंत्री विमल मौर्य, जिला सह सामाजिक समरसता प्रमुख विनोद सोनकर, जिला सह मंत्री मनोज शाही, नगर संयोजक बजरंग दल देवेंद्र, नगर सहसंयोजक दिनेश चौहान, अभिषेक सिंह उधम सुबोध सिंह, जितेन्द्र राय, धर्मेन्द्र सिंह, पुरंदर यादव, अश्विनी दूबे, विवेकानंद पटेल, संदीप, किशन सहीत आदी लोग शामील रहे।

द प्री-स्कूल कार्निवल राइजिंग स्टार्स युवा प्रतिभा को उजागर करता है

लखनऊ। मॉडर्न स्कूल, अलीगंज ने 5 नवंबर, 2023 को आकर्षक ÷प्री-स्कूल कार्निवल राइजिंग स्टार्स की मेजबानी की, जो 2 से 6 वर्ष की आयु की युवा प्रतिभाओं द्वारा शानदार उत्सव मनाया गया।

कार्यक्रम की शुरुआत मॉडर्न स्कूल के छात्रों के शानदार प्रदर्शन के साथ हुई, जिसमें स्कूल के मार्गदर्शक दर्शन को प्रतिबिंबित करने वाला एक सुंदर कोरियोग्राफ नृत्य किया गया था। यह दिन विविध प्रकार की प्रतियोगिताओं से भरा हुआ था, जिनमें फैंसी ड्रेस, मिनी-योगिस, पहेलियां, कला प्रदर्शनियां और कहानी सुनाना शामिल थीं, ये सभी प्रतियोगिताएं युवा प्रतिभागियों के लिए अपनी असीमित क्षमताओं को प्रदर्शित करने के लिए एक कैनवास के रूप में काम कर रही थीं। लखनऊ के 30 प्री-स्कूलों की भागीदारी और प्रभावशाली 400 पंजीकरणों के साथ, यह आयोजन शैक्षिक उत्कृष्टता के लिए एक जीवंत केंद्र बन गया। युवा प्रतिभा के उद्भव को देखने के लिए लखनऊ के विभिन्न स्कूलों के शिक्षक और पेशेवर उल्लेखनीय संख्या में एक साथ आए। इस आयोजन ने परिवारों, शिक्षकों और समुदाय के लिए एक रैली बिंदु के रूप में कार्य किया, जो हमारे सबसे कम उम्र के शिक्षार्थियों के समग्र विकास को सामूहिक रूप से समर्थन देने के अपने मिशन में एकजुट हुए। ऐसे आयोजनों के महत्व पर विचार करते हुए, मॉडर्न स्कूल के प्रिंसिपल ने कहा, प्रारंभिक शिक्षा हमारे छात्रों के भविष्य को आकार देती है। प्री-स्कूल कार्निवल राइजिंग स्टार्स उभरती प्रतिभाओं को उनकी क्षमता का पता लगाने, आवश्यक जीवन कौशल विकसित करने और रचनात्मकता को बढ़ावा देने का अधिकार देता है।

गांधी प्रतिमा के पास धरना प्रदर्शन कर उठाई आवाज

अवधनामा ब्यूरो

सोनभद्र। परिषदीय अनुदेशक कल्याण संगठन बैनर तले रविवार को कलेक्ट्रेट परिसर के गांधी प्रतिमा परिसर में इकदिवासी धरना प्रदर्शन करते हुए मुख्यमंत्री संबोधित अपनी नवसुत्री मांग पत्र संबंधित विभाग को सौप कर कर्मचारियों ने बुलंद की आवाज-वही संगठन अध्यक्ष व प्रदेश वरिष्ठ उपाध्यक्ष रविंद्र बहादुर सिंह ने बताया कि बेसिक शिक्षा परिषद के उच्च प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत 27555 अनुदेशकों की मौलिक समस्याओं एवं महिला अनुदेशकों की मानवीय एवं मूलभूत समस्याओं के बिंदुओं को लेकर इकदिवासी धरना प्रदर्शन कार्यक्रम किया गया हैं। वही श्री सिंह ने बताया कि निम्नलिखित बिन्दुओं के आलोक में संज्ञानित होने की कृपा करें। यह कि शिक्षा अधिकार अधिनियम से नियुक्त अनुदेशक पिछले दस वर्षों से पुर्ण कालिक कार्य करते हुए नौनिहालों का भविष्य संवार रहे हैं अधिसंख्य अनुदेशकों की उम्र सीमा 40 वर्ष पार कर चुकी है। अतः नवीन शिक्षा नीति के अनुसार हम अनुदेशकों को नियमित किया जाए। यह कि सरकार द्वारा हम अनुदेशकों के विरुद्ध अदालतों में चलाई जा रही समस्त कार्यवाही अविलंब वापस लेकर माननीय सर्वोच्च न्यायालय व माननीय उच्च न्यायालय डबल बेंच में पारित निर्णय एवं दिशानिर्देशों को तत्काल प्रभाव से निष्पादित किया जाए।

ज्यादा से ज्यादा महिला मतदाता का नाम पंजीकृत करायें: आयुक्त

अवधनामा संवाददाता

- राजनैतिक दलों के प्रतिनिधियों के साथ सम्पन्न हुई बैठक

बांदा। अपर जिला अधिकारी वित्त एवं राजस्व/उप जिला निर्वाचन अधिकारी राजेश कुमार ने बताया है कि भारत निर्वाचन आयोग के निर्देशानुसार मतदाता सूची का आलेख्य प्रकाशन 27 अक्टूबर 23 को जनपद के समस्त मतदेय स्थलों पर किया जा चुका है।

आयुक्त, रोल प्रेक्षक, चित्रकूटधाम मण्डल बांदा बालकृष्ण त्रिपाठी की अध्यक्षता में कलेक्ट्रेट सभागार में समस्त मान्यता प्राप्त राजनैतिक दलों के साथ बैठक की गयी। बैठक में श्रीमती दुर्गा शक्ति नागपाल जिला निर्वाचन अधिकारी, जिलाधिकारी बांदा, राजेश कुमार उप जिला निर्वाचन अधिकारी, अपर जिलाधिकारी (वि./रा.) एवं उपजिलाधिकारी, सदर उपस्थित रहे तथा जनपद में 07 राजनैतिक दलों द्वारा प्रतिभाग किया गया। समस्त राजनैतिक दलों के लगभग 50 प्रतिभागी मौजूद रहे। आयुक्त द्वारा पुनरीक्षण से सम्बन्धित गतिविधियों के बारे में चर्चा की गयी। चर्चा के दौरान आयुक्त ने मतदाता सूची को शुद्ध कराने हेतु बीएलए की नियुक्ति करते हुये ग्राम-ग्राम जेण्डर रेशियो सुधार करने के लिए ज्यादा से ज्यादा महिला मतदाता का नाम पंजीकृत कराने, युवा वर्ग 18-19 वर्ष के मतदाताओं का नाम मतदाता सूची में पंजीकृत करवाने हेतु समस्त राजनैतिक दलों से अनुरोध किया एवं जो मतदाता मृतक या किसी दूसरे स्थान पर शिफ्ट हो गये है या जिन मतदाताओं का नाम रिपीट है, ऐसे मतदाताओं का नाम मतदाता सूची से अपमार्जन कराने हेतु समस्त राजनैतिक दलों से अनुरोध किया। बैठक में उपस्थित राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों के सुझाव एवं उनकी समस्याओं को भी सुना गया तथा जिलाधिकारी, बांदा एवं अपर जिलाधिकारी (वि./रा.) द्वारा राजनैतिक दलों द्वारा बतायी गयी समस्याओं का निराकरण कराया गया। आयुक्त बालकृष्ण त्रिपाठी एवं जिलाधिकारी श्रीमती दुर्गा शक्ति नागपाल ने पंडित जेएनपीजी कॉलेज बांदा तथा आदर्श बजरंग इंटर कॉलेज बांदा में निरीक्षण कर मतदाता सूची परीक्षण कार्य का निरीक्षण करते हुए मौके पर उपस्थित बीएलओ एवं मतदाताओं से मतदाता पुनरीक्षण कार्य के संबंध में जानकारी करते हुए निर्देश दिए कि मतदाताओं से प्राप्त होने वाले सभी फार्मो को प्राप्त कर समय से कार्रवाई करें। इसके अतिरिक्त कार्यालय मुख्य निर्वाचन अधिकारी उप्र लखनऊ से विशेष कार्याधिकारी राजेश कुमार जायसवाल द्वारा विशेष अभियान 5 नवंबर को विधानसभा 235- बांदा के मतदेय स्थल संख्या 23 से 31 तक - पं जेएनपीजी कालेज, बांदा, मतदेय स्थल संख्या 81 90 तक आदर्श बजरंग इण्टर कालेज, बांदा, मतदेय स्थल संख्या 101-104 नगर पालिका बालिका इण्टर कालेज, बांदा, मतदेय स्थल संख्या 105-109 खानखाह इण्टर कालेज बांदा तथा मतदेय स्थल संख्या 110 से 113 राजकीय महिला डिग्री कालेज बांदा का निरीक्षण सहायक निर्वाचक रजिस्ट्रीकरण अधिकारी / तहसीलदार बांदा के साथ किया।

सेठ वीरेंद्र कुमार स्नातकोत्तर महाविद्यालय में पहुंचे मंडलायुक्त

अवधनामा संवाददाता

उरई (जालौन)। लोकतंत्र की यही खूबसूरती है कि प्रत्येक बालिग महिला पुरूष को वोट देने का अधिकार है। प्रत्येक मतदाता अपने मातधिकार का प्रयोग कर अपनी पसंद की सरकार चुन सकता है। बस जरूरी है कि आपका मत बना हुआ हो। मतदाता सूची के पुनरीक्षण का कार्य चल रहा है। इसलिए जिनके वोट नहीं बने हैं वह अपने वोट अवश्य बनवा लें। ताकि आगामी चुनावों में आप अपने मताधिकार का प्रयोग कर सकें।

यह बात सेठ वीरेंद्र कुमार स्नातकोत्तर महाविद्यालय में आयोजित जगरूकता कार्यक्रम में मंडलायुक्त डॉ. आदर्श सिंह ने कही। सेठ वीरेंद्र कुमार स्नातकोत्तर महाविद्यालय में मंडलायुक्त डॉ. आदर्श सिंह के मुख्य आतिथ्य में मतदाता सूचियों के पुनरीक्षण में 18 वर्ष और उससे अधिक आयु के लोगों को जागरूक करने के लिए जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें मंडलायुक्त ने कहा कि भारतीय लोकतंत्र में सभी समान रूप से अपने मताधिकार का प्रयोग कर अपनी पसंद की सरकार चुनने के लिए स्वतंत्र हैं। इसमें किसी भी प्रकार का कोई भेदभाव नहीं हैं अमीर, गरीब, महिला, पुरूष जो भी मतदाता हैं वह स्वतंत्र रूप से अपने वोट का प्रयोग कर सकते हैं। यदि आप मतदाता नहीं हैं तो ही आप को मतदान से वंचित किया जा सकता है।

अखण्ड भारत कवि सम्मेलन और सम्मान समारोह सम्पन्न

अवधनामा संवाददाता

लखनऊ। शिवभार गुर्जर लखनवी साहित्यिक एवं सामाजिक संस्था, 592के/853 के आचार्य पिंगल सभागार में लौह पुरुष सरदार बल्लभ भाई पटेल जयन्ती, आयरन लेडी श्रीमती इन्दिरा गांधी /वीरांगना ऊदा देवी पासी के शहीदी दिवस के उपलक्ष्य में कवि सम्मेलन एवं साहित्यकार सम्मान समारोह का विशाल आयोजन किया गया। जिसकी अध्यक्षता डाक्टर कुसुम चौधरी जी, मुख्य अतिथि वरिष्ठ कवि यदुनाथ सुमन, विशिष्ट अतिथि-ओम प्रकाश नदीम, अति विशिष्ट अतिथि, वरिष्ठ कवि राम राज भारती, अतिथि कवि विमल बैरागी तथा चुस्त दुरुस्त सँचालन, वरिष्ठ कवयित्री वर्षा श्रीवास्तव ने किया। वाणी वन्दना कवयित्री डाक्टर नेहा कुमारी ने किया। वाणी वन्दना के उपरांत शुरुवात वरिष्ठ साहित्यकार प्रेम मिश्र तूफानी ने तुफानी कविताएं सुना का सबका मन मोह लिया। उसके बाद रेखा श्रीवास्तव, राजकुमारी गुर्जर, दीप्ति भूषण, शैलेश कुमार शैलेन्द्र, सौरभ कान्त बाजपेयी, आशुतोष श्रीवास्तव, डाक्टर नेहा कुमारी, प्रेम शकर शास्त्री बेताब, वेदान्त मिश्र, राम राज भारती, माहताब अली, राम शंकर वर्मा, इन्द्र मोहन पाल, शगुन सिंह, ओमप्रकाश नदीम, बाल साहित्यकार अद्यांशी विकास मीनू, सँस्थापक अध्यक्ष एल पी गुर्जर लखनवी , यदुनाथ सुमन, अध्यक्षा -डाक्टर कुसुम चौधरी आदि ने अपनी बेहतरीन रचनाएँ सुनाकर सभी का मन मोह लिया । तालियों से आचार्य पिंगल सभागार गूँजता रहा। समापन पर संस्थापक/अध्यक्ष गुर्जर लखनवी ने समस्त साहित्यकारों का फूल माला अर्पण कर प्रशस्ति पत्र व अंगवस्त्र प्रदान कर सम्मानित किया। तदोपरान्त सस्थापक एल पी लखनवी ने सभी का हृदय तल से आभार प्रकट करते हुए सभी साहित्यकारों से आने का विनम्र अनुरोध किया। कार्यक्रम बेहद शानदार सफल रहा। समारोह अगले कार्यक्रम तक के लिये अस्थगित कर दिया गया।

सत्ता सरकार के इशारे पर चल रही ईडी व सीबीआई: आप

सोनभद्र/चोपन अवधनामा संवाददाता। रविवार को आम आदमी पार्टी सोनभद्र की मासिक बैठक नगर पंचायत चोपन में जेड जीनियस स्कूल में की गई ,बैठक की अध्यक्षता पार्टी जिला अध्यक्ष रमेश गौतम ने किया और संयुक्त संचालन वरिष्ठ जिला उपाध्यक्ष संतोष त्यागी व जिला महासचिव विमलेश पटेल* ने किया द्य बैठक में निर्णय लिया गया कि श्रेष्ठ द्वारा मोदी जी के इशारे पर देश कि बढ़ती हुई मजबूत व ईमानदार आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय नेताओं को एक एक करके बिना किसी सबूत के आधार पर जबरन झूठे घोटालों के आरोप लगाकर फसाया जा रहा है जिसके लिए सम्पूर्ण देश में आप कार्यकताओं द्वारा कड़ा विरोध प्रदर्शन किया जा रहा है और सरकार कि आंखे खोलने का काम किया जा रहा है परन्तु सरकार आँखे मुंद कर बैठी हुई है इसलिए *उत्तर प्रदेश प्रभारी व राज्यसभा सांसद माननीय संजय सिंह जी कि रिहाई एवं पार्टी के राष्ट्रीय नेताओं पर हो रहे अत्याचार को रोकने के लिए व उनकी रिहाई के लिए जनता को जागरूक करने का काम करेगी।

श्रीराम का राज्याभिषेक से गदगद हुए नगरवासी

भारी सुरक्षा के बीच ऐतिहासिक भरत मिलाप सम्पन्न

अवधनामा संवाददाता

गोरखपुर। सदर सांसद रवि किशन शुक्ल नें कहा श्रीराम हमारे आदर्श है ।आज रामलीला के माध्यम से माता, पिता गुरु का आदर भाइयों का प्रेम, त्याग व बलिदान और देश के प्रति राजा का कर्त्तव्य का बोध कराया जा रहा है। हमें मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री राम के आदर्शो को अपनाने की प्रेरणा मिलती है।

यह बातें उन्होंने रविवार सुबह पिपराइच मुख्य बाजार में भरत मिलाप समारोह में बतौर मुख्य अतिथि कहे। क्षेत्रीय विधायक महेंद्र पाल सिंह नें कहा आज हमें जाति धर्म पर बांटने के लिए गठबंधन का सहारा लेना पड़ रहा है। लेकिन एकता व सामंजस्य के बल पर बानरों की सेना नें समुद्र पर पुल बनाकर लंका पर चढ़ाई रावण जैसे प्रतापी राजा को पराजित किया । तथा योगी व मोदी सरकार के विकास कार्यो को इसी संदर्भ से जोड़ा। इसके पूर्व शनिवार रात भारी सुरक्षा व्यवस्था के बीच रामलीला के मंचन में मर्यादा पुरूषोत्तम श्री राम भगवान मां सीता व भाई लखन लाल के साथ नगर में विशाल शोभायात्रा निकाली गयी । इस खुशी नगर वासियों सहित ग्रामीण क्षेत्र के दर्जन भर अखाड़ा कलाकारों ने अपने अपने कला का प्रदर्शन किया । अनेक मनमोहक झांकियां निकाली गई। रविवार सुबह मुख्य बाजार में श्रीराम व भरत मिलन देख जय श्री राम के जयघोष से सभी राममय हो गये। इस अवसर पर पूर्व प्रमुख आनन्द शाही, दर्जा प्राप्त राज्यमंत्री राधेश्याम सिंह, चेयरमैन संजय मद्धेशिया, रामलीला कमेटी अध्यक्ष डॉ उमाशंकर शर्मा,जीतेन्द्र जायसवाल आदि ने राम दरबार की आरती उतारी तथा श्री राम जी के राज्याभिषेक हुआ है। तो खुशी में अयोध्या नगरी में धूम मच गयी।

मुख्यमंत्री के संभावित दौरे को लेकर राज्यमंत्री ने मूर्ति स्थल का किया निरीक्षण

जौनपुर अवधनामा संवाददाता। राजपूत सेवा समिति द्वारा कलीचाबाद तिराहे पर स्थापित होने वाले महाराणा प्रताप की भव्य मूर्ति का मुख्यमंत्री द्वारा अनावरण के संभावित कार्यक्रम के तहत रविवार को राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) खेल एवं युवा कल्याण गिरीश चंद्र यादव प्रशासनिक अमले के साथ मूर्ति निर्माण कार्य स्थल पर पहुंचकर निरीक्षण किया। मौके पर उपस्थित राजपूत सेवा समिति के सदस्य ओम प्रकाश सिंह से मूर्ति की भव्यता और पार्क के सुंदरीकरण पर चर्चा किया। उन्होंने कहा कि मूर्ति निर्माण में जो सहायता की जरूरत पड़ेगी उसके लिए मुझसे जो भी मदद की जरूरत होगी मै तैयार हूं। उन्होंने मौके पर ही मौजूद सीटी मजिस्ट्रेट जल राजन चौधरी, नगर पालिका के अधिशासी अभियंता पवन कुमार व चेयरमैन प्रतिनिधि डा.रामसूरत मौर्य से पार्क के सुंदरीकारण हेतु इंटर लाकिंग व लाइट की ब्यवस्था का निर्देश दिया। उन्होंने निर्माण कार्य के एक- एक गतिविधि का गहनता से निरीक्षण किया। मौके पर कार्यरत मजदूरों से भी जानकारी ली।बातचीत के दौरान कहा कि बीर शिरोमणि महाराणा प्रताप की यह भव्य मूर्ति पूर्वांचल की शान व जनपद की पहचान होगी। समिति के सदस्यों के ऐतिहासिक कार्य की सराहना किया। आश्वासन दिया कि पार्क के सुंदरीकरण में कही से भी कोई कमी नहीं रहेगा। ओम प्रकाश सिंह ने बताया कि चेतक घोड़े पर सवार महाराणा प्रताप की भव्य मूर्ति 13 फीट ऊंची होगी जो करीब 9 फीट ऊंचे चबूतरे पर स्थापित की जाएगी। दीपावली बाद उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के हाथों मूर्ति का अनावरण का समय मांगा गया है। जौनपुर शहर के पश्चिमी प्रवेश द्वार पर लगने वाली इस मूर्ति से न सिर्फ जौनपुर अपितु पूरे पूर्वांचल का गौरव बढ़ेगा। मौके पर राजपूत सेवा समिति के सदस्य दिनेश सिंह बब्बू, रत्नाकर सिंह, रविन्द्र प्रताप सिंह, अजीत सिंह, शशि प्रताप सिंह, सिद्धार्थ सिंह सहित भारी संख्या में सदस्य मौजूद थे।

किसानों का उत्पीड़न एवं अनदेखी बर्दाश्त नहीं की जाएगी: तौकीर फरहत

अवधनामा ब्यूरो

लखनऊ। भारतीय किसान यूनियन (टिकैत) की मासिक बैठक गन्ना संस्थान में संपन्न हुई। उक्त बैठक में जनपद स्तरीय किसानों की गंभीर समस्याओं पर चर्चा हुई तथा किसानों की गंभीर समस्याओं के निवारण हेतु कई महत्वपूर्ण योजनावध निर्णय भी लिए गए।

महानगर अध्यक्ष तौकीर फरहत एवं जिला अध्यक्ष किशोरी लाल पटेल ने किसानों की गंभीर समस्याओं को लेकर शासन एवं प्रशासन के खिलाफ कड़ा रुख अपनाते हुए कहा कि अगर जनपद/तहसील/ब्लॉक स्तर पर अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा किसानों के उत्पीड़न पर सरकार द्वारा लगाम नहीं लगाई गई, तो इसके नतीजे अच्छे नहीं होंगे फिर भारतीय किसान यूनियन जनपद की प्रत्येक तहसील /ब्लॉक पर धरना एवं प्रदर्शन करने को मजबूर होगी, जरूरत पड़ने पर भारतीय किसान यूनियन जिला कलेक्टर को भी घेरने का काम करेगी। अधिकारियों द्वारा किसानों का उत्पीड़न एवं किसानों की अनदेखी बर्दाश्त नहीं की जाएगी। उक्त बैठक में जिलाध्यक्ष किशोरी लाल, महानगर अध्यक्ष तौकीर फरहत, परवक्ता आलोक, वरिष्ठ प्रदेश उपाध्यक्ष शिव कुमार सिंह, युवा मंडल अध्यक्ष के के सिंह, मध्यांचल प्रभारी हंसराज यादव, मंडल अध्यक्ष गुरमीत सिंह, मंडल महामंत्री सुनील शुक्ल, मंडल उपाध्यक्ष आरिफ, मंडल उपाध्यक्ष उर्मिला, ब्लॉक अध्यक्ष रमेश,तहसील अध्यक्ष छेदीलाल गौतम, महिला जिला अध्यक्ष बबली एवं सैकड़ो जनपद के किसान कार्यकर्ताओं ने भाग लिया।

नैनो यूरिया छिड़काव में किसानों का आ रहा है अधिक खर्च

सुमेरपुर हमीरपुर। नैनो यूरिया दलहन के साथ गेहूं के लिए रामबाण है। लेकिन छिड़काव में खर्च और मेहनत अधिक होने के कारण किसान इससे किनारा करता है। जबकि इसके छिड़काव से उत्पादन अधिक होता है। इसके बाद भी यह बुंदेली किसानों के दिलों दिमाग में नहीं बैठ पा रही है। इफको ने दानेदार यूरिया के साथ घोल वाली यूरिया के रूप में नैनो यूरिया पेश की है। यह यूरिया दानेदार से कहीं ज्यादा कारगर है। विदोखर के किसान सुरेश यादव ने अपना अनुभव साझा करते हुए बताया कि मटर गेहूं आदि में पानी लगाने के बाद अगर पीलापन होता है तो दानेदार यूरिया उसे खत्म नहीं कर पाती। अगर उसकी जगह नैनो यूरिया का छिड़काव कर दिया जाए तो पीलापन चंद दिनों में दूर हो जाता है और उत्पादन भी बढ़ जाता है। लेकिन इसके छिड़काव में समय के साथ पैसा भी खर्च होता है। इससे लागत बढ़ती है। इस वजह से किसान नैनों की जगह दानेदार यूरिया के छिड़काव को ज्यादा महफूज मानता है। ऐसा ही कुछ पचखुरा बुजुर्ग के किसान शिव सिंह भी बताते हैं।

पूर्व विधायक ने किया नेत्र शिविर का आयोजन

बांदा अवधनामा संवाददाता। क्षेत्र के लुकतरा गांव में पूर्व विधायक दलजीत सिंह द्वारा आयोजित विशाल नेत्र शिविर का आयोजन सकुशल सम्पन्न हुआ। नेत्र शिविर में करीब 155 मरीजों का परीक्षण किया गया जिसमें लेंस प्रत्यारोपण के लिए 37 मरीजों को ऑपरेशन हेतु जानकीकुंड चिकित्सालय चित्रकूट भेजा गया। 55 मरीजों को निःशुल्क दवा, चश्मा वितरित किये गए। जानकीकुंड चिकित्सालय के कुशल नेत्र विशेषज्ञों द्वारा मरीजो की जांच की गई जिसमें डॉ पंकज गुप्ता, डॉ नयन मिश्र नेत्र विशेषज्ञ, नरोत्तम, सूरज देवेंद्र आदि की टीम रही। शिविर का कुशल संचालन एवं देखरेख नन्दू सिंह प्रतिनिधि विधायक द्वारा किया गया ग्राम प्रधान तुलसीराम यादव का सहयोग भी बना रहा। पूर्व विधायक के मीडिया प्रभारी अनिल सिंह मौजूद रहे। पूरे शिविर के दौरान पूर्व विधायक दलजीत सिंह द्वारा व्यवस्थाओं के बारे में जानकारी लेते रहे।

प्रो. वंदना राय के शोधपत्र को मिला सर्वश्रेष्ठ पुरस्कार

जौनपुर अवधनामा संवाददाता। बायोटेक सिनर्जी पर 10वें वैश्विक सम्मेलन में वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय की बायोटेक्नोलॉजी की पूर्व संकायाध्यक्ष प्रो वंदना राय के शोध पत्र पूर्वी उत्तर प्रदेश की जनसंख्या के शराबी व्यक्तियों में एसईआरटी (सर्ट) जीन 5- एच टी टीएलपी आर बहुरूपता के आणविक अध्ययन को सर्वश्रेष्ठ शोधपत्र का पुरस्कार दिया गया। इस शोध में प्रो वंदना राय के साथ विभाग के प्रो प्रदीप कुमार, एम एससी की छात्रा प्राची सिंह, ह्यूमन मोलेकुलर जेनेटिक्स लैबोरेटरी के अभिषेक कन्नौजिया व अमृता चौधरी ने भी कार्य किया है सर्ट जीन मस्तिष्क में सेरोटोनिन की सिग्नलिंग में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। सर्ट जीन बहुरूपता के कारण व्यक्ति को शराब की लत लगने व अन्य कई मानसिक बीमारियों जैसे अवसाद, सीजोफ्रेनिया आदि का खतरा होता है।

इशरत नाहिद की कहानियां जीवन का प्रतिबिंब हैं

अवधनामा संवाददाता

लखनऊ। कल अवामी कल्चरल फोरम ने मास कम्युनिकेशन अकादमी, कैसरबाग, लखनऊ में एक महफ़िल अफसाना का आयोजन किया, जिसमें कथा लेखिका डॉ. इशरत नाहीद (असिस्टेंट प्रोफेसर मौलाना आज़ाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी, लखनऊ कैंपस) ने अपनी दो कहानियाँ मंजिल बे निशां और सहेली प्रस्तुत कीं।

कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ. वज़ाहत हुसैन रिज़वी ने की। उन्होंने अपने भाषण में दोनों कहानियों की सराहना करते हुए कहा कि इनमें पारंपरिक विषयों को शामिल किया गया है और महिलाओं की समस्याओं की ओर ध्यान आकर्षित किया गया है, फिर भी ये वर्तमान समाज का दर्पण हैं। उन्होंने आगे कहा कि शुरू से ही महिला लेखकों के विकास में पुरुषों को बाधक माना जाता रहा है, लेकिन यह भुला दिया गया कि आखिर महिलाओं को प्रोत्साहित करने में भी पुरुषों का ही हाथ रहा है. इस संबंध में उन्होंने अब्दुल हलीम शरर, सज्जाद ज़हीर, शेख अब्दुल्ला आदि का नाम लिया. वज़ाहत हुसैन रिज़वी ने कहानीकार की वाणी और लहजे की सराहना करते हुए कहानी में छिपे संदेश की ओर इशारा किया और कहा कि कहानी में वर्णित मुद्दे बहुत बुनियादी हैं और उन पर ध्यान देने की ज़रूरत है। कहानी पढ़ने के बाद प्रतिभागियों ने कहानी पर अपनी राय व्यक्त की।

सबसे पहले प्रोफेसर सबरा हबीब ने कहानी की भाषा की सहजता की सराहना की और कहा कि यह कहानी महिलाओं के शोषण को दुनिया के सामने प्रस्तुत करती है। कौशल किशोर ने कहा कि इशरत नाहिद की कहानियां जीवन का प्रतिबिंब हैं, महिलाएं समाज में अपना स्थान बना रही हैं। मुहम्मद अहसन ने कहा कि दोनों कहानियों का स्वभाव समान है। अफ़साना मंजिले बे निशां की मंज़र निगारी दिल को छु लेने वाली है। असगर मेहदी ने सकीना का वर्णन करते हुए सहेली कहानी का बेहतरीन विश्लेषण किया। सकीना के चरित्र को प्रतीकात्मक रूप में धरती के विलाप का वर्णन उसके द्वारा किया गया है।

सईदा सायरा ने कहानियों को नारीवाद की आवाज़ बताया, उनके अलावा अर्वतिका जी और अन्य लोगों ने भी कहानी पर अपने विचार रखे। कार्यक्रम का संचालन अवामी सांस्कृतिक मंच की लखनऊ इकाई सचिव फरजाना मेहदी ने किया और सभी प्रतिभागियों को धन्यवाद दिया। इस गोष्ठी मे डॉ जां निसार जलाल पूरी, डॉ. सरवत तक़ी प्रोफेसर रेशमां परवीन डॉ मूसी रज़ा के अतिरिक्त हिंदी उर्दू के कई साहित्यकार उपस्थित रहे।

खुदा का शुक्र है मां-बाप के करीब हूं मैं न जाने कितने रईसों से खुशनसीब हूं मैं

वहाज अली निहाल/चेतन जैन

इटावा,जसवंतनगर। विश्व प्रसिद्ध मैदानी रामलीला शनिवार को देर रात आयोजित कवि सम्मेलन के साथ हुआ समापन। कवि सम्मेलन का शुभारंभ मुख्य अतिथि समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव शिवपाल सिंह यादव ने दीप प्रज्वलित कर एवं आदित्य यादव अंकुर ने श्रद्धेय नेता जी और अजय लंबरदार के चित्र पर पुष्प अर्पित कर किया गया।कार्यक्रम की अध्यक्षता एडवोकेट प्रदीप गुप्ता ने की।

इस अवसर पर शिवपाल सिंह यादव को एक बड़ी पुष्प हार डालकर रामलीला समिति के सदस्यों ने सम्मान किया, आदित्य यादव को पटका डालकर अश्वनी गुप्ता व जितेंद्र यादव मोना ने स्वागत अभिनंदन किया।मुख्य अतिथि शिवपाल सिंह यादव ने उपस्थित सभी कवियों को पुष्प गुच्छ देकर सम्मानित किया।अपने उदबोधन में शिवपाल सिंह ने कहा कि विश्व की सबसे उत्कृष्ट रामलीला यहाँ जसवंतनगर में होती है। भगवान राम के आदर्शों पर हम समजवादी लोग चल रहे है।साथ ही भाजपा पर कटाक्ष करते हुए कहा कि भाजपा के लोग सिर्फ भगवान राम का ढिढोरा पीटते है।साथ ही जसवंतनगर की जनता का आभार व्यक्त करते हुए 7 बार नेता जी को एम एल ए और 6 बार एमपी और मुझे सन 96 से लगातार विधायक बनाने का काम नगर की जनता ने किया है। नगर में रामलीला में लगी दुकानदारों के विषय मे कहा कि मैं जिले के डीएम व एस एस पी से निवेदन करूंगा कि इन दुकानदारों की दुकान कम से कम धनतेरस तक लगी रहे जिससे कि इनके घरों में उल्लास पूर्वक दीपावली का त्योहार मनाया जा सके। कवि सम्मेलन का प्रारम्भ योगिता चौहान ने सर्व प्रथम सरस्वती वंदना कर कवि सम्मेलन का शुभारम्भ किया,फिर एक के बाद एक कवियों ने अपने काव्य पाठ से उपस्थित स्रोताओं का मन जीत लिया। मोहित सक्सेना आगरा,ब्रजवासी जब मंच पर आए तो पूरे देशी तरीके से जसवंतनगर की भाषा में मंच से वाह वाही लूटी,पाकिस्तान को ललकारते हुए काव्य पाठ कर,पूत बन के रहोगे तो सेवा करोगे तो मिठाई ले जाओगे वे मतलब अड़ोगे हमसे लड़ोगे तो दोच दिये जाओगे।

कर्मचारियों के नहीं आने से किसानों को नहीं मिल पा रही योजनाओं की जानकारी

अवधनामा संवाददाता

कुरारा, हमीरपुर। विकास खंड क्षेत्र के पारा गांव में स्थित राजकीय पशु अस्पताल उपकेंद्र सात वर्ष से केवल अभिलेखों में संचालित हो रहा है।वही उपकेंद्र में तैनात पशु धन प्रसार अधिकारी द्वारा एक भी दिन नही खोला जा रहा है। फिर भी उनका वेतन बिना कार्य के निर्गत किया जा रहा है। ग्रामीण अपने पशुओं के इलाज के लिए प्राइवेट चिकित्सक का सहारा ले रहे हैं। आला अधिकारी भी इस कारगुजारी से वाकिफ नहीं हो पा रहे हैं। न ही कभी जिला पशु चिकित्सा अधिकारी द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों का दौरा किया जा रहा है। जिसके चलते मनमानी पर कार्य किया जा रहा है। ग्रामीणों ने जिलाधिकारी से इसकी जांच कराए जाने की मांग की है।

कस्बा कुरारा के राजकीय पशु चिकित्सा लय से संबद्ध पारा गांव में राजकीय पशु अस्पताल उपकेंद्र संचालित है। इसमें एक कर्मचारी की तैनाती लगभग पांच वर्ष से है। लेकिन यह कर्मचारी कभी उपकेंद्र में नहीं जाता है। ऐसे में पारा, कंडौर, शंकरपुर , जल्ला आदि के ग्रामीणों को पशुपालन विभाग द्वारा इलाज की सुविधा नहीं मिल पा रही है।ग्राम प्रधान पारा संतोष कुमार ने जानकारी देते हुए बताया कि गांव में प्राथमिक विद्यालय के पास राजकीय पशु अस्पताल उपकेंद्र बना हुआ है। पशुओं के इलाज के लिए लोहे के पाइप से कटघरा बनाया गया है। जिसमे खड़ा करके पशुओं का इलाज किया जाता है । तथा एक कमरे में इनका अस्पताल संचालित है। लेकिन इसका ताला कभी नहीं खोला जाता है। ग्रामीणों ने जानकारी देते हुए बताया की लगभग सात वर्ष पहले एक चिकित्सक की तैनाती हुई थी तब वह नियमित अस्पताल में आकर बैठते थे। तथा पशुओं का इलाज करते थे। लेकिन अब किस की तैनाती है गांव वालो को पता नहीं है। सात वर्ष से यह उपकेंद्र केवल अभिलेखों में संचालित हो रहा है।

दीपोत्सव कार्यक्रम का सभी श्रद्धालु एलईडी के माध्यम से विभिन्न स्थानों पर लुप्त उठा सकते है

अवधनामा संवाददाता

अयोध्या। सप्तम दीपोत्सव को सकुशल सम्पन्न कराये जाने हेतु मण्डलायुक्त गौरव दयाल, पुलिस महानिरीक्षक प्रवीण कुमार, जिलाधिकारी नितीश कुमार, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक राजकरन नय्यर, सूचना निदेशक शिशिर, नगर आयुक्त विशाल सिंह, अपर जिलाधिकारी नगर/मेलाधिकारी सलिल कुमार पटेल, पुलिस अधीक्षक नगर मधुबन कुमार सिंह के निर्देश के क्रम में उपनिदेशक सूचना डा0 मुरली धर सिंह ने बताया कि आम श्रद्वालुओं एवं सुरक्षा के मानकों को ध्यान में रखते हुये आम जनता/श्रद्वालुओं के लिए एलईडी वॉल/वाहन लगाये जा रहे है तथा अधिकारियों द्वारा यह निर्देश दिया गया था। उन्होंने बताया कि दीपोत्सव कार्यक्रम का सजीव प्रसारण 7 नवम्बर 2023 से शुरू कर दिया जायेगा। दीपोत्सव कार्यक्रम का सभी श्रद्वालु एलईडी के माध्यम से विभिन्न स्थानों पर लुप्त उठा सकते है भीड़ को देखते हुये विभिन्न स्थानों पर एलईडी लगायी गयी है। उन्होंने बताया कि अयोध्या के इन स्थानों यथा राम की पैड़ी,नगर निगम के सामने पार्क में, नया बस स्टेशन बाईपास मार्ग, श्रीराम चिकित्सालय के ऊपर भवन पर, अशर्फी भवन, महोबरा चौराहा, अयोध्या द्वार, राज सदन, जानकी महल,कनक भवन, साकेत महाविद्यालय, सुल्तानपुर बाईपास मार्ग, अम्बेडकर नगर बाईपास मार्ग,सहादतगंज बाईपास मार्ग, रायबरेली बाईपास मार्ग, देवकाली मंदिर तिराहा मुख्य नगर में, सहादतगंज हनुमानगढ़ी,सर्किट हाउस के पास,अयोध्या रेलवे स्टेशन पर, सूरजकुंड दर्शन नगर, तुलसी उद्यान, गुप्तारघाट,अन्तर्राष्ट्रीय रामकथा संग्रहालय, टेढ़ीबाजार में स्थापित कराये जाने हेतु स्थलों का चयन किया गया है। इसके अतिरिक्त उपलब्धता के आधार पर संत महात्माजन, जनप्रतिनिधि के मांग या निर्देश पर स्थापित किया जायेगा।

अयोध्या में प्राण प्रतिष्ठा से पहले संपन्न हुआ अक्षत पूजन

45 प्रांतों के 100 प्रतिनिधियों को सौंपा गया पूजित अक्षत से भरा कलश

अवधनामा संवाददाता

अयोध्या। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी व मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में अयोध्या में भगवान श्रीराम के मंदिर का निर्माण तेज गति से किया जा रहा

है। इस क्रम में भव्य राम मंदिर में रामलला के विग्रह की प्राण प्रतिष्ठा से पहले रविवार को विहिप की ओर से %अक्षत पूजन% कार्यक्रम सम्पन्न किया गया। इस कार्यक्रम में केरल, तमिलनाडु, अंडमान-निकोबार सहित विहिप के 45 प्रांतो से 100 से ज्यादा प्रतिनिधि अयोध्या में आयोजित पूजन कार्यक्रम में पहुंचे। उन्हें रामजन्म भूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के महामंत्री चंपत राय ने भगवान रामलला के सामने रखे गए कलश सौंपे। इसके बाद चंपत राय ने कहा, 500 साल बाद भगवान जन्मभूमि में लौट रहे हैं। लोग अयोध्या जैसा माहौल देश के गांव-गांव में भी बनाएं। प्राण-प्रतिष्ठा वाले दिन हर घर दीये जलाकर खुशी मनाएं। विहिप कार्यकर्ताओं को सौंपे कलश विहिप कार्यकर्ताओं को सौंपे गए पीतल के कलश में 5 किलो अक्षत रखा गया है। भगवान राम के इस प्रसाद को लेकर विहिप कार्यकर्ता देश के कोने-कोने में जाकर घरों में बांटेंगे। अक्षत बिना टूटे चावल, हल्दी और देशी घी से बनाकर बनाया गया है। अक्षत में एक क्विंटल पिसी हुई हल्दी और 21 किलो देसी घी मिलाया गया है।गांव-गांव में करें प्राण-प्रतिष्ठा कार्यक्रम देखने की व्यवस्था ट्रस्ट के महामंत्री चंपत राय ने कहा, अक्षत पूजन रामलला के सामने किया गया। राम जन्मभूमि पथ से विहिप कार्यकर्ता कलश लेकर रवाना हो गए। कार्यकर्ता जिले से लेकर गांव-गाव तक लोगों के पास पहुंचाएंगे। 22 जनवरी को भगवान की प्राण-प्रतिष्ठा होगी। प्राण-प्रतिष्ठा का लाइव प्रसारण अपने गांव में लोगों को दिखाने की व्यवस्था करें। अक्षत गांव में पूजन के लिए है न की अयोध्या आने का निमंत्रण है। उन्होंने कहा, प्राण-प्रतिष्ठा के दिन गांव में लोग इकट्ठा हों। प्रातः 11 बजे से अपराह्न एक बजे तक का कार्यक्रम करें। भगवान का पूजन दोपहर 12 बजे शुरू होगा। आरती के बाद लोग प्रसाद वितरण करें। शाम 6ः15 बजे दीपावली मनाकर खुशी मनाएं। जिस तरह से राम के वनवास से लौटने पर दीपावली मनाई गई थी। उसी तरह इस बार 500 साल बाद अपनी जन्मभूमि पर लौटने पर दीपावली मनाई जाएगी। विहिप कार्यकर्ता गांव-गांव बांटेंगे अक्षत चंपत राय ने बताया कि शनिवार को रात में रामलला के सामने अक्षत रखा गया था। प्रातः आरती के समय से दोपहर के आरती तक कलश भगवान के सामने रखा था। भगवान के सामने कार्यकर्ताओं को कलश सौंपा गया है। यह कलश कार्यकर्ता अपने केंद्र पर ले जाएंगे। वहां अक्षत मिलाकर गांव-गांव और ब्लॉक, तहसील में बांटेंगे। विहिप के केंद्रीय मंत्री राजेंद्र सिंह पंकज ने कहा कि 5 सौ साल बाद रामलला अपनी जन्मभूमि स्थित मंदिर पर विराजमान होने जा रहे हैं। यह पूरे विश्व के राम भक्तों के लिए अपार हर्ष की बात है। इस दिन अयोध्या की परिस्थितियों के कारण जो राम भक्त अयोध्या नहीं आ सकते। वह अपने शहर, अपने गांव, कस्बे, तहसील और वार्ड में ही प्राण प्रतिष्ठा का उत्सव किसी मंदिर में मनाएं।

पूर्वांचल के पहले नेशनल पैरा शूटर बने तिरंकारी

अयोध्या। जनपद के तिरंकारी मणि त्रिपाठी जो बाये पैर से दिव्यांग हैं उन्होने पूर्वांचल से पहले पैराशूटर खिलाड़ी के तौर पर नेशनल खिलाड़ी के रूप में अपने आपको स्थापित करने में सफलता प्राप्त की हैं। श्री त्रिपाठी ने अपने कोच कैप्टन दिनेश कुमार सिंह के साथ पैरालिंपिक कॉमेटी ऑफ इंडिया द्वारा डॉ0 करणी सिंह शूटिंग रेंजस, नई दिल्ली में दिनांक 01 से 05 नवंबर को आयोजित हुए चौथे राष्ट्रीय शूटिंग प्रतियोगिता में 10 मीटर एयर पिस्टल पी एस एच 1 श्रेणी में प्रतिभाग कर अपना स्थान बनाते हुये, यह मुकाम हासिल किया हैं। श्री त्रिपाठी से हुई बातचीत में उनके द्वारा बताया गया कि इससे पूर्व उन्होने उत्तर प्रदेश स्टेट रायफल एसोसिएशन के स्तर से आयोजित प्रतियोगिता प्री स्टेट एवं स्टेट में भाग लेकर कांस्य पदक जीतते हुए प्री जोनल में जगह बनाई तदोपरांत ही वो इस पायदान पर पहुंचने में कामयाब हुए हैं।

वोटर चेतना अभियान में बूथ पर पहुंची भाजपा प्रदेश मंत्री

अवधनामा संवाददाता

बाराबंकी। भारतीय जनता पार्टी द्वारा चलाए जा रहे वोटर चेतना विशेष अभियान के तहत रविवार को प्रदेश

मंत्री व जिला प्रभारी अर्चना मिश्रा बूथ पर पहुंची।उन्होंने पल्हरी स्थित प्राथमिक विद्यालय के बूथ संख्या 376 पर बीएलओ को वोटर सूची में नाम बढ़वाने के लिए आवेदन पत्र सौंपा। इसके पूर्व उन्होंने शांति विहार कॉलोनी में चौपाल लगाकर नययुवकों से संपर्क साधा। सभी से फॉर्म 6 भरवाए। प्रदेश मंत्री ने कार्यकर्ताओं से उन लोगों से विशेष रूप से संपर्क साधने के निर्देश दिए जिन्होंने 2022 के विधानसभा चुनाव के बाद कॉलोनी में नए मकान बनवाकर रहना शुरू किया है। चौपाल के दौरान उन्होंने वोटर सूची का अवलोकन किया एवम बोगस वोटरों का चिन्हांकन भी किया। कार्यकर्ताओं का उत्साह वर्धन करते हुए उन्होंने बताया कि चुनाव आयोग ने नए वोटर का नाम लिस्ट में जोड़वाने, संशोधन व परिवर्धन कराने के लिए विशेष अभियान चलाया है। कहा कि सभी चुनाव बूथ पर ही लड़े जाते हैं।

रुपयों के लेन देन को लेकर दोस्त ने ही की थी अतुल की हत्या, जेल भेजा गया हत्यारा

अवधनामा संवाददाता

बाराबंकी। स्वाट सर्विलांस, थाना कुर्सी की संयुक्त पुलिस टीम ने अतुल हत्याकाण्ड का सफल अनावरण कर लिया है। रुपयों के लेन देन को लेकर हुई इस घटना में हत्याभियुक्त को आलाकत्ल एक छुरा व मोटर साइकिल के साथ गिरफ्तार कर लिया गया। एसपी डीके सिंह ने बताया कि 2 नवम्बर की रात्रि को थाना कुर्सी क्षेत्रान्तर्गत हबीबपुर के पास किसान पथ की सर्विस लेन के पास कार में लखनऊ निवासी प्रॉपर्टी डीलर अतुल पाण्डे घायल अवस्था में मिला। उसे उपचार हेतु अस्पताल भेजा गया जहां पर चिकित्सकों द्वारा मृत घोषित कर दिया गया। वह अलीगंज जनपद लखनऊ में रहता था। मृतक के पिता की तहरीर पर मामला दर्ज कर पुलिस ने यामीन, कल्लू निवासी पडरी थाना कुर्सी, सत्येन्द्र सोनी उर्फ सोनू व माजो पुत्र स्व0 अफजल हसन को नामजद किया। स्वाट, सर्विलांस व थाना कुर्सी की संयुक्त पुलिस टीम द्वारा पूछताछ, साक्ष्य संकलन, सीसीटीवी फुटेज व

डिजिटल डेटा की मदद से अभियुक्त विवेक वर्मा उर्फ विकास पुत्र रामचन्दर वर्मा उम्र करीब 34 सेक्टर-क़फतेहपुर थाना अलीगंज लखनऊ का नाम प्रकाश में लाया गया। जिसे बेहटा अण्डर पास, थाना कुर्सी से गिरफ्तार किया गया है। अभियुक्त की कब्जे निशादेही पर आलाकत्ल एक रक्त रंजित छूरा व शर्ट, एक मोटरसाइकिल, एक मोबाइल व कार बरामद किया गया। चारों व्यक्तियों की नामजदगी गलत पायी गयी।पूछताछ से प्रकाश में आया कि मृतक अतुल व अभियुक्त विवेक पूर्व से दोस्त थे। अभियुक्त विवेक द्वारा अपनी बहन की शादी के लिए मृतक से 60 हजार रुपये उधार लिये गये थे, जिसमें से 40 हजार रुपये वापस करने शेष थे। जिसे वापस न करने पर मृतक द्वारा अभियुक्त को गाली गलौज एवं घर जाकर भी बेइज्जत किया गया था। विवेक द्वारा आहत होकर अतुल की हत्या करने हेतु योजना बनाई गई। घटना के दिन अभियुक्त विवेक ने मृतक के घर जाकर कुछ रुपयों को वापस देने की बात कह कर एवं पार्टी करने के लिए अतुल के साथ अल्टो कार में ड्राइवर की पीछे वाली सीट पर बैठकर निकल लिये और रास्ते में अतुल को अधिक शराब भी पिलाई। मृतक द्वारा रुपये मांगने पर अभियुक्त द्वारा बहाना बना दिया गया कि जिससे रुपये लेने थे वह अभी आया ही नहीं। मृतक द्वारा पडरी स्थित साइट देखने जाने की बात कहने पर अभियुक्त विवेक भी मौका पाकर उसके साथ हो लिया।

दलित मुस्लिम के बीच चौपाल महज एक नौटंकी, ढकोसले से बाज आये कांग्रेसः वसीम राईन

अवधनामा संवाददाता

बाराबंकी। अब पछताए होत क्या... की कहावत कांग्रेस पर पूरी तरह लागू हो रही है। दलित मुस्लिम के बीच चौपाल कर वोटों में सेंध लगाने की कोशिश महज एक

ढकोसला है। कांग्रेस को अब ऐसी नौटंकी से बाज आना चाहिए। जब कुछ करने का वक्त था तब दलित व पसमांदा मुस्लिम सिर्फ सेवा के लिए था आज कांग्रेस को इनकी याद सता रही। वह बेवकूफ बनाने चली है। यह बात आल इंडिया पसमांदा मुस्लिम महाज के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष वसीम राईन ने अपने बयान में कही है। उन्होंने कहा कि हैरत इस बात की हो रही, कि दशकों तक सत्ता पर काबिज रही जिस कांग्रेस के कार्यकाल में आर्टिकल 341 के जरिये पसमांदा मुस्लिम समाज पर धार्मिक प्रतिबन्ध लगाए गए उस दल के यूपी अध्यक्ष इसी समाज के बीच चौपाल लगाने की तैयारी कर रहे। शायद वह भूल गए कि अशराफ़ मुसलमानों को चिपकाकर रखने वाली कांग्रेस ने 85 फीसदी पसमांदा मुसलमान को सिर्फ वोटबैंक की तरह इस्तेमाल किया। इसी समाज की बदौलत कांग्रेस लम्बे समय तक सत्ता में रही और इस साथ के एवज में हासिल कुछ भी नही हुआ। सत्ता व संगठन में शामिल करना तो दूर सदन में बैठने का मौका तक नही दिया गया। वोट लेकर सिर्फ उल्लू ही बनाते रहे। वसीम राईन ने कहा कि पसमांदा मुस्लिम समाज के वोटों के सहारे सत्ता पाने वाली कांग्रेस को शायद इस बात का जरा भी एहसास नही रहा होगा कि वक्त एक जैसा नही रहता। समय के साथ जागरूक हुए पसमांदा मुसलमान ने खुद राह चुनने का फैसला किया।

धूमधाम से मनाया दीपोत्सव व गणपति उत्सव

अवधनामा संवाददाता

सहारनपुर। लघु उद्योग भारती के तत्त्वावधान में दीपावली व गणपति उत्सव का आयोजन बड़े ही धूमधाम से आयोजित किया गया। समारोह में लकी ड्रा में चांदी की मूर्तियां, 40 इंच का स्मार्ट

टीवी, म्यूजिकल बार स्टेशन, विश्व प्रसिद्ध राडो ब्रांड की घड़ियां आदि गिफ्ट आइटम्स निकाली गई व सभी आगंतुकों को दीपावली गिफ्ट प्रदान किए गए। दिल्ली रोड स्थित एक पैलेस में दीपावली महोत्सव को महाराष्ट्र की तर्ज पर बड़े ही धूमधाम से मनाया गया, जिसमें लघु उद्योग भारती के उपस्थित कोर ग्रुप के सदस्यों तथा संयोजक मंडल ने मराठी वेशभूषा धारण कर अतिथियों का स्वागत किया। साथ ही भोजन में भी महाराष्ट्र के स्वाद का सभी ने खूब आनंद लिया। समारोह में लकी ड्रा में चांदी की मूर्तियां, 40 इंच का स्मार्ट टीवी, म्यूजिकल बार स्टेशन, विश्व प्रसिद्ध राडो ब्रांड की घड़ियां आदि गिफ्ट आइटम्स निकाली गई व सभी आगंतुकों को ड्राई फ्रूट गजक, दीपावली पूजन का सामान इत्यादि सम्मिलित था भी वितरित किये गए ।

समारोह में एडीएमई श्रीमती अर्चना द्विवेदी, सीडीओ सुमित महाजन, सिटी मजिस्ट्रेट गजेंद्र सिंह, डीएलसी अनुपमा गौतम, जॉइंट डायरेक्टर इंडस्ट्रीज श्रीमती अंजू रानी, कमिश्नर इंडस्ट्रीज वी के कौशल इत्यादि अधिकारी उपस्थित रहे। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से विभाग प्रचारक प्रवीर, विभाग संघचालक राकेश वीर, विभाग कार्यवाह अरविंद त्यागी, महानगर प्रचारक आशुतोष, महानगर कार्यवाह रमेश कश्यप एवं संघ के अन्य वरिष्ठ पदाधिकारी राजीव अग्रवाल, दिलीप चुघ व देवेंद्र बंसल आदि उपस्थित रहे। लघु उद्योग भारती के मण्डल अध्यक्ष अनुपम गुप्ता, आलोक जैन मंडल महामंत्री, राजेश गुप्ता उपाध्यक्ष, संदीप अग्रवाल कोषाध्यक्ष व जिला सहारनपुर से जिलाध्यक्ष वरुण अग्रवाल, चेयर मैन देवेंद्र कुमार बंसल, संरक्षक सुधाकर अग्रवाल, संदीप गुप्ता, अमर गुप्ता संगठन महामंत्री शौर्य जैन, जिला महामंत्री राजीव चांनना, कॉर्पोरेट महामंत्री संचित सागर, कोषाध्यक्ष मुकेश शर्मा, संरक्षक दिनेश माहेश्वरी, राजकमल अग्रवाल, सुशील सड़ाना, अमित गर्ग, अक्षय जैन, अजय सिंघल, उद्योग बंधु कन्वीनर एवं मीडिया प्रभारी इंजीनियर अजय शर्मा, विभिन्न औद्योगिक क्षेत्रओं के प्रभारी बेहट रोड के दुष्यंत सैनी, कामधेनु औद्योगिक क्षेत्र के राजीव आनंद, पिलखनी औद्योगिक क्षेत्र के सुशील भारद्वाज, दिल्ली रोड के रजत अग्रवाल, देहरादून रोड के राजीव चानना, चिलकाना रोड के प्रतिक बंसल, जनता रोड के राघव सिंघल एवं समारोह के संयोजक संजय गोयल, अमित राणा, दुष्यंत सैनी, रवि वैश्य, अजय गोयल, विजय गिरधर, गौरव कारवार, बृजेश प्रजापति, राम अवतार मित्तल, सौरभ जैन, सुनील अग्रवाल व महिला संयोज़िका शेफाली गुप्ता, रीता अग्रवाल, प्रियंका अग्रवाल, नेहा जैन, दीपा गोयल, सुमन गुप्ता, शमा जैन, मधु शर्मा, पूनम जैन, अंजू धमीजा, बरखा सिंगल, तृप्ति बंसल, अनुराधा रामपाल, गीता जैन, सूची पुष्टेला, आस्था शर्मा, अनुभा सिंघल, अमिका सिंघल, सिंपल सड़ाना, गीता चानना, अनुष्का शर्मा, दिव्या सागर, नीतू अग्रवाल, अंजू बंसल, सोनिया गर्ग, अर्चना सिंघल, शिखा जैन, मनीषा अग्रवाल, अंजली आनंद, उषा शर्मा, मनीष जैन, अमूल्य शर्मा, मनोज बंसल, अंबर जैन आदि काफी संख्या में पदाधिकारी व सदस्य उपस्थित रहे।

डीएम ने विशेष संक्षिप्त मतदाता पुनरीक्षण अभियान के तहत बूथों का किया निरीक्षण

अवधनामा संवाददाता

सहारनपुर। भारत निर्वाचन आयोग के निर्देशानुसार आगामी लोकसभा सामान्य निर्वाचन 2024 एवं अर्हता तिथि 01 जनवरी 2024 के आधार पर विधानसभा निर्वाचन क्षेत्रों की निर्वाचक नामावलियों के विशेष संक्षिप्त पुनरीक्षण कार्यक्रम अन्तर्गत 05 नवंबर विशेष अभियान तिथि के अवसर पर संचालित गतिविधियों का जायज़ा लेने के उद्देश्य से जिला निर्वाचन अधिकारी एवं जिलाधिकारी डॉक्टर दिनेश चंद्र ने जिले के विधानसभा निर्वाचन क्षेत्रों की निर्वाचक नामावलियों का विशेष संक्षिप्त पुनरीक्षण अभियान के तहत कई मतदेय स्थलों पर लगाए गए शिविरों का निरीक्षण किया। उन्होंने मतदाता पुनरीक्षण अभियान के क्रम में निर्धारित विशेष तिथि 05 नवंबर को विभिन्न मतदान केंद्रों का बारीकी से निरीक्षण किया एवं संबंधित को आवश्यक दिशा निर्देश दिए। डीएम को निरीक्षण के दौरान संबंधित बीएलओ अपने-अपने बूथ पर मतदाता सूची एवं सभी प्रकार के आवेदन पत्रों के साथ मुस्तैद पाए गए। जिला निर्वाचन अधिकारी ने

बीएलओ को निर्देशित किया कि अपने-अपने क्षेत्र के वार्ड, कस्बा, गांव में घर-घर जाकर आवश्यकतानुसार फार्म 6, 7 एवं 8 भरकर नियमानुसार कार्यवाही करना सुनिश्चित करें। उन्होंने बूथों पर उपस्थित बीएलओ को निर्देशित किया गया कि अर्हता तिथि 01 जनवरी 2024 को 18 वर्ष की आयु पूर्ण करने वाले युवक-युवतियों का नाम मतदाता सूची में अवश्य अंकित हो जाए और ग्राम में आई नव वधुओं का भी नाम मतदाता सूची में अवश्य जोड़ लिया जाए। जिला निर्वाचन अधिकारी ने बताया कि आज जनपद में सभी बीएलओ द्वारा सम्बन्धित बूथ पर बैठकर मतदाता पुनरीक्षण का कार्य संपादित किया गया। इसी के साथ एडीएम, सभी एसडीएम, बीडीओ एवं संबंधित सभी अधिकारी अपने अपने क्षेत्रों में मुस्तैद नजर आए।

10 नवम्बर को दीपोत्सव कार्यक्रम को सफल बनाने का आह्वान

सहारनपुर। अन्तर्राष्ट्रीय वैश्य महासम्मेलन शाखा ने महाराजा अग्रसेन की प्रतिमा पर पूजा अर्चना कर पुष्पाजली अर्पित कर उनके आदर्शो को अपनाने का आह्वान किया तथा अगामी दस नवम्बर को दीपक उत्सव कार्यक्रम को सफल बनाने का आह्वान किया।

आज रेलवे स्टेशन स्थित महाराजा अग्रसेन चौक पर महाराजा अग्रसेन की प्रतिमा पर आईवीएफके पदाधिकारियों ने पूजा अर्चना कर आरती उतारी। सभी अग्रबुंधओं से उनके दिखाये मार्ग पर चलने को प्रेरित किया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि दिनेश माहेश्वरी का विपुल गुप्ता एवं सुशील गर्ग ने माला में पटका से स्वागत किया। आईवीएफ के जिला अध्यक्ष सुनील गुप्ता ने बताया कि महीने के प्रत्येक रविवार को महाराजा अग्रसेन की आरती एवं पुष्पांजलि का कार्यक्रम आयोजित किया जाता है। सभी वैश्य बंधुओ

नयी एमएसएमई पॉलिसी से उद्यमियों को मिलेगा लाभः अंजू

अवधनामा संवाददाता

सहारनपुर। संयुक्त आयुक्त उद्योग सहारनपुर मण्डल अंजू रानी ने बताया कि उत्तर प्रदेश ग्लोबल इंवेस्टर्स समिट- 2022 में सहारनपुर से उद्योग विभाग द्वारा 437 एमओयू हस्ताक्षर करवाये गये थे, जिसमें से एक प्रोजेक्ट सिमरन रिसाईक्लिंग प्रालि का उद्घाटन किया गया। जनपद सहारनपुर में जो अवैध व्हीकलों का कटान हो रहा है उसको रोकने के लिए उत्तर प्रदेश सरकार की नई एमएसएमई पॉलिसी-2022 आई है उसी दिशा में यह पहला कदम है इस प्रोजेक्ट से यहां के लोगो को लाभ मिलेगा।

संयुक्त आयुक्त उद्योग अंजू रानी आज उत्तर प्रदेश ग्लोबल इंवेस्टर्स समिट- 2022 के अन्तर्गत सिमरन रिसाईक्लिंग प्रालि, गांव छज्जपुरा, देहरादून रोड सहारनपुर पर पद्मश्री भारत भूषण, संयुक्त आयुक्त उद्योग, सहारनपुर मण्डल, सहारनपुर अंजू रानी व उपायुक्त उद्योग सहारनपुर वी.के.कौशल के कर-कमलो द्वारा व्हीकल स्क्रेपिंग प्रोजेक्ट का उद्घाटन समारोह को मुख्य अतिथि के रूप में संबोधित कर रही थी।

डॉ अजय कुमार व सदस्यों द्वारा जिलाधिकारी का सम्मान

सहारनपुर की धरती कला-संस्कृति और विकास का केंद्र

अवधनामा संवाददाता

सहारनपुर। (अहमद रज़ा) नगर निगम द्वारा कल देर शाम मेला गुघाल समापन और दीपोत्सव के उपलक्ष में एक स्वागत व सम्मान समारोह का आयोजन किया गया, इस अवसर पर राष्ट्रीय एकता के प्रतीक मेला गुघाल के सफल कार्यक्रमों पर अधारित एक शॉर्ट फिल्म भी दिखाई गई यहां आयोजन के बाद सभी अतिथियों ने जनमंच परिसर में आतिशबाजी कर दीपोत्सव पर्व भी मनाया और एक दूसरे को बधाई दी। कार्यक्रम का शुभारंभ महापौर डॉ. अजय कुमार, विधायक राजीव गुंबर व देवेंद्र निम, जिलाधिकारी डॉ. दिनेश चंद्र सिंह, भाजपा के प्रदेश महामंत्री चंद्रमोहन, मेलाधिकारी राजेश यादव, भाजपा के पूर्व महानगर अध्यक्ष राकेश जैन, हेमंत अरोड़ा, समाजसेवी पाल्ली कालड़ा, मेला चेयरमैन चौधरी वीरसेन सिद्धू, सह संयोजक राजेंद्र कोहली व उपसभापति मुकेश गक्खड़ तथा अन्य अतिथियों ने माँ सरस्वती के समक्ष दीप प्रज्वलित कर किया।

समारोह को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि भाजपा प्रदेश मंत्री डॉ. चंद्रमोहन ने कहा कि 2017 से देश में एक परिवर्तन का दौर चल रहा है। लोगों को विभिन्न योजनाओं के माध्यम से रोजगार देकर उनके परिवारों को रौशन किया गया है। मेला गुघाल के माध्यम से भी सैकड़ों लोगों को रोजगार मिला है। उन्होंने कहा कि आज उत्तर प्रदेश मेलों का पर्याय हो गया है, मेले उत्तर प्रदेश की पहचान हो गए है। केन्द्र और राज्य सरकार की सबका साथ-सबका विकास भावना को मेला गुघाल ने पूरा करने का प्रयास किया है। उन्होंने उम्मीद जताई कि सहारनपुर की धरती विकास और कला-संस्कृति के ऊर्जा के केंद्र के रुप में उभरेगी। महापौर डॉ. अजय कुमार ने मां शाकुंभरी, मां त्रिपुरबाला देवी व जाहरवीर गोगा जी की स्मृति में लगने वाले मेलों का उल्लेख करते हुए कहा कि इन मेलों के माध्यम से सहारनपुर सांस्कृतिक धरोहरों को संजोने का काम कर रहा है। उन्होंने कहा कि गोगा महाड़ी के निकट एक सुंदर सरोवर और मानकमऊ में छठ पूजा का सुंदर घाट देने का प्रयास नगर निगम द्वारा किया जायेगा। विधायक राजीव गुंबर व देवेंद्र निम ने कहा कि मेला गुघाल के सांस्कृतिक कार्यक्रमों में विभिन्न संस्कृतियों का अनूठा संगम देखने को मिला है। दोनों विधायकों ने इसके लिए महापौर की प्रशंसा की। जिलाधिकारी डॉ.दिनेश चंद्र सिंह ने कहा कि हिन्दु-मुस्लिम संस्कृति के प्रतीक रुप में जनपद सहारनपुर की सांस्कृतिक विरासत को उत्कृष्ट ढंग से उद्भाषित करने का काम मेला गुघाल ने किया है। मेले के सफल आयोजन के लिए उन्होंने महापौर व नगरायुक्त सहित निगम व पुलिस विभाग के अधिकारियों और कर्मचारियों की सराहना की।

5 किलो मुफ्त राशन नही रोजगार चाहता है गरीब नौजवान, भाजपा उड़ा रही मजाकः अजय राय

बाराबंकी। देश और प्रदेश की भाजपा की सरकार गरीब का मजाक उड़ा रही हैं। इस देश की गरीब आवाम भाजपा सरकार से मुफ्त में 5 किलो राशन नही देश के हर गरीब बेरोजगार के हाथों लिये काम चाहती हैं। प्रधानमंत्री इस देश का गरीब आपसे भीख नही मांग रहा हैं वह मेहनत करता हैं वह साल में दो करोड़ नौकरी देने का वादा करने वाले प्रधानमंत्री से अपने लिये रोजगार मांग रहा हैं। अब समय आ गया हैं कि आप कांग्रेस पार्टी की मजबूत करें कांग्रेस पार्टी की मजबूती से देश प्रदेश को मजबूती मिलेंगी। उक्त उद्गार उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष पूर्व मंत्री अजय राय ने आज देवां मेला में सूफी संत हाजी वारिस अली शाह की दरगाह पर चादरपोशी कर व्यक्त किये। उन्होंने हाजी वारिस अली शाह मसोलियम कमेटी के मैनेजर जनाब शाह मसूद वारसी को कांग्रेस की प्रदेश प्रभारी महासचिव श्रीमती प्रियंका गांधी की ओर से इतजामियां कमेटी को मुबारकबाद तथा देश में अमन खुशहाली की दुआ का पत्र कमेटी के मैनेजर को सौंपा।

पौत्र ने ही की थी अपने बाबा की गला घोंटकर हत्या, गिरफ्तार

बाराबंकी। बाबा की गला घोंटकर हत्या करने वाला पौत्र आखिर पुलिस के हत्थे चढ़ गया। अपने पिता को सम्पत्ति में कुछ न मिलते देख पौत्र ने इस वारदात को अंजाम दिया। इस खुलासे ने जमीन जायदाद को लेकर दरकते रिश्तों को भी उजागर किया है। एसपी दिनेश कुमार ने बताया कि मंशाराम पुत्र श्रीपाल चौहान निवासी ग्राम झलिया दतौली थाना जहांगीराबाद द्वारा सूचना दी गई कि उनके पिता श्रीपाल उम्र करीब 80 वर्ष रोजाना की तरह खाना खाकर घर से दूर बने हाते में सोने गए थे, सुबह देखने पर वह मृत अवस्था में मिले तथा उनके मुंह से खून बह रहा था।

नेपाल में भूकम्प पीड़ितों को दो लाख देने का मंत्री परिषद की बैठक में हुआ निर्णय

अवधनामा संवाददाता

बढ़नी सिद्धार्थनगर। मंत्री परिषद की बैठक में भूकंप में जान गंवाने वाले लोगों के परिजनों को 2 लाख रुपये की दर से राहत देने का फैसला किया गया है। सरकार की प्रवक्ता संचार एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री रेखा शर्मा के मुताबिक आज सुबह हुई कैबिनेट बैठक में भूकम्प में मृतकों के परिजनों को 2 लाख रु देने का निर्णय लिया गया।

बैठक में मंत्री परिषद ने कर्णाली प्रांत की राजधानी सुरखेत को मुख्य संपर्क बिंदु और बांके के नेपालगंज को सहायक संपर्क बिंदु बनाकर एक स्थान के माध्यम से खोज, बचाव और राहत कार्य करने का भी निर्णय लिया। उक्त बैठक में भूकंप से विस्थापित लोगों के लिए अस्थायी आवास और सुरक्षा व्यवस्था की करने का भी निर्णय लिया गया। मंत्री शर्मा ने बताया कि अस्थायी आवास के अंदर भोजन की भी व्यवस्था की जायेगी। बैठक में पड़ोसियों और मित्र देशों और अंतरराष्ट्रीय संगठनों से औपचारिक रूप से प्रस्तावित समर्थन को स्वीकार करने और इस तरह के समर्थन के लिए नेपाली सरकार से आभार व्यक्त किया। मंत्री शर्मा ने प्रधानमंत्री राहत कोष में पैसा जमा करने वालों को धन्यवाद देते हुए यह भी बताया कि उन्होंने समर्थन के लिए अपील करने का फैसला किया है। संबंधित अधिकारियों द्वारा भूकंप से क्षतिग्रस्त सड़कों, संचार और अन्य संरचनाओं के तत्काल रखरखाव और संचालन की व्यवस्था करने का निर्णय लिया गया है। नेपाल सरकार की कैबिनेट बैठक में पुनर्निर्माण के लिए एक एकीकृत कार्य योजना आयोजित करने का निर्णय भी लिया गया है। मंत्रिपरिषद की बैठक में भूकंप के बाद खोज, बचाव और राहत प्रयासों में शामिल सरकारी एजेंसियों, स्थानीय स्तर, राज्य सरकारों, व्यक्तियों और संगठनों को विशेष रूप से जिला आपदा प्रबंधन समिति के साथ समन्वय स्थापित करने और उनसे आग्रह करने का भी निर्णय लिया गया है।

एसडीएम ने तीन बीएलओ पर कार्यवाही करने का दिया निर्देश

सिद्धार्थनगर। निर्वाचक नामावलियों के विशेष संक्षिप्त पुनरीक्षण अभियान के तहत विशेष दिवस में रविवार को कई बूथों के निरीक्षण में तीन बीएलओ अनुपस्थित पाए गए। उपजिलाधिकारी सदर डॉ. ललित कुमार मिश्रा ने बीएलओ से संबंधित ब्लाक स्तरीय अधिकारियों को अनुपस्थित वाले दिवस का मानदेय कटौती करने का निर्देश दिया है। एसडीएम सदर ने कपिलवस्तु विधानसभा क्षेत्र के कई बूथों का औचक निरीक्षण किया। इस दौरान उन्हें बूथ संख्या 114 पूर्व माध्यमिक विद्यालय बर्डपुर नंबर-14 पुराना नौगढ़ रमजाननगर में कार्यरत बीएलओ दुर्गा प्रसाद (अनुदेशक), बूथ संख्या 115 पूर्व माध्यमिक विद्यालय बर्डपुर नंबर-14 पुराना नौगढ़ रमजाननगर पश्चिमी भाग पर बीएलओ मीरा देवी (आंगनबाड़ी), बूथ संख्या 117 पूर्व माध्यमिक विद्यालय बर्डपुर नंबर 14 पुराना नौगढ़ रमजाननगर दक्षिणी भाग पर तैनात बीएलओ संदीप कुमार (पंचायत सहायक) मिले। एसडीएम ने खंड विकास अधिकारी, खंड शिक्षा अधिकारी, बाल विकास परियोजना अधिकारी को पत्र लिखकर मानदेय कटौती के निर्देश दिए हैं।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने की महिलाओं को असली भागीदारी : रोली सिंह

अवधनामा संवाददाता

अम्बेडकरनगर। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भाजपा की केंद्र सरकार द्वारा लागू किए गए नारी शक्ति वंदन अधिनियम की महिलाओं को जानकारी देने के लिए जिला महामंत्री दिलीप पटेल देव के संयोजन में भाजपा की विधान सभा क्षेत्र स्तर पर चल रही आखिरी विधान सभा महिला सम्मेलन रविवार को आलापुर में आयोजित हुआ।

सम्मेलन के मुख्य अतिथि अयोध्या जिला पंचायत अध्यक्ष रोली सिंह ने महिलाओं को सम्बोधित करते हुए कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी ने देश के महिलाओं की विभिन्न क्षेत्रों में भागीदारी के लिए नारी शक्ति वंदन अधिनियम लागू कर ऐतिहासिक कार्य किया है। कहा कि महिला आरक्षण कानून से महिलाएं सभी क्षेत्रों में शक्तिशाली बनेंगी। भाजपा सरकार की सोच है कि नारी शक्ति हर क्षेत्र में सक्षम बने। कहा कि भाजपा की केंद्र सरकार और प्रदेश सरकार महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए विविध योजनाएं चला रही है। कहा कि महिलाओं की शिक्षा बेहतर हो और उन्हें रोजगार के समान अवसर मिले जिससे वह देश की अर्थ व्यवस्था और समाज में बेहतर योगदान देने में सक्षम बने। विशिष्ट अतिथि भाजपा जिलाध्यक्ष त्रयंबक तिवारी ने कहा कि भाजपा ने देश की बहन बेटियों के लिए अच्छी शिक्षा,उज्ज्वला योजना, प्रधानमंत्री आवास,प्रधानमंत्री मातृ वंदन योजना, सुकन्या समृद्धि योजना सहित कई अन्य योजना लागू किया है। देश की महिलाएं राजनीति, खेल, चिकित्सा और शिक्षा के क्षेत्र में अद्वितीय योगदान दे रही हैं।महिलाओं को हर क्षेत्र में समुचित भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए भाजपा सरकार ने नारी शक्ति वंदन अधिनियम लागू किया है।अध्यक्षता करते हुए भाजपा महिला मोर्चा जिलाध्यक्ष रिंकल सिंह रघुवंशी ने मुख्य अतिथि सहित भाजपा नेताओं,महिला मोर्चा एवम अन्य सभी बहनों का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि भाजपा सरकार सरकार में महिलाएं किसी भी चुनौती को स्वीकार करने के लिए सक्षम हैं।

पिकप की टक्कर से आटो पल्टी, दो महिलाओं की मौत

अवधनामा संवाददाता

- घायलों को जिला अस्पताल किया गया रेफर

अम्बेडकरनगर। जिले के थाना राजेसुल्तानपुर अन्तर्गत अनियंत्रित पिकप की टक्कर से सवारियों से भरी ऑटो पलट गई जिसमें सवार दो महिलाओं की मौत हो गई। जबकि तीन अन्य घायल महिलाओं की हालत नाजुक बताई जा रही है। घायल महिलाओं को इलाज के लिए जिला अस्पताल रेफर कर दिया गया है।

आपको बता दें कि रविवार की सुबह राजेसुल्तानपुर थाना क्षेत्र के गढ़वल- कम्हरिया मुख्य मार्ग पर तेज गति से जा रही। अनियंत्रित पिकअप की टक्कर से सवारियों से भारी ऑटो पलट गई जिसके बाद चीख-पुकार मच गई। ऑटो में सवार फूलमती (65 वर्ष) पत्नी चंद्रपति व प्रेमशीला (53 वर्ष) पत्नी उमेश चंद्र जायसवाल निवासी देवलर थाना राजेसुल्तानपुर की घटना स्थल पर ही मौत हो गई। वहीं आटो मे सवार प्रतिमा (27 वर्ष) पत्नी मदनलाल ,सुनीता (23 वर्ष) पत्नी इंद्रेश, लीलावती (54 वर्ष) पत्नी सभापति निवासीगण देवलर की हालत गंभीर बताई जा रही है। ऑटो में सवार लोग सरयू नदी के तट पर स्नान करने जा रहे थे। हादसे के बाद परिजनों में कोहराम मचा हुआ है।सूचना पर पहुंचे थाना प्रभारी बेचू सिंह यादव ने शव को कब्जे में लेकर आवश्यक कार्रवाई शुरू किया। घायलों को इलाज के लिए अस्पताल पहुंचवाया वही मृतकों के शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया।

महिला समाज के उत्थान की बात करती है सपा : वृंदा सैनी

अवधनामा संवाददाता

- 2024 का चुनाव सरकार बनाने का नहीं बल्कि देश बचाने का है चुनाव: सैय्यदा खातून

सिद्धार्थनगर। सपा जिला कार्यालय पर रविवार को महिला सभा की संगठन बूथ समीक्षा बैठक महिला सभा की जिला अध्यक्ष श्रीमती सुनीता गोस्वामी जी की अध्यक्षता में संपन्न हुई। बूथ स्तर संगठन समीक्षा बैठक की मुख्य अतिथि समाजवादी पार्टी महिला सभा की प्रदेश महासचिव तथा जिला प्रभारी वृंदा सैनी जी रहीं। कार्यक्रम का संचालन सपा नेता मनोज मिश्रा ने किया। समीक्षा बैठक को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि वृंदा सैनी ने कहा कि समाजवादी पार्टी सदैव आधी आबादी का प्रतिनिधित्व करने वाली महिला समाज के उत्थान की बात करती है। समाजवादी सरकार में जहां महिलाओं को समाजवादी पेंशन देने के साथ-साथ इंटर पास बेटियों के आगे शिक्षा के लिए ?50000 कन्या विद्या धन के रूप में देने का काम करते थे। रानी लक्ष्मीबाई योजना के साथ-साथ तमाम जन कल्याणकारी योजनाओं को चलाया था भाजपा सरकार ने दूषित मानसिकता का परिचय देते हुए महिलाओं को मिलने वाली इन सभी जन कल्याणकारी योजनाओं को बंद कर दिया। हम अपने महिला सभा के संगठन को जिले से लेकर बूथ स्तर तक पूरी मजबूती के साथ भाजपा की जन विरोधी महिला विरोधी नीतियों को जनता के बीच में घर-घर लेकर जाएंगे और इस तानाशाही सरकार को उखाड़ फेंकने का काम करेंगे। विधायक डुमरियागंज सैय्यदा खातून ने कहा कि देश बहुत ही विषम परिस्थितियों के दौर से गुजर रहा है। आने वाला 2024 का चुनाव सरकार बनाने का नहीं बल्कि देश बचाने का चुनाव है। भाजपा सरकार ने जनता से जितने भी वादे किए थे वह सारे वादे एकदम झूठा एवं छलावा है। पूरे देश में अराजकता का माहौल है। महिलाओं पर उत्पीड़न की घटनाओं में बाढ़ सी आ गई है। महंगाई चरण सीमा पर है। हमारे नेता अखिलेश यादव जी ने कहा है कि समाजवादी सरकार बनते ही समाजवादी पेंशन फिर से शुरू कर दिया जाएगा जिसमें हर परिवार की महिला मुखिया को अब 3000 महीना समाजवादी पेंशन दिया जाएगा समाजवादी पार्टी सर्व समाज के साथ-साथ महिलाओं की सबसे बड़ी हितैषी है अब देश की आधी आबादी का प्रतिनिधित्व करने वाली महिलाएं जाग चुकी है। हमारी महिला सभा की जिला महासचिव स्वर्गीया शाहजहां बेगम जो इस दुनिया में नहीं है इसकी सूचना हमने राष्ट्रीय अध्यक्ष जी को दिया था राष्ट्रीय अध्यक्ष जी ने अपने नेता के निधन पर दुख व्यक्त करते हुए 50000 की आर्थिक सहायता का चेक मुझे दिया है जिसे हम लोगों ने उनके परिवार को दे दिया और आगे भी मदद करने का भरोसा दिलाया। और अंत में स्वर्गीया शाहजहां बेगम जी के निधन पर उनकी आत्मा को शांति के लिए 2 मिनट का मौन रखकर शोक संवेदना व्यक्त किया गया। संगठन समीक्षा बैठक में जिला अध्यक्ष लालजी यादव प्रदेश सचिव अजय चौधरी, विभा शुक्ला, बेचई यादव, नागेन्द्र नाथ चतुर्वेदी, अनूप यादव, बहरइची प्रसाद प्रेमी, अब्दुल कलाम सिद्दीकी, जुबैदा चौधरी, अनीता द्विवेदी, रुखसार बानो, रेशमा शाह, मोमिना खातून, सुधा त्रिपाठी, नूरजहां, विजय चौधरी, इरफान मिर्ज़ा, सूर्य प्रकाश उपाध्याय आदि मौजूद रहे।

डीएम ने किया विशेष संक्षिप्त पुनरीक्षण अन्तर्गत बूथों का निरीक्षण

अवधनामा संवाददाता

सिद्धार्थनगर। विधानसभा निर्वाचक नामावलियों के विशेष संक्षिप्त पुनरीक्षण अभियान के अन्तर्गत मॉडल प्राथमिक विद्यालय बूथ संख्या-10, 11, 12, कपिलवस्तु, प्राथमिक विद्यालय, नरकुल बूथ संख्या-19,20 तथा कम्पोजिट पूर्व माध्यमिक विद्यालय, नंदनगर बूथ संख्या-24, 25,26 विकास खण्ड-मिठवल का जिला निर्वाचन अधिकारी पवन अग्रवाल ने उपजिलाधिकारी नौगढ ललित कुमार मिश्र के साथ निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान जिला निर्वाचन अधिकारी पवन अग्रवाल द्वारा मतदाता सूची हेतु भरे गये फार्म-06, फार्म-07 एवं फार्म-08 को देखा गया। जिन लोगो को नाम मतदाता सूची में नही जुड़े है उनका नाम जोड़ने तथा मृतक हो गये हैं, उनका नाम हटाने का निर्देश दिया गया। जिलाधिकारी ने निर्देश दिया कि विशेषकर महिला मतदाता का नाम अधिक से अधिक जोड़े जिससे जेन्डर रेसियो को बढ़ाया जा सके।

एजुकेशनल एण्ड वेलफेयर सोसाइटी शैक्षिक सेमिनार का आयोजन

अवधनामा संवाददाता

- गुणवत्तापरक शिक्षा ही समाज व देश की उन्नति कर सकती है: शीतल

बांसी सिद्धार्थनगर। फोबल चिल्ड्रेन एकेडमी बांसी में मंत्रा एजुकेशनल एण्ड वेलफेयर सोसाइटी शैक्षिक सेमिनार का आयोजन किया। इस संस्था का मुख्य उद्देश्य समाज में शिक्षा को बढ़ावा देना है। इस सेमिनार मे संस्था की संस्थापक व अध्यक्ष शीतल सोनी ने अभिभावको को शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए जागरुक किया। उन्होंने कहा कि गुणवत्तापरक शिक्षा ही समाज व देश की उन्नति के पथपर लें जा सकती है। उन्होंने समाज में व्याप्त कुरीतियों, जातिवाद को मिटाने के लिए शिक्षा को बढ़ावा देना होगा। उन्होंने कहा कि शिक्षा केवल किताबों तक ही सीमित नहीं है बल्कि बच्चा किताबों से ज्यादा समाज से ही शिक्षा लेता है। जिसके लिए समाज का महौल अच्छा होना आवश्यक है, तभी बच्चे का अच्छे ढंग से विकास संभव है। कार्यक्रम को संस्था के सचिव रितेश गुप्ता तथा मोअसलम परवेज आलम, अवनीश श्रीवास्तव, पूनम गुप्ता, तुषार श्रीवास्तव, वंदना श्रीवातव, श्री घनश्याम श्रीवास्तव, हर्षित गुप्ता, प्रियान्शु गुप्ता आदि ने भी संबोधित किया। इस दौरान रिदिमा श्रीवास्तव, मान्या अग्रहरी अंशिका अग्रहरी, कृष्णा वर्मा, हर्षित गुप्ता, जय वर्मा, श्री वर्मा, नेहा राय, अन्नया सोनी, गौरव सोनी, अर्पित उपाध्याय, युवराज, प्रिन्सेज, अराध्या गुप्ता, शालिनी अग्रहरी, दिव्यज्योति, किशन वर्मा, देव गुप्ता आदि ने सांस्कृतिक कार्यक्रम पेश किया जिसे लोगों ने खूब सराहा। सेमिनार में समाज में फैली कुरीतियों को लेकर एक नाट्य प्रस्तुत किया गया जो बहुत ही प्रभावशाली रहा।

गंगा महोत्सव में उतारी गयी मां गंगा व यमुना की आरती

इटावा अवधनामा ब्यूरो। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के विचार मंच गंगा समग्र के तत्वाधान में से राष्ट्रीय गंगा दिवस और गंगा महोत्सव का आयोजन यमुना नदी के किनारे ग्यारह रूद्रीय घाट पर किया गया।अतिथि के रूप में संघ के सह विभाग संघ चालक इटावा विभाग विनोद चंद्र पांडेय,विभाग कार्यवाह प्रदीप सिंह भदौरिया और जिला कार्यवाह अखिलेश भदौरिया ने गंगा/यमुना आरती में प्रतिभाग किया। आरती कार्यक्रम में भारी संख्या में श्रद्धालु और गंगा समग्र के पदाधिकारी उपस्थित रहे।गंगा समग्र के यमुना भाग प्रमुख कानपुर प्रान्त अवनीन्द्र सिंह ने बताया कि इस अभियान के तहत 2 और 3 नवंबर को विभिन्न शैक्षणिक संस्थाओं में छात्रों के मध्य नदी बचाओ अभियान के तहत निवन्ध,चित्रकला और परिचर्चा करायी गयी थी जिसके तहत जिले के विद्यालयों यूपीएस कैलोखर,यूपीएस बलैयापुर,प्राथमिक विद्यालय जवाहरपुरा, यूपीएस मुसावली,यूपीएस बहेड़ा, यूपीएस अकबरपुर,यूपीएस बिलहड़ी, प्ले वे उच्चतर माध्यमिक विद्यालय,कंपोजिट विद्यालय प्रतापनेर,जनता इंटर कॉलेज पूठन सकरौली और शिव नारायण इंटर कॉलेज में निवन्ध प्रतियोगिता और परिचर्चा का आयोजन किया गया जिसमें लगभग 500 छात्रों ने प्रतिभाग किया है सभी विजयी छात्रों को अलग से सम्मानित किया जाएगा।विभाग संघ चालक विनोद पांडेय ने इस अभियान को जन आंदोलन बनाने और यमुना नदी की धारा को घाट की तरफ मोड़ने के लिए आवश्यक प्रयास के लिए लोगों से आवाहन किया है।गंगा महोत्सव आयोजन और प्रतियोगिता में गंगा समग्र के सह संयोजक प्रांजल दुबे,एडवोकेट अभिनेन्द्र सिंह,शैक्षिक आयाम प्रमुख आदित्य शर्मा,आयाम प्रमुख मुकेश त्रिपाठी,स्मृति सिंह,राजीव चौहान,मुकेश बाबू,अनूप दीक्षित,अवधेश सिंह,शैक्षिक संस्थाओं के प्रमुख पंकज चौहान,राजेश राजावत,अर्चना दुबे,विनीत चौहान ने सहयोग किया।

विक्रेता संविदाकार सम्मेलन का एनटीपीसी में हुआ आयोजन

अवधनामा संवाददाता

अम्बेडकरनगर। एनटीपीसी लिमिटेड की टाण्डा सुपर थर्मल पावर स्टेशन के कर्मचारी विकास केन्द्र में सतर्कता जागरूकता सप्ताह के दौरान सतर्कता विभाग के संयोजन से संविदाकार सम्मेलन-2023 का आयोजन किया गया।

सम्मेलन का शुभारम्भ मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित विद्युत गृह के मुख्य महाप्रबंधक बी.सी.पलेइ ने किया। कार्यक्रम में आलोक शर्मा, उप प्रबंधक (संविदा) ने सरकारी ई-बाजार (जेम पोर्टल) के बारे में एक प्रस्तुति की। तत्पश्चात वरि0प्रबंधक (सतर्कता) अनिरुद्ध सूद ने लोकहित प्रकटीकरण और मुखबिर संरक्षण संकल्प (पी.आई.डी.पी.आई) विषय पर एक व्याख्यात्मक प्रस्तुति दी।बैठक के दौरान श्री पलेइ ने वेण्डरों को संबोधित करते हुए क्रय विक्रय प्रणाली की नई तकनीक से अवगत कराया। इस दौरान खरीद/आपूर्ति प्रक्रिया में सतत् सुधार पर विचार-विमर्श के साथ ही व्यावसायिक एजेंसियों के अधिकारियों/प्रतिनिधियों के साथ द्विपक्षीय संवाद कायम करते हुये संविदा एजेंसियों के सुझाव प्राप्त करने के साथ ही उनके सुझावों एवं व्यवसाय के दौरान आने वाली कठिनाइयों पर विचार-विमर्श किया गया।

इस अवसर पर संविदाकारों ने व्यवसाय से सम्बन्धित कई सवाल उठाये, जिसका एनटीपीसी टांडा प्रबन्धन द्वारा सुचारू रूप से प्रत्युत्तर दिया गया। इस अवसर पर विद्युत गृह के महाप्रबंधक (प्रचालन एवं अनुरक्षण) नील कुमार शर्मा महाप्रबंधक (चिकित्सा सेवाएं) डा उदयन तिवारी, महाप्रबंधक (परियोजना) अतुल गुप्ता, महाप्रबंधक (प्रचालन) अभय कुमार मिश्रा, अपर महाप्रबन्धक (संविदा एवं सामग्री) जे.पी. सिंह, उप महाप्रबंधक (वित्त) विजय कुमार चैहान, विभागाध्यक्षगण एवं अन्य संविदाकार उपस्थित थे।इसके पूर्व कार्यक्रम की रूपरेखा वरि. प्रबंधक (सतर्कता) अनिरुद्ध सूद ने प्रस्तुत की।

खुनुवा, कस्टम व एसएसबी के जवानो ने निकाली प्रदूषण जागरूकता रैली

अवधनामा संवाददाता

शोहरतगढ सिद्धार्थनगर। 43वी वाहिनी एस.एस.बी के सीमा चौकी खुनवा के जवानों ने व खुनुवा पुलिस और कस्टम विभाग के साथ प्रदूषण जागरूकता रैली निकाली गयी। रविवार को 43वी वाहिनी सशस्त्र सीमा बल की सीमा चौकी खुनुवा के जवानों ने व पुलिस चौकी खुनवा और कस्टम कार्यालय, खुनवा के अधिकारी/कर्मियों के साथ खुनुवा बाजार में रैली के माध्यम से ग्रामीणों को पटाखे, फुलझड़ी न जलाने और पर्यावरण को प्रदूषण मुक्त रखने हेतु जागरूक किया। जानकारी देते हुए शक्ति सिंह, कमांडिंग अधिकारी, 43वी वाहिनी सशस्त्र सीमा बल, सिद्धार्थनगर ने बताया कि प्रदूषण के कारण लोगों का जीवन प्रभावित हो रहा है। जिसके कारण आज के समय में अपने पर्यावरण को स्वच्छ रखना हम सबके लिए एक चुनौती पूर्ण लक्ष्य है। इसलिए हमारा का कर्तव्य है कि हम अपने समाज के लोगों को जागरूक करें तथा प्रदूषण मुक्त भारत के निर्माण में अपना योगदान दे। इसी उद्देश्य से सीमा चौकी खुनवा के निरीक्षक के.पी.एम. बैंजीनाथन के नेतृत्व में खुनुवा बाजार में रैली निकालकर ग्रामीणों को प्रदूषण के दुष्प्रभाव से अवगत कराते हुए दिवाली में पटाखे और फुलझड़ी न जलाने हेतु जागरूक किया गया।

हर कॉलेज से स्पोर्ट्स में निकलें लड़कियां

सम्राट अशोक प्रभावंश इण्टर कालेज में सम्मानित की गई राष्ट्रीय खिलाड़ी हिना खातून

अवधनामा संवाददाता

- राष्ट्रीय खिलाड़ी हिना ने सुनाया अपने संघर्षों की दास्तान, भावुक हुई सैकड़ों छात्रायें

बस्ती। बनकटी स्थित सम्राट अशोक प्रभावंश बालिका इण्टर कालेज में आयोजित एक समारोह में राष्ट्रीय खिलाड़ी एवं हैण्डबाल कोच हिना खातून तथा स्पोर्टस के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान दे रही स्वाती गौड़ को प्रतीक चिन्ह, अंग वस्त्र व प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। कालेज के प्रबंधक डा. अनिल कुमार मौर्य, प्रधानाचार्या श्रीमती नीलम मौर्य तथा डा. अनीता मौर्य ने कहा इन महिला खिलाड़ियों को सम्मानित करते हुये गर्व का अनुभव हो रहा है।

हिना खातून ने अपने सम्बोधन में बचपन से लेकर अभी तक किये गये संघर्षों और कामयाबियों पर विस्तार से प्रकाश डाला तो छात्रायें और विद्यालय परिवार भावुक हो गया। हिना ने बताया कि बेटे के इंतजार में पिता ने 7 बेटियां पैदा की। सातवीं वह खुद थी। आखिरकार पिता ने मजबूर होकर दूसरी शादी कर ली। मां मायके में रहने लगी। वहां की भी स्थिति बहुत अच्छी नही थी। लेकिन मां ने हिम्मत की ठेला लगाया, मेहनत कर पढ़ाया लिखाया और आज यहां तक पहुंची हूं तो इसका सबसे बड़ा कारण मां है। हिना की मानें तो जब उसमे खेल प्रतिभा दिखने लगी तो समाज के अच्छे लोग और स्थानीय प्रशासन आगे आया, भरपूर मदद की और आज बलरामपुर स्टेडियम में बतौर कोच अपने सेवायें दे रही है।

हिना ने कालेज की छात्राओं को प्रेरित करते हुये कहा यह उसकी मंजिल नही है। यह मात्र एक पड़ाव है, समाज को उससे बड़ी उम्मीदें हैं और परिवार के लिये भी बहुत कुछ करना है। हिना ने कहा अपने सहयोगियों को निराश नही होने दूंगी। इससे बेहतर मुकाम पाने के लिये लगातार प्रयासरत हूं। समारोह को वरिष्ठ पत्रकार अशोक श्रीवास्तव, स्वाती गौड़, डा. अनीता मौर्य, श्रीमती नीलम मौर्य आदि ने भी सम्बोधित किया। कार्यक्रम का संचालन अध्यापिका शहनुमा अंजुम ने किया। इस अवसर पर कालेज के संस्थापक राज्य पुरस्कार से सम्मानित वंशराज मौर्य, काशी प्रसाद पाण्डेय, मनु मिश्राए मो. आरिफ, आनंद शुक्ला, अमृता गौतम, अंकिता अग्रहरि, श्रेया पाण्डेय, शिखा पाण्डेय, श्रीमती श्रंखला पाल, ज्योति पाल, विजय कुमार यादव, वर्षा दूबे, सुनील कुशवाहा, सरस्वती, कृपाशंकर कुशवाहा व कालेज की छात्रायें मौजूद रहीं।

अंशुमान सिंह ने कपड़े की दुकान का किया उद्घाटन

अवधनामा संवाददाता

अंबेडकरनगर। जनपद के तहसील जलालपुर स्थित हजपुरा बाजार में रौनक गारमेंट के दुकान का मुख्य अतिथि भारती जनता पार्टी जलालपुर विधान सभा क्षेत्र के वरिष्ठ नेता ने फिता काट कर उद्घाटन किया। साथ ही मुख्य अतिथि दने कहा इस दुकान के खुलने से हजपुरा क्षेत्र की जनता अब अपनी जरूरत यहीं से पूर्ण कर लेगी उन्हे अब इंटिरियर्स डिकोर के लिए कई किलों मिटर जाने की जरूरत नही पढ़ेगी।

वहीं दुकान के संचालक विकास गुप्ता को बधाई भी दिए। वही इस मौके पर दीपक सिंह,विजय सिंह,किछौछा चेयर मैंन ओंकार गुप्ता, अंकित अग्रहरि, विवेक शाहू,अंबेडकर नगर संयुक्त व्यापार मण्डल अध्यक्ष प्रदीप कुमार गुप्ता,घनश्याम राजभर,पवन कुमार, पिंटू गुप्ता, गजेंद्र गुप्ता, संध्या सिंह सहित बाजार के समस्त लोग मौजूद रहे।

इतना घातक है वायु प्रदूषण

वायु प्रदूषण से डायबिटीज (मधुमेह) का खतरा 22 फीसदी बढ़ रहा है। यह दिल्ली और चेन्नई के करीब 12,000 लोगों पर किए गए प्रयोग और शोध का निष्कर्ष है। अध्ययन के शोधकर्ताओं में शामिल मद्रास डायबिटीज रिसर्च फाउंडेशन के अध्यक्ष डॉ. वी. मोहन के अनुसार, यह अध्ययन आंखें खोल देने वाला है, क्योंकि अब मधुमेह के कारणों का एक नया आयाम खुल गया है। उनके मुताबिक, प्रदूषण के पीएम 2.5 में सल्फेट, नाइट्रेट, भारी धातुओं और कार्बन के सूक्ष्म कण होते हैं, जो रक्त-वाहिकाओं की परत को नुकसान पहुंचा सकते हैं। धमनियों को सख्त करके रक्तचाप बढ़ा सकते हैं। ये कण वसा-कोशिकाओं में जमा हो सकते हैं। सूजन पैदा कर सकते हैं और सीधे हृदय की मांसपेशियों पर भी हमला कर सकते हैं। बढ़ते वायु प्रदूषण के कारण शहरी भारत में गर्भ के दौरान भी डायबिटीज के मामले सामने आए हैं। एक और चिकित्सीय शोध किया गया है, जिसका निष्कर्ष है कि प्रदूषित हवा से 56 फीसदी तक पार्किन्सन का रोग बढ़ जाता है। यह शोध एक अमरीकी संस्था ने किया है। यह अध्ययन करीब 90,000 रोगियों पर किया गया है। इस बीमारी में हाथ-पैर तो कांपने ही लगते हैं, लेकिन मस्तिष्क पर भी प्रभाव पड़ते हैं। आदमी लडखड़ाने लगता है, सुनने की शक्ति क्षीण हो जाती है। भारत में फिलहाल पार्किन्सन की बीमारी प्रति एक लाख में 0.5 लोगों को ही है, लेकिन विशेषज्ञों का मानना है कि अगले 10 साल में यह संख्या 25 फीसदी से अधिक बढ़ सकती है।

चूंकि राजधानी दिल्ली देश का सबसे प्रदूषित शहर है, लिहाजा यहां के बाशिंदों की उम्र, वायु प्रदूषण के कारण ही, औसतन 11.9 वर्ष घट जाती है। यानी इतने साल पहले मौत दिल्लीवालों की दहलीज पर आ जाती है। यह अध्ययन भी किया गया है। दिल्ली में आजकल वायु गुणवत्ता सूचकांक 400 को छूने वाला है, जो एक गंभीर स्थिति है। सामान्य प्रदूषण 100 तक झेला जा सकता है। उसके बाद खतरनाक और फिर गंभीर स्थिति आती है। दो-तीन दिन पहले दिल्ली विश्वविद्यालय के एक कॉलेज के आसपास का वायु गुणवत्ता सूचकांक 999 दर्ज किया गया, जो किसी गैस चैंबर से भी भयावह है। दिल्ली ऐसा महानगर है, जहां देश के राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, संसद और सर्वोच्च अदालत हैं। विदेशों के दूतावास और राजनयिक भी हैं। दिल्ली भारत का हृदय है और यहीं प्रदूषण की जानलेवा समस्या हर साल उभरती है और तीन माह तक राजधानी प्रदूषण की परत में घिरी रहती है। दिल्ली की स्थानीय सरकार आम आदमी पार्टी (आप) के प्रशासन में है।

अरविंद केजरीवाल मुख्यमंत्री हैं। जब तक पंजाब में 'आप' सत्तारूढ़ नहीं हुई थी, तब तक पराली जलाने के मुद्दे पर खूब प्रलाप किया जाता था। पंजाब में 'आप' सरकार के करीब पौने दो साल के कार्यकाल के बावजूद पराली जलाने के हजारों मामले आज भी आ रहे हैं। पराली पंजाब में ही नहीं, हरियाणा में भी खूब जलाई जाती है, क्योंकि हरियाणा भी बुनियादी तौर पर कृषि प्रधान राज्य है। पराली जलाने का धुआं हवा के साथ उड़ कर दिल्ली तक पहुंचता है और यहां हवा जहरीली होने लगती है। राजधानी के आसपास के इलाके भी प्रदूषित होने लगते हैं। आश्चर्य है कि अदालतों ने बार-बार सरकारों को फटकार लगाई है, सवाल पूछे हैं, लेकिन हर साल हवा जहरीली ही रहती है। न्यायाधीश भी वही प्रदूषित वायु कुछ न कुछ झेलते ही होंगे। सरकार के हुक्मरानों को दंडित क्यों नहीं किया जा सकता? प्रदूषण का प्रभाव इतना गहरा और घातक होता है कि मानवीय फेफड़े काले हो जाते हैं। बहरहाल प्रदूषण का एक अकेला कारण कुछ भी नहीं है और न ही केजरीवाल का अकेला दायित्व है। भारत सरकार भी इसका स्थायी हल ढूंढे।

एक राजकुमारी, एक खिलाड़ी!

के. विक्रम राव

स्पेन के सोशलिस्ट गद् गद् हैं। प्रमुदित भी। कारण? उनके देश की 18-वर्षीया राजकुमारी लियोनोर एक आम आदमी, फुटबॉलर से प्रेम विवाह कर रही हैं। समतामूलक प्रयास है। समाजवाद का मतलब यही है। सर्वाधिक खुशी सोशलिस्ट प्रधानमंत्री पेड्रो सांचेज को है। वे सोशलिस्ट इंटर्नेशनल के अध्यक्ष भी हैं। बिना बाइबिल थामे सांचेज़ ने पद की शपथ (जून 2018) ली थी। ईसाई राष्ट्र में सेक्युलर रीति से। राजशाही वाले स्पेन की अगली महारानी होंगी लियोनोर! खिलाड़ी हो जाएगा राजाध्यक्ष। तो स्पेन साम्राज्य की यह सर्वाधिक महत्वपूर्ण खबर सार्वजनिक कैसे हो गई?

राजकुमारी लियोनोर के पिता सम्राट फिलिप अष्टम गत दिनों दोहा (कतर) में थे। वहां गए थे स्पेन के फुटबॉल टीम को उत्साहित करने। स्पेन ने कोस्टा रिका को सात गोल से हरा दिया था। सम्राट तब ड्रेसिंग रूम में गए अपने विजेताओं को बधाई देने। वहां एक जर्सी मिली। उस पर फुटबॉलर गावी, आयु 19 वर्ष, के हस्ताक्षर थे। सम्राट ने पाया कि वह शर्ट छोटे साइज की थी। अर्थात उनके लिए माफिक उपहार नहीं हो सकती थी। पता चला कि गावी ने राजकुमारी के लिए दिया है। दास्तान-ए-मुहब्बत का अंदाज तभी हो गया। खेल की भावना से वे आप्लावित हो गए। बादशाह ने विवाह की सहमति भी दे दी। सामाजिक पत्रिका सोशललाइव ने प्रेम गाथा की पूरी रपट प्रकाशित की। हालांकि इसके पूर्व पितामह सम्राट जुआन कार्लोस प्रथम की पुत्री इंफांता क्रिस्टीना का इश्क भी खिलाड़ी इनाकी उर्दगरीन लाइवर्ट से हुआ था। दोनों ने शादी कर ली थी। मगर लियोनोर को स्पेन में जनसमर्थन इसलिए भी मिल रहा है क्योंकि उनकी मां भी एक सामान्य नागरिक थीं। पत्रकार थीं। उन्होंने सम्राट कार्लोस के पुत्र और वर्तमान बादशाह फिलिप से शादी की। महारानी बनीं। यह महिला एक मध्यम वर्गीय परिवार की थी, नाम है लेटिजिया। सीएनएन और टेलीविज़न एस्पनोला में समाचार एंकर थीं। एबीसी और ईएफई के लिए भी काम किया। उन्होंने पहले अलोंसो ग्युरेरो पेरेज़ से 1998 में शादी की। उनसे अगले वर्ष तलाक ले लिया। फिर लेटिजिया ने राजा जुआन कार्लोस प्रथम के बेटे और उत्तराधिकारी राजकुमार फेलिप से 2004 में शादी कर ली थी। राजकुमारी लियोनोर उन्हीं की पुत्री है। महारानी लेटिजिया के पिता जोस अल्बारेज भी पत्रकार थे। उनकी पत्नी अस्पताल में नर्स थीं। ऑर्टिज़ ने दैनिक समाचार पत्र ला नुएवा एस्पाना और बाद में संवाद एबीसी और राष्ट्रीय समाचार एजेंसी ईएफई के लिए काम किया। जब राजकुमारी लियोनोर की माता की सगाई जब (1 नवंबर 2003) को सम्राट फिलिप के साथ घोषित हुई थी तो आमजन को अचरज होना स्वाभाविक ही था। एक तलाकशुदा पत्रकार को महारानी बनाया जा रहा था। फिलिप उन्हें सफेद सोने की सजावट के साथ 16 बैगुएट हीरे की सगाई की अंगूठी के साथ प्रस्ताव दिया था। उन्होंने इस अवसर को उन्हें सफेद सोना और नीलमणि कफ़लिंक और एक क्लासिक किताब दिया। राजकुमारी लियोनोर की मीडिया इसलिए तारीफ कर रहा है क्योंकि अन्य राजपरिवारजनों की भांति उनके खिलाफ कोई वित्तीय अथवा सामाजिक लांछन नहीं रहा। सोशल मीडिया के जमाने में राजकुमारी को कभी भी किसी विवादित विषय में पड़ते नहीं देखा गया। लियोनोर जब पढ़ाई कर रही थीं तो भी काफी संतुलित थीं। उनकी लोकप्रियता इतनी ज्यादा है कि होला मैगजीन के सर्वे में सिर्फ 21 फीसदी स्पेनिश नागरिक ही मानते हैं कि अभी वह देश के मुखिया के तौर पर अपने कर्तव्य के लिए तैयार नहीं हैं। लियोनोर के निजी जीवन या वह अपने खाली समय में क्या करना पसंद करती हैं? इसके बारे में बहुत कम जानकारी है। हालांकि राष्ट्रीय क्षेत्र में उनकी ख्याति बढ़ गई है। अब चर्चा हो दूल्हेराजा की। गावी (पूरा नाम पाल्बो मार्टिन पेज गाविरा) का जन्म 5 अगस्त 2004 को हुआ। वे बस एक ही साल बड़े हैं राजकुमारी से। गावी जब मात्र ग्यारह साल के थे, तभी से बार्सिलोना क्लब की टीम में शामिल हो गए थे।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक व सम्पादक तकदीस फ़ातिमा रिज़वी ने ग्रुप-5 प्रकाशन, 55-बी, वज़ीर हसन रोड, लखनऊ से मुद्रित कराकर प्रथम तल, मस्जिद नूर महल, साकेत पल्ली, नरही, लखनऊ से प्रकाशित किया।

किसी भी लेख में कोई विवाद के लिए 'अवधनामा' जिम्मेदार नहीं होगा, इसकी जिम्मेदारी लेखक की है। किसी भी समाचार के विवाद के लिए न्याय क्षेत्र लखनऊ ही होगा।

पोलिटिकल एडीटर : एम.एम. मोहसिन

स्थानीय संपादक

मोहम्मद आलम रिज़वी

RNI No UPHIN/2010/31173

टेली फैक्स नं. : 2288091, 4065716

avadhnamahindi@gmail.com,

सोशल मीडिया किशोर पीढ़ी को यह सोचने पर मजबूर करता है कि उनके पास विकल्प नहीं हैं और उन्हें उनके साथ हो रही सभी चीजों को स्वीकार करके उनसे तालमेल बिठा लेना चाहिए। लेकिन, हर चीज इसी तरह से काम नहीं करती। हमारे आसपास कोई भी चीज आदर्श नहीं है और ना ही सोशल मीडिया का तिलिस्मी संस्कार। एक तरह से सोशल मीडिया एक नशा है, एक अभिशाप है, जिसने जीवन के सौन्दर्य को खंडित किया है। जीवन में चमकपूर्ण उदासी एवं तनाव को बिखेरा है। इसके कारण कभी लोग छूट जाते हैं तो कभी वस्तुएं।

रिश्तों की अंधी दुनिया में गुम होती किशोर पीढ़ी

ललित गर्ग

सोशल मीडिया, मोबाइल एवं संचार-क्रांति से दुनिया तो सिमटती जा रही लेकिन रिश्तों में फासले बढ़ते जा रहे हैं। भौतिक परिवर्तनों, प्रगति के आधुनिक संसाधनों एवं तथाकथित नये जीवन का क्रांतिकारी दौर हावी हैं। लेकिन हम सामाजिक-पारिवारिक-सांस्कृतिक प्रभावों के प्रति उतने सजग नहीं है जितना बदलावों की आंधी के दौर में होना चाहिए। मोबाइल ने छीन रखा है सबका सुकून, जीवन का आनन्द एवं शांत एवं संतुलित जीवन का स्रोत। व्हाट्सअप, फेसबुक, इंस्टाग्राम ने चला रखा है अजीब जादू? हाथ मैं मोबाइल, सामने लगा रहे टीवी- बस यहीं बन चुकी है सबकी जिन्दगी। आज किसी भी घर के वातायन में झांककर देख लें-दुःख, चिन्ता, कलह, ईर्ष्या, घृणा, उन्मुक्तता, पक्षपात, विरोध, विद्रोह एवं रुखापन के साये चलते हुए दीखेंगे। अपनों के बीच भी परायेपन का अहसास पसरा हुआ। बड़ी चुनौतीपूर्ण स्थिति है, खुद पर तरस खाओ, रिश्तों को सम्भालों वरना अकेले रह जाओगे, जिन्दगी भर पछताओगे। ऐसे ही एक अभिभावक के लिये पछतावे की स्थिति तब बनी जब उन्होंने अपनी किशोरी को स्मार्ट फोन दिलाया। पिता ने सोचा था कि मोबाइल से पढ़ाई में सहायता होगी। जब उन्होंने देखा कि बेटी पढ़ाई के बजाय अक्सर किसी अजनबी युवक से बात करती है तो टोका। यह बात किशोरी को इतनी नागवार गुजरी कि वह शिकायत लेकर बुधवार को थाने पहुंच गई। माता-पिता की डांट फटकार से नाराज कोई बच्चा यदि थाने पहुंचता है तो इसे बाल अधिकारों के प्रति उसकी जागरूकता से जोड़कर देखा जाता है, लेकिन लखनऊ की यह किशोरी जिस शिकायत का लेकर थाने पहुंच गई वह अनेक चिंताजनक सवाल खड़े करता है एवं नये बनते सामाजिक सोच की परते उधेड़ता है। बालिका का तर्क है कि माता-पिता मेरी जिंदगी में क्यों दखल दे रहे हैं।

हमारे अनुभव हमारी सोच को गहरे प्रभावित करते हैं। हमारे मूल्य और आदर्श भी इससे प्रभावित होते हैं। नित नए अनुभव हमारे नजरिए में बदलाव करते रहते हैं। अगर निरपेक्ष होकर देखें तो पाएंगे कि कुछ सालों पहले आप जैसे थे, आपकी पारिवारिक दुनिया जितनी खुशनुमा थी, आज उतनी नहीं है। हम अपने स्व को भूल रहे हैं, अपनी संस्कृति एवं पारिवारिक संरचना से दूर होते जा रहे हैं। अपने सिद्धांतों और आदर्शों से समझौता करने लगे हैं। अजीब हालात है कि दूसरों की खबर लेने का वक्त है पर अपनों की होश नहीं। दुनियाभर के दोस्तों से दुआ सलाम सब हो रहा, लेकिन अपने से दूरियां बढ़ती जा रही है। अपनों को पराया और पराया को अपना कर रहे देखिए किस तरह सब हो रहे। साथ होकर भी साथ नहीं, अपनों के लिए वक्त नहीं। तनहा हो गए सब एक ही घर में। साथ अपना होकर भी बाहर सब साथी ढूँढ रहे हैं। न सीमाएं है, न संस्कार, न मर्यादा। उच्छृंखलता एवं उन्मुक्तता इस कदर हावी है कि माता-पिता का किसी गलत बात

पर डांटना भी बच्चों के लिये अपराध जैसा हो गया है, तभी इसकी शिकायत यानी अपने माता-पिता को ही पुलिस थाने पहुंचा दिया गया और वह भी एक बालिका के द्वारा। प्रश्न है कि किशोर-किशोरियां में अपने माता-पिता के प्रति इस तरह के भाव-विचार-विद्रोह क्यों पैदा हो रहे हैं। बच्चों व अभिभावकों के बीच दूरियां क्यों बढ़ रही है? जवाब हर परिस्थिति में अलग-अलग हो सकते हैं, लेकिन समग्रता का सार यह है कि किसी बच्चे के सकारात्मक विकास के लिए परिवार, पड़ोस और विद्यालय से जो संस्कार मिलने चाहिए, वे नहीं मिल रहे हैं। बल्कि अपसंस्कृति एवं विकारों के प्रति चेतना का भी ह्रास हो रहा है। वास्तव में आज मोबाइल फोन महत्वपूर्ण हैं, लेकिन इसके उपयोग को लेकर हमें बच्चों को सतर्क करना होगा। बच्चों को फोन दिलाना यदि जरूरत है तो इसके अच्छे-बुरे का संस्कार देना कर्तव्य। वह जिम्मेदारी परिवार, पड़ोस और विद्यालय की सामूहिक है।

माता-पिता इनदिनों सोशल मीडिया पर बह रही रिश्तों की अंधी दुनिया से ज्यादा चिन्तीत एवं परेशान है। क्योंकि वहां पर दिखने वाले खुशनुमा चेहरे वास्तविक जिंदगी में शायद ही उतने खुशनुमा होते हैं। लेकिन किशोर पीढ़ी तस्वीरों को ही सच मानकर खुद को उनमें संलिप्त कर लेती हैं। यह सम्पूर्ण पीढ़ी सच का सामना ही नहीं करना चाहती। दरअसल, सोशल मीडिया की दृष्टि से जब किशोर बड़े हो रहे होते हैं तो उन्हें झूठ से भरी चीजों पर यकीन करना सिखाया जाता है, अपने संस्कृति, अपनी परम्परा एवं अपनी जीवनशैली से एक षडयंत्र के तहत दूर करने की इन कुचेष्ठाओं के प्रति सचेत करना नितान्त अपेक्षित है, भले ही कोई किशोरी पुलिस का डर दिखाये। सोशल मीडिया किशोर पीढ़ी को यह सोचने पर मजबूर करता है कि उनके पास विकल्प नहीं हैं और उन्हें उनके साथ हो रही सभी चीजों को स्वीकार करके उनसे तालमेल बिठा लेना चाहिए। लेकिन, हर चीज इसी तरह से काम नहीं करती। हमारे आसपास कोई भी चीज आदर्श नहीं है और ना ही सोशल मीडिया का तिलिस्मी संस्कार। एक तरह से सोशल मीडिया एक नशा है, एक अभिशाप है, जिसने जीवन के सौन्दर्य को खंडित किया है। जीवन में चमकपूर्ण उदासी एवं तनाव को बिखेरा है। इसके कारण कभी लोग छूट जाते हैं तो कभी वस्तुएं। खुद को संभाले रखना जटिल होता जा रहा है। समझ नहीं आता, करें तो क्या?

पिछले एक दशक में सोशल नेटवर्किंग साइट्स एवं स्मार्ट फोन की लोकप्रियता जबरदस्त बढ़ रही हैं तो जिन्दगी में जहर भी घोल रही है, दुनिया छोटी होती गयी है और पारिवारिक रिश्तों में दूरियां बढ़ती गयी है। लोग अपने जिंदगी के हर पहलू पर अपने लोगों की नहीं पराये लोगों की राय, उनकी पसंद और उनकी रूचि जानना चाहते हैं। वीडियो, संदेश, पिक्चर्स, रिकार्डेड आवाज के जरिए ज्यादा से ज्यादा लोग आपस में जुड़े हैं। परंतु क्या इस बात से आप भी सहमत हैं कि इस जुड़ाव में न तो विश्वास है, न अपनापन है, न आत्मीयता है और न ही असली रूचि, न ही रिश्तों की गर्माहट, बल्कि भौतिक चकाचौंध, प्रतिस्पर्धा और जलन अधिक है? शुरुआत में नई उम्र के लोग सोशल मीडिया से जुड़े और धीरे-धीरे बड़ी उम्र के लोग भी इससे जुड़ते गए, अब महिलाएं भी बड़ी संख्या में जुड़ चुकी है। मजाक में कहा जाता है कि पूरे परिवार को एक साथ बातचीत के लिए इकट्ठा करना हो तो वाई फाई थोड़ी देर के लिए बंद कर दो।

सोशल मीडिया एवं स्मार्ट फोन एक ऐसी दुनिया से लोगों को जोड़ रहा है जो नजर से बहुत दूर हैं और उन अपनों से भी दूर कर रहा है जो नजर के सामने हैं। रिश्तों की हो या फिर चीजों की पोटली, इसमें ज्यादातर गैरजरूरी चीजें ही भरने का प्रचलन चल रहा है। अपनी जरूरतों का सामान जोड़ना और उन्हें अपने साथ रखना जरूरी है, पर कुछ भी लिए रहना या किसी भी तरह के रिश्तों को ढोते रहना हमें थका देता है, परेशानी एवं संकट में डाल देता है। जरूरी कामों को किनारे कर कई बार जिंदगी को मुश्किल बना देता है। जबकि आत्मीय एवं पारिवारिक रिश्तों के बल पर हम अंधेरों में भी रोशनी ढूंढ़ लेने में समर्थ होते रहे हैं। बाधाओं के बीच विवेक जगा लेते थे, ऐसे घरों एवं दायरों में कहीं घर में मंदिर बनता रहा है तो कहीं घर ही मन्दिर बन जाता था।

प्रदूषण रोकने को जमीन से आक्सीजन क्यों नहीं उगाते?

आक्सीजन उगाने का प्रयोग उत्तर प्रदेश के बिजनौर जिले में एक भागीरथ ने शुरू किया। पिछले तीन साल में बिजनौर में इतनी आक्सीजन उगा दी कि आने वाली सन्तति भी उसका लाभ उठाएंगी। कोरोना काल में आक्सीजन की कमी को लेकर मारामारी मची थी। पूरी दुनिया आक्सीजन के लिए परेशान थी। आक्सीजन सिलेंडर पर भारी ब्लैक था।

अशोक मधुप

दिल्ली एनसीआर समेत 30 के आसपास नगर आज बुरी तरह प्रदूषण की चपेट में हैं। बृहस्पतिवार के आंकडों के अनुसार दिल्ली की हवा काफी जहरीली हो गई है। इंडिया गेट, अक्षरधाम, रोहिणी, आनंद विहार समेत 13 इलाकों में एयर क्वालिटी इंडेक्स (एक्यूआई) 400 के ऊपर दर्ज किया गया। एक्यूआई 300 से ऊपर की रेंज बेहद खतरनाक कैटेगरी में मानी जाती है।हवा की क्वालिटी खराब होने पर कमीशन फॉर एयर क्वॉलिटी मैनेजमेंट (CAQM) ने दिल्ली-एनसीआर में में ग्रेडेड रिस्पांस एक्शन प्लान (GRAP) के थर्ड स्टेज को लागू कर दिया। GRAP का स्टेज III तब लागू किया जाता है जब एक्यूआई 401-450 की सीमा में गंभीर हो जाता है।इसके चलते गैर-जरूरी निर्माण-तोड़फोड़ और रेस्टोरेंट में कोयले के इस्तेमाल पर रोक लगा दी गई है। बीएस-3 पेट्रोल और बीएस-4डीजल चार पहिया वाहनों के इस्तेमाल पर सरकार ने 20 हजार रुपए चालान काटने का निर्देश दिया है। मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने पांचवीं क्लास तक के सभी सरकारी और प्राइवेट स्कूलों को शुक्रवार और शनिवार के लिए बंद करने का आदेश दिया है। दिल्ली में प्रदूषण पर अपोलो हॉस्पिटल के डॉ. निखिल मोदी ने लोगों को मास्क पहनने की सलाह दी है।प्रदूषण के कारण दिल्ली-एनसीआर में रहने वालों की अस्थमा जैसी बीमारी विकसित हो रही हैं। प्रदूषण बढ़ने से यहां रहने वालों की आयु कम हो रही है। सासें कम हो रही हैं। हालत अन्य घनी आबादी वाले महानगरों की होती जा रही है। जाड़े शुरू होते ही सांसों पर संकट आ जाता है। दिल्ली एनसीआर में सरकारी स्तर के प्रयास असफल होते देख हर वर्ष सर्वोच्च न्यायालय को दखल देना पड़ता है। सर्वोच्च न्यायालय प्रदेश सरकारों से प्रदूषणा रोकने के किए जा रहे उपाए पूछता है। प्रदेश सरकार उपाय के नाम पर की गई खानापूरी से अवगत करा देती हैं। मामला अगले साल के लिए टल जाता है। अगले साल शीत का मौसम आते ही फिर प्रदूषण की समस्या खड़ी हो जाती है।प्रदूषण की इस समस्या के स्थाई निदान के प्रयास क्यों नही होतें? प्रदूषण वाले क्षेत्र में आक्सीजन क्यों नही उगाई जाती। क्यों नहीं सांसों के लिए जमीन से आक्सीजन उगाने के प्रवंध होते। प्रदूषण दूर करने के हमारे प्रयास कृत्रिम होते हैं। प्रकृति प्रदत्त संसाधन बढ़ाने की ओर हमारा ध्यान क्यों नहीं? इसके लिए हम अभियान क्यों नही चलाते?

आक्सीजन उगाने का प्रयोग उत्तर प्रदेश के बिजनौर जिले में एक भागीरथ ने शुरू किया। पिछले तीन साल में बिजनौर में इतनी आक्सीजन उगा दी कि आने वाली सन्तति भी उसका लाभ उठाएंगी। कोरोना काल में आक्सीजन की कमी को लेकर मारामारी मची थी। पूरी दुनिया आक्सीजन के लिए परेशान थी।आक्सीजन सिलेंडर पर भारी ब्लैक था। एक -एक सिलेंडर के लिए हाय- तौबा मची थी, तब उत्तर प्रदेश के

राजस्व विभाग में कार्यरत बिजनौर नगर के विक्रांत शर्मा के मस्तिष्क में जमीन से आक्सीजन उगाने का विचार आया। आइडिया आया कि आज इंसान की सांसों का संकट है। सांसों के लिए आक्सीजन चाहिए। आक्सीजन को मशीन से पैदा करने की जगह जमीन से क्यों न पैदा किया जाए। इसके लिए उन्होंने पढ़ा और सोचा कि शहर के आसपास ऐसे वृक्ष लगाए जाएं जो 24 घंटे आक्सीजन देतें हो। बस वह इस भगीरथ अभियान में लग गए।कोरोना काल में जब लोग घरों में बंद थे। वे अपने बेटे को लेकर सवेरे रेलवे लाइन और सड़क से निकल जाते। यहां उन्हें पीपल, बरगद, नीम आदि के 24 घंटे आक्सीजन देने वाले जो पौधे दिखाई देते, उन्हें आराम से निकाल लेते। इन पौधों को लाकर ये शहर की सड़कों के किनारे खाली जगह पर लगाने लगे। इनके इस कार्य को देख इनकी पत्नी ने इन्हें पिट्ठू बैग सिल दिए। अब ये पौधे निकालते और पिट्ठू बैग में रख लेते। विक्रांत शर्मा ने ये पौधे लगाए ही नही। उन्हें पानी दिया और पाला भी। पौधों की सुरक्षा के लिए ये बांस खरीदते। उसकी खप्पच बनाते ।इन खप्पचों को पौधे के चारों और जमीन में गाड़कर ऊपर सबको आपस में बांध देते। पौधों की सुरक्षा के लिए उसके चारों ओर पुराना कपड़ा लगा देते। इनके इस जुनून को देख काफला बनना शुरू हो गया। इस काफले को इन्होंने नाम दिया पर्यावरण प्रहरी।आज इस काफले में 150 के आसपास कार्यकर्ता हैं। 16 के आसपास महिलायें भी इस संगठन से जुड़ी हैं। ये अपने- अपने क्षेत्र में खाली जगह में पौधे लगाते हैं। उन्हें नियमित पानी देते और देखभाल करते है। इन पर्यावरण प्रहरियों ने दो-ढाई किलोमीटर में बसे बिजनौर शहर में आज साढे चार हजार से कहीं से ज्यादा आक्सीजन देने वाले पौधे लगा दिए। अकेले इसी बरसात में एक हजार से ज्यादा पौधे रोपें। इनकी उपलब्धि यह है कि इनके लगाए 90 प्रतिशत पौधे चल रहे हैं। वे ही नही चले,जिन्हें किसी ने उखाड़ दिया या जला दिया। बीते रक्षाबंधन पर इन पर्यावरण प्रेमियों ने नगर में संकल्प रैली निकाली। अपने लगाए पौधों को रक्षा सूत्र बांधे और उनकी देखरेख तथा सुरक्षा का संकल्प लिया। ये पर्यावरण प्रेमी ग्रीष्मकाल में यह सेवा कार्य प्रातः 05:30 से 07:30 तक व शीत ऋतु में छह बजे से आठ बजे तक कम से कम दो घण्टे अवश्य करते हैं। इस सेवा कार्य को इन्होंने प्रकृति वन्दन का नाम दिया गया है। सुबह सबेरे ये पर्यावरण प्रेमी नियमित रूप से प्रकृति की सेवा में लगातें हैं। उसके बाद अपने-अपने कार्य में लग जाते हैं। विक्रांत बताते हैं कि लगभग तीन साल के अपने इस कार्य में उन्होंने पाया कि पीपल और बरगद प्रायः जंगल में नही मिलते। ये पुरानी बस्तियों में बहुतायत ये पाए जातें हैं। पुराने शहर और पुराने भवन में पीपल, बरगद और नीम के पौधों का बहुतायात ये मिलने का कारण संभवतःउस क्षेत्र में आक्सीजन की कमी का होना है। प्रकृति शायद इस कमी को महसूस करती है। इन हर समय आक्सीजन देने वाले पौधों को उसी पुरानी आबादी में उगाती है।

जो काम बिजनौर शहर में विक्रांत शर्मा ने अकेले किया। वहीं काम सरकारी स्तर पर क्यों नही होता। सरकार प्रत्येक वर्ष बरसात में पौधरोपण करती हैं। करोड़ों पौधे लगाती हैं। यदि इनकी जगह 24 घंटे आक्सीजन देने वाले पौधे लगाए जाएं तो कितना बेहतर हो।सड़कों के डिवाइडर पर हम शो के फूल वाले पौधे लगाते हैं। इस जगह यदि 24 घंटे ऑक्सीजन देने वाले आमरिका बाम, एलोवेरी, तुलसी, वाइल्ड जरबेरा, स्नेक प्लांट, आरकिड, क्रिसमस केक्टस लगाएं तो ज्यादा बेहतर रहेगा। नोयडा में कुछ मार्ग पर पीपल लगाने का काम हुआ भी है। गर्मी के दिनों में बरगद छाया के साथ ठंडक प्रदान करता है। वट वृक्ष दिन ही नहीं, बल्कि रात में भी ऑक्सीजन उत्सर्जित करता है। वट वृक्ष में फैलाव अधिक होने के चलते ऑक्सीजन अधिक मात्रा में मिलती है। इसके अलावा वैज्ञानिक और धार्मिक दृष्टिकोण से वट वृक्ष यानि बरगद के पेड़ का विशेष महत्व है। विज्ञानियों का कहना है कि बरगद पेड़ अन्य पेड़-पौधे की अपेक्षा चार-पांच गुना अधिक ऑक्सीजन देता है।

भारतीय मुसलमानों पर 'तिहाड़ी प्रवचन'

अगर विदेशी मुस्लिम ताक़तें जिहाद की घोषणा करना चाहती हैं तो इसमें भारत के मुसलमान उनकी सहायता भी कर सकते हैं। भारत के मुसलमान सिर्फ़ जिहाद की घोषणा ही नहीं कर सकते बल्कि उसकी सफलता के लिये विदेशी इस्लामिक ताक़तों की मदद भी ले सकते हैं। आदि आदि। बीच बीच में तिहाड़ी यह सफ़ाई भी देते रहे कि-भारत के मुसलमानों के लिये यह विचार डॉ आंबेडकर के थे, हमारे नहीं।

तनवीर जाफ़री

जिस टीवी चैनल ने 'फ़तेह का फ़तवा' नामक कार्यक्रम 2017 में प्रसारित किया था और उस कार्यक्रम का मुख्य ऐंकर पाकिस्तान मूल के कनाडाई लेखक तारिक फ़तेह को बनाकर इस्लाम पर तरह तरह के सच्चे-झूठे आरोप मढ़कर इस्लाम को बदनाम करने व साथ ही भारतीय हिंदू-मुस्लिम समाज को बांटने का प्रयास किया था उसी दौर में उसी टी वी चैनल के ऐंकर के रूप में एक नफ़रती पत्रकार ने समाज में केवल नफ़रत परोस कर स्वयं को अतिवादियों के चाहते के रूप में स्थापित कर लिया था । इनका पूरा नाम जानने के लिये गूगल में केवल तिहाड़ी शब्द टाइप करें आपको इनकी हक़ीक़त लेख ,समाचार और वीडीओ आदि सभी रूप में देखने,सुनने व पढ़ने को मिल जायेगी। झूठे समाचार देने, सामाजिक सद्भाव बिगाड़ने, अपने ट्वीट डिलीट करने, अपने ही प्रसारित समाचारों का खंडन करने, पत्रकारिता को कलंकित करने से लेकर रिश्वत लेने और रिश्वत आरोपी के रूप में जेल जाने आदि तक में इनकी पूरी दक्षता है। टाई सूट वाले इस स्टूडियो पत्रकार को उच्च स्तरीय सुरक्षा मिली हुई है। आज किन्हीं कारणों से अपने उस पुराने टीवी चैनल को छोड़ कर अन्य चैनल में अपने उन्हीं विध्वंसक इरादों के साथ 'विभाजनकारी प्रवचन' देते फिर रहे हैं।

भाजपा का आई टी सेल इनकी ऐसी झूठी, मनगढ़ंत और नफ़रत फैलाने वाली संक्षिप्त क्लिप को अपने राष्ट्रव्यापी ट्रोलर्स नेटवर्क में पोस्ट करता है। और झूठ और नफ़रत का यह बाज़ार इन जैसे तिहाड़ियों के झूठे व वैमनस्यपूर्ण प्रवचन से और भी ज़हरीला होता जा रहा है। पिछले दिनों तिहाड़ी की ऐसी ही एक क्लिप वाट्सएप यूनिवर्सिटी के माध्यम से मुझ तक भी पहुंची। 5 मिनट 12 सेकेंड की इस क्लिप में तिहाड़ी की शुरूआती टिप्पणी इन शब्दों में थी - आज जिस तरह से भारत के बहुत सारे मुसलमान अपने देश का साथ देने के बजाय भारत का विरोध करने वाले मुस्लिम देशों का साथ दे रहे हैं उसका आभास देश के संविधान निर्माता डॉक्टर भीमराव अंबेडकर को आज से 77 वर्ष पहले ही हो गया था। इसलिये आज आप हमारी यह बात ज़रूर ध्यान से सुनियेगा क्यूंकि जो आज आपके दिमाग़ में चल रहा है वह डा भीम राव आंबेडकर के दिमाग़ में 77 साल पहले चल रहा था। इस टिप्पणी के बाद तिहाड़ी ने डॉ अंबेडकर द्वारा वर्ष 1945 में पाकिस्तान और भारत का विभाजन नामक लिखी पुस्तक के कुछ अंशों का जिक्र करते हुये और डॉ आंबेडकर के मुस्लिम जगत के बारे में व्यक्त विचारों में अपने ज़हरीले शब्दों का तड़का लगाते हुये यह साबित करने के लिये अपना पूरा ज़ोर लगा दिया कि भारतीय मुसलमान भरोसे के लायक़ नहीं। इनके लिये जिहाद पहले है, इनका भाईचारा केवल मुसलमानों के लिए है अन्य के लिये नहीं। भारत के मुसलमान भारत को इस्लाम का नहीं, युद्ध का घर मानते हैं और भारत के मुसलमान

कभी भी अपने देश के लिये ईमानदार साबित नहीं होंगे। अगर विदेशी मुस्लिम ताक़तें जिहाद की घोषणा करना चाहती हैं तो इसमें भारत के मुसलमान उनकी सहायता भी कर सकते हैं। भारत के मुसलमान सिर्फ़ जिहाद की घोषणा ही नहीं कर सकते बल्कि उसकी सफलता के लिये विदेशी इस्लामिक ताक़तों की मदद भी ले सकते हैं। आदि आदि। बीच बीच में तिहाड़ी यह सफ़ाई भी देते रहे कि-भारत के मुसलमानों के लिये यह विचार डॉ आंबेडकर के थे, हमारे नहीं। डॉ अंबेडकर की इसी पाकिस्तान और भारत का विभाजन नामक पुस्तक का हवाला देते हुये तिहाड़ी ने आगे बताया कि-मुसलमानों के भाईचारे का फ़ायदा सिर्फ़ उनके अपने लोगों को ही मिलता है और जो ग़ैर मुस्लिम हैं यानी हिन्दू हैं उनके लिये सिर्फ़ घृणा और शत्रुता ही बची है। मुसलमानों की वफ़ादारी उस देश के लिये नहीं होती जहाँ वह रहते हैं ,बल्कि उनकी वफ़ादारी उस धर्म के लिये होती है जिसका वे पालन करते हैं। और मौजूदा परिस्थिति में अंबेडकर की यह बातें बिल्कुल फ़िट बैठती हैं। यही बात भारत के मुसलमानों के साथ भी है वे शायद इसे अपनी मातृभूमि नहीं मानते और हमसे हज़ारों किलोमीटर दूर जो मुसलमान बैठे हैं उन्हें अपना भाई समझते हैं। फिर तिहाड़ी अपनी टिप्पणी में जोड़ते हैं- ये इतिहास है, यह सिद्धांत है और इसीलिये मैंने आपसे कहा कि अब यह एक धर्मयुद्ध बन चुका है -यह धर्म 57 देशों के 190 करोड़ मुसलमानों को एकजुट कर रहा है लेकिन उसी आधार पर यदि हम भारत के सौ करोड़ हिन्दुओं की बात करें तो वह आज भी बंटे हुये है क्यूंकि उनका धर्म उन्हें एक रहने पर मजबूर नहीं करता।

तिहाड़ी का यह शोध उनकी ज्ञान वर्धक टिप्पणी के साथ आज के उस दौर में वायरल हो रहा है जबकि इज़राईल, फ़िलिस्तीन पर हमलावर है और दक्षिणपंथियों को छोड़कर पूरा विश्व इज़राईली नरसंहार की घोर आलोचना कर रहा है। ऐसे में भारतीय मुसलमान ही नहीं बल्कि लगभग पूरा विश्व व भारतीय विपक्ष फ़िलिस्तीनियों के प्रति हमदर्दी जता रहा है। खुद भारत सरकार भी फ़िलिस्तीनियों के प्रति हमदर्दी का इज़हार करते हुये वहां सहायता सामग्री भेज चुकी है। रहा सवाल डॉ आंबेडकर द्वारा इस्लाम धर्म पर उनके विचार व्यक्त करने का तो वे एक स्वतंत्र विचारक थे। उन्हें अपने अध्ययन के अनुसार अपनी बात कहने या निष्कर्ष निकालने का पूरा हक़ था । दुनिया का कोई भी धर्म ऐसा नहीं जिसमें आलोचना की गुंजाईश न हो। परन्तु मिस्टर तिहाड़ी अपनी नमक मिर्च वाली टिप्पणी के माध्यम से मुसलमानों ख़ासकर भारतीय मुसलमानों के प्रति जो नकारात्मक नरेटिव गढ़ना चाहते हैं वह ज़रूर पूरी तरह से एक नियोजित शरारतपूर्ण राजनैतिक साज़िश प्रतीत होता है।

तिहाड़ी उस देश के मुसलमानों के प्रति संदेह पैदा कर रहे हैं जिस देश में बहादुर शाह ज़फ़र,टीपू सुल्तान,बदरुद्दीन तैयबजी, मौलाना अबुल कलाम आज़ाद, हकीम अजमल ख़ान, रफ़ी अहमद क़िदवई, ख़ान अब्दुल ग़फ़्फ़ार ख़ान , मौलाना हुसैन अहमद मदनी, मौलाना मज़हरूल हक़, अशफ़ाक़ उल्ला ख़ान, बेरिस्टर आसिफ़ अली, जनरल शाहनवाज़ ख़ान, डॉ ज़ाकिर हुसैन, डॉ फ़ख़रुद्दीन अली अहमद, यूसुफ़ मेहर अली जैसे अनेकानेक स्वतंत्रता सेनानी दिये? भारतीय सेना के प्रमुख मुस्लिम नायकों में ब्रिगेडियर उस्मान जिन्होंने 1948 में कश्मीर की रक्षा करते हुये शहादत पाई और महावीर चक्र प्राप्त किया। इसी तरह परमवीर चक्र विजेता वीर अब्दुल हमीद जिनपर भारतीय सेना को गर्व है इन नायकों को तो तिहाड़ी थेऊरी के अनुसार हिंदुस्तान नहीं बल्कि पाकिस्तान की तरफ़ से भारत के विरुद्ध जिहाद करना चाहिये क्यूंकि पाकिस्तान एक मुस्लिम बाहुल्य देश है? भारत रत्न डॉ कलाम की राष्ट्र के प्रति सेवाएं भी फिर तो इस तिहाड़ी पत्थरकार की नज़रों में नगण्य हैं? मुसलमानों के भाईचारे का जहाँ तक सवाल है तो वह हैदराबाद के निज़ाम मीर उस्मान अली ख़ान ही थे जिन्होंने 1965 में पाकिस्तान के साथ युद्ध के दौरान तत्कालीन प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री को 5,000 किलो सोना राष्ट्रीय रक्षा कोष में 5 हज़ार किलो सोना दान में दिया था।

शिक्षा विभाग की टीम पहुंची रामपुर पब्लिक स्कूल, अभिभावकों का विरोध

आजम खां के स्कूल को खाली कराने का नोटिस देने के बाद पहुंचे अधिकारी

लखनऊ। सपा नेता आजम खां के जौहर ट्रस्ट को लीज पर मिली जमीन को खाली कराने का नोटिस देने के बाद रविवार को शिक्षा विभाग की टीम रामपुर पब्लिक स्कूल पहुंची। इस दौरान मौके पर मौजूद अभिभावकों ने जमीन खाली कराने का विरोध किया। उनकी अधिकारियों की कई मुद्दों को लेकर बहस भी हुई।

अधिकारियों ने बताया कि स्कूल संचालकों को नोटिस दे दिया गया है। वह मौके की स्थिति को देखने के लिए पहुंचे थे। योगी सरकारी ने जौहर ट्रस्ट को दी गई जमीन की लीज खत्म कर दी थी। इसके बाद जिलाधिकारी ने पांच सदस्यीय कमेटी बनाकर इसे खाली करवाने के लिए आवश्यक तैयारी के निर्देश दिए थे।

तीन नवंबर को शिक्षा विभाग ने आजम खां के जौहर ट्रस्ट संचालकों से सात दिन में जमीन को खाली करने का नोटिस जारी किया था। इसमें चेतावनी देते हुए कहा गया है कि यदि इस जमीन पर बने निर्माण से किसी भी तरह की छेड़छाड़ या फिर उसके स्वरूप में कोई परिवर्तन करने की कोशिश की गई तो कार्रवाई की जाएगी।

नोटिस आजम खां के रामपुर पब्लिक स्कूल (आरपीएस) गर्ल्स विंग पर चस्पा भी किया गया है। यूपी सरकार ने सपा शासन में आजम खां के जौहर ट्रस्ट को तोपखाना रोड स्थित शिक्षा विभाग की जमीन और भवन को 30 साल की लीज पर दिया था। जिस पर सपा सरकार में ट्रस्ट की ओर से रामपुर पब्लिक स्कूल (गर्ल्स विंग) खोल दिया गया था। इसके साथ ही इस जमीन पर दारुल आवाम (सपा कार्यालय) भी बनाया गया था। ये सब लीज की शर्तों का उल्लंघन करते हुए किया गया था। इसकी शिकायत भाजपा विधायक आकाश सक्सेना ने शासन से की तो शासन ने जांच करवाई। इसके बाद डीएम ने रिपोर्ट शासन को भेज दी। जिस पर मंगलवार को योगी कैबिनेट ने लीज को निरस्त कर दिया था।

धनतेरस पर सजने लगा बर्तन और इलेक्ट्रॉनिक्स का बाजार

लखनऊ। त्योहारी सीजन आरंभ हो चुका है। दशहरा और करवा चौथ बीत चुके हैं। अब दीपावली से पहले धनतेरस पर सराफा , बर्तन और इलेक्ट्रॉनिक्स बाजार सजने लगे हैं। ग्राहकों की मांग के अनुरूप ज्वैलरी के साथ बर्तन और इलेक्ट्रॉनिक वस्तुएं भी आधुनिक मंगाई जा रही हैं।

खरीफ की फसल अच्छी हुई है। इसलिए व्यापारियों को बेहतर कारोबार होने की उम्मीद है। धनतेरस की तैयारी में सबसे आगे सराफा बाजार में दिख रही है। सराफा कारोबारियों ने ग्राहकों को रिझाने के लिए हर वर्ग क्षमता का ध्यान में रखकर ज्वेलरी मंगवाई है। इयररिंग, हार से लेकर महिलाओं की पसंद का ख्याल करते हुए जेवर तैयार कराए गए हैं।

कुछ सराफा कारोबारियों ने तो इंटरनेट मीडिया पर ज्वेलरी का प्रचार भी शुरू कर दिया है। बर्तन बाजार से लेकर इलेक्ट्रानिक्स बाजार में भी रौनक बढ़ने लगी है। वाहन बाजार में भी बाइकें मंगाई गई हैं।

लखनऊ आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का केंद्र बनने के लिए उपयुक्त

यूपी के लोगों में समानता लाने पर फोकस

लखनऊ। इनमोबी की ग्लोबल सीनियर वाइस प्रेसीडेंट डा.सुबी चतुर्वेदी ने कहा कि लखनऊ संस्कृति और नवाचार के साथ ही आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआइ) का केंद्र बनने की उपयुक्त स्थिति में है। वह राजधानी में आयोजित विजन कान्क्लेव में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के उपयोग से उत्तर प्रदेश को नवाचार और तकनीकी उन्नयन का अग्रणी हब बनाने की योजना की जानकारी दे रही थीं।

कान्क्लेव में उप मुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक, औद्योगिक विकास मंत्री नन्द गोपाल गुप्ता नन्दी, मुख्य सचिव दुर्गा शंकर मिश्र और प्रमुख सचिव अवस्थापना एवं औद्योगिक विकास अनिल कुमार सागर भी शामिल हुए। डा.सुबी चतुर्वेदी ने कहा कि यह मुहिम उत्तर प्रदेश को देश और दुनिया के सामने उदाहरणात्मक प्रदेश के रूप में प्रस्तुत करेगी।

हमारा मिशन समुदायों, व्यापार और सरकारी संगठनों को एआइ की मदद से सशक्त बनाना है ताकि शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि और शासन आदि क्षेत्रों में इसके सकारात्मक परिणाम देखने को मिलें। सहयोग, शोध और रणनीतिक क्रियान्वयन के जरिये हम अंत्योदय की भावना के अनुरूप उप्र के लोगों के भविष्य में अधिक समानता लाना चाहते हैं।

- एआइ टेक्नोलाजी के रूप में ग्लान्स लाक स्क्रीन ने हमें अपने स्मार्टफोन के कंटेंट के साथ पेश आने के तरीके को नए सिरे से परिभाषित किया है। गौरतलब है कि योगी सरकार लखनऊ, कानपुर, नोएडा, वाराणसी और प्रयागराज को एआइ और आइटी केंद्र के रूप में विकसित करने के साथ लखनऊ को पहले एआइ सिटी के तौर पर स्थापित करना चाहती है।

इस कान्क्लेव में भारत में विकसित नवाचारी एआइ साफ्टवेयर ग्लान्स को प्रदर्शित किया गया। इनमोबी के सीनियर वाइस प्रेसीडेंट आदित्य गोयल ने कहा कि इस साफ्टवेयर में समाज के विभिन्न पहलुओं में बड़े बदलाव लाने की क्षमता है।

छात्रा को न्याय देने के बजाय दमन कर रही सरकार : माले

अवधनामा संवाददाता

लखनऊ। भाकपा माले ने बीएचयू आईआईटी में छात्रा के यौन उत्पीड़न के खिलाफ पिछले दो दिनों से लंका गेट पर धरना दे रहे छात्र-छात्राओं पर रविवार को एबीवीपी के हमले, इस दौरान पुलिस के मूकदर्शक बने रहने और आंदोलनकारी आइसा नेता रौशन को गिरफ्तार कर लेने की कड़ी निंदा की है। पार्टी ने प्रधानमंत्री के निर्वाचन क्षेत्र में छात्र-छात्राओं पर इन हमलों और पुलिस दमन के लिए केंद्र व राज्य सरकार को जिम्मेदार ठहराया है। माले के राज्य सचिव सुधाकर यादव ने आज जारी एक बयान में कहा कि आंदोलनकारी छात्राओं पर संघ-भाजपा से जुड़े छात्र संगठन एबीवीपी के हमले के दौरान पुलिस का मूकदर्शक बने रहना इस बात का संकेत है कि हमला प्रशासन व पुलिस की शह पर किया गया। पुलिस ने पीड़ित छात्रा का यौन उत्पीड़न करने वाले अपराधियों और एबीवीपी के हमलावर गुंडों को गिरफ्तार करने की जगह आंदोलनकारी छात्रों का समर्थन करने व उसमें भाग ले रहे आइसा नेता को गिरफ्तार किया। गिरफ्तार छात्र नेता को कहां ले जाया गया, पुलिस व प्रशासन इसे नहीं बता रहा है।

छात्र ज्वलंत विषयों में भाग लेते रहे : जस्टिस मनीष

आठवें जस्टिस मुर्तजा हुसैन मेमोरियल राष्ट्रीय मूट कोर्ट प्रतियोगिता

अवधनामा संवाददाता

लखनऊ। आज दिनांक 05 नवम्बर को यूनिटी पीजी कॉलेज, बसंतकुज, आईआईएम बाईपास रोड, लखनऊ में "Fair trial of crime against Women" विषय पर आयोजित आठवें जस्टिस मुर्तजा हुसैन मेमोरियल राष्ट्रीय मूट कोर्ट प्रतियोगिता का समापन हुआ।

सफल प्रतिभागियों को इस अवसर पर पुरस्कृत किया गया। प्रतियोगिता के अंतिम दिन मुख्य अतिथि जस्टिस जसप्रीत सिंह ने अपने सम्बोधन मे कहा कि ऐसी प्रतियोगिताओं से छात्रों को ज्वलंत विषयों में अपने विचार रखने का अवसर प्रदान होता है।

जस्टिस मनीष कुमार ने भी अपने सम्बोधन मे कहा कि ऐसे ज्वलंत विषयों पर भाग लेते रहना चाहिए, यह उनके व्यक्तित्व विकास के लिए अनिवार्य है। इस त्रिदिवसीय प्रतियोगिता के कार्यक्रम में कई देशों के विश्वविद्यालय और महाविद्यालयों के छात्रों ने प्रतिभाग किया। प्रतियोगिता में महाराष्ट्र नैशनल लॉ युनिवर्सिटी मुम्बई ने प्रथम स्थान प्राप्त किया ललॉयड लॉ कॉलेज, ग्रेटर नोएडा ने दूसरे स्थान पर रही। विभिन्न केटेगरी के अन्तर्गत बेस्ट मेमोरियल का पुरस्कार श्री पदमावत महिला विश्वविद्यालय, अन्ध्र प्रदेश ने हासिल किया तथा बेस्ट रिसर्चर का पुरस्कार युनिटी पीजी कॉलेज, लखनऊ ने अपने नाम किया। इसके अतिरिक्त बेस्ट मूटर का एवार्ड सिम्बाओसिस लॉ स्कूल नागपुर को मिला।

इस अवसर पर कॉलेज के चेयरमैन जस्टिस इम्तियाज़ मुर्तज़ा, वाइस चेयरपर्सन श्रीमती समीना इम्तियाज़, सचिव श्री मुर्तज़ा हसनैन खान, कोषाध्यक्ष श्री नदीम मुर्तज़ा, समन्वयक सुश्री असमा जावेद, प्राचार्य डॉ0 सुनील धवन शिक्षकगण, छात्र एवं छात्रायें उपस्थित थे। अंत में विधि विभागाध्यक्ष श्री वी0 पी0 सिंह ने कार्यक्रम के सफल आयोजन के लिए सभी को धन्यवाद दिया।

'अमृता का ख़्वाब...साहिर' का मंचन

अवधनामा संवाददाता

- साहिर के गीतों और शायरी से भरपूर अमृता-साहर की दास्तां

लखनऊ। संत गाड्गे प्रेक्षागृह, संगीत नाटक अकादमी, गोमतीनगर में फखरुद्दीन अली अहमद मेमोरियल कमेटी उप्र सरकार व इन्स्टीयूट ऑफ ह्यूमन रिसोंसेज़, रिसर्च एण्ड डेवलेपमेन्ट सोसाइटी (आई.एच.आर.आर.डी.), के तत्वावाधान में नाटक 'अमृता का ख्वाब...साहिर' का मंचन आज होगा। नाटक को प्रसिद्ध लेखक एस.एन.लाल का लिखा है और इसका निर्देशन नवाब मसूद अब्दुल्लाह और एस.एन.लाल कर रहे हैं। इस दौर की उर्दू की बड़ी विभूति स्व शारिब रिदौलवी को यह नाटक समर्पित किया जायेगा।

इस नाटक में बीच-बीच में साहिर के फिल्मी गीतो को गायक मंच पर ही प्रस्तुत करेंगे, जोकि नाटक को और खुबसूरत बनायेगा। नाटक में साहिर-अमृता की जहां पहली मुलाक़ात हुई, उस मुशायरे को भी पेश किया गया है, जोकि प्रीतनगर में सन् 1944 में हुआ था, इस मुशायरे में जॉ-निसार अख़्तर, मजाज़ लखनवी, जोश मलिहाबादी, अर्श अलसियानी, अली सरदार जाफ़री, अमृता प्रीतम व साहिर को मुशायरा पढ़ते हुए दिखायी देंगे।

नाटक में अमृता व साहिर के मोहब्बत के पहलूओं को उजागर किया गया है, जोकि समाज को एक संदेश देते है, यह कहानी इन लोगों की मुलाक़ात यानि सन् 1944 से शुरु होकर साहिर के देहान्त यानि 1980 पर ख़त्म हो जाती है। नाटक में जहॉ एक तरफ साहिर, अमृता की मोहब्बत में गिरफ्तार हो गये थे, वही साहिर अपनी मॉ से इतनी मोहब्बत करते थे, कि मॉ और अपने बीच किसी तीसरे को लाने की हिम्मत नहीं जुटा पाये। उधर अमृता ने साहिर की वजह से अपने पति प्रीतम सिंह को छोड़ दिया, लेकिन साहिर का साथ न मिलने की वजह से साहिर के इन्तेज़ार में ही अपने दोस्त इमरोज़ के साथ रहने लगी। साहिर, ...अमृता का ख़्वाब था, जोकि साहिर के देहान्त के बाद टूट गया... ! फिर अमृता ने बाक़ी बचा अपना जीवन इमरोज़ के साथ ही गुज़ारा।

नई व्यवस्था नहीं बनी तो दुनिया का अस्तित्व खतरे में

अवधनामा संवाददाता

- 'अन्तर्राष्ट्रीय मुख्य न्यायाधीश सम्मेलन' का तीसरा दिन

लखनऊ। सिटी मोन्टेसरी स्कूल द्वारा आयोजित 'विश्व के मुख्य न्यायाधीशों के 24वें अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन' के तीसरे दिन आज 61 देशों से पधारे मुख्य न्यायाधीशों, न्यायाधीशों एवं कानूनविदों ने जोरदार शब्दों में नई विश्व व्यवस्था की आवाज उठाई और इस दिशा में सी.एम.एस. द्वारा किये जा रहे प्रयासों की सराहना करते हुए एक मत से कहा कि यदि नई विश्व व्यवस्था शीघ्र नहीं बनी तो दुनिया का अस्तित्व खतरे में है। अन्तर्राष्ट्रीय मुख्य न्यायाधीश सम्मेलन के तीसरे दिन की चर्चा-परिचर्चा की अध्यक्षता करते हुए पूर्व पुलिस महानिदेशक एवं नोएडा इण्टरनेशनल यूनिवर्सिटी के चांसलर डा. विक्रम सिंह ने कहा कि अनुच्छेद 51 पूरे विश्व में शान्ति एवं सद्भावना का प्रसार करता है। कोविड महामारी ने हमें सिखाया कि हमें प्रतिस्पर्धा की तरह नहीं बल्कि आपसी सहयोग से कार्य करना चाहिए।

मोजाम्बिक के मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति श्री एडेलिनो मैनुअल मुचांगा ने कहा कि मानव अधिकारों का सम्मान किए बिना शांति की स्थापना नहीं की जा सकती। यह सम्मेलन हम सभी के लिए एक सीखने का अवसर भी है। अंगोला सुप्रीम कोर्ट के प्रेसीडेन्ट न्यायमूर्ति डा. जोएल लियोनार्डो ने सम्मेलन की प्रशंसा करते हुए कहा कि यह इसलिए महत्वपूर्ण क्योकि यह दुनिया के सभी लोगों के हित के लिए है। उन्होने राजनेताओं और नीति निर्माताओं की उत्तरदायिता सुनिश्चित करने के लिए एंटी-करप्शन कोर्ट की स्थापना का सुझाव दिया। बेनिन हाईकोर्ट की प्रेसीडेन्ट न्यायमूर्ति सुश्री सेसिल मैरी ज़िनज़िन्दोऊ कहा कि विश्व की समस्यायें अब वैसी नहीं है, जैसी संयुक्त राष्ट्र की स्थापना के समय थी, इसलिए संयुक्त राष्ट्र में आज के परिपेक्ष्य के अनुरूप बदलाव लाने की आवश्यकता है। मॉरीशस सुप्रीम कोर्ट की मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति सुश्री बीबी रेहाना मुंगली-गुलबुल ने कहा कि वैश्विक परिवर्तन के लिए शीघ्र कदम उठाने की आवश्यकता है, इससे पहले की देर हो जाए।

जहाँ एक ओर देश-विदेश के न्यायविदों व कानूनविदों ने 'रिफार्म ऑफ यू.एन. चार्टर' थीम के अन्तर्गत 'रिप्रेशिंग द यू.एन. चार्टर टू सर्व एज ए ग्लोबल कान्स्टीट्यूशन एण्ड सोशल कान्ट्रैक्ट', 'रिप्लेसिंग द वन 'स्टेट-वन वोट' इन यू.एन. जनरल असेंबली बाई ए वेटेड वोटिंग सिस्टम' आदि विषयों पर गंभीर विचार विमर्श किया तो वहीं दूसरी ओर 'इम्पेर्सेबल वर्ल्ड लॉ' विषय के अन्तर्गत 'कंडीशन अण्डर व्हिच रेस्पेक्ट फॉर ट्रीटी आब्लीगेशन्स एण्ड अदर इण्टरनेशनल लॉ कैन बी मेन्टेन्ड', 'मैकेनिज्म ऑफ इन्फेर्सिंग इण्टरनेशनल लॉ इन एडीशन टु ट्रेडीशनल इन्स्टीट्यूशन्स ऑफ कम्प्लायन्स', 'नेशनल एक्सेप्टबिलिटी ऑफ यूनिवर्सिल मैन्टेड्स अगेन्स्ट वॉर एण्ड वायलेन्स' आदि विषयों पर सारगर्भित विचार रखे। इसी प्रकार 'ह्यूमन डेवलपमेन्टः एजूकेशन, हेल्थ, एम्प्लॉयमेन्ट, इनइक्वालिटी', 'एक्शन फॉर क्लाइमेट चेन्ज', 'डिसआर्मामेन्ट एण्ड ए यू.एन. पीस फोर्स', 'रोल ऑफ एन.जी.ओ., सिविलि सोसाइटी, स्मार्ट कोलीशन इन ग्लोबल गवर्नेन्स' थीम के अन्तर्गत विभिन्न विषयों पर जमकर विचार-विमर्श हुआ। इस ऐतिहासिक सम्मेलन के संयोजक व सी.एम.एस. संस्थापक, डा. जगदीश गाँधी ने आज एक प्रेस कान्फ्रेन्स में मुख्य न्यायाधीशों के विचारों से अवगत कराते हुए कहा कि न्यायविदों व कानूनविदों का कहना था कि आज ऐसी कानून व्यवस्था की आवश्यकता है।

साहू समाज ने भगवान जगन्नाथ मां कर्मा देवी रथ यात्रा का किया भव्य स्वागत

लखनऊ। माँ कर्मा देवी रथयात्रा के संयोजक जगदीश प्रसाद साहू के नेतृत्व में 5 सितम्बर को झांसी से शुरू होकर अनवरत पूरा उत्तर प्रदेश भ्रमण करती हुई भगवान जगन्नाथ, माँ कर्मा देवी रथयात्रा तथा साहू राठौर जनजागृति अधिकार यात्रा अब अपने अंतिम चरण में चार दिन के लिए लखनऊ में भ्रमण कर रही है। जिसमें लखनऊ देहात व नगर के मोहल्लों में माँ कर्मा देवी के दर्शन व स्वागत समाज के लोग भारी संख्या में उपस्थित होकर कर रहे है। उसी कड़ी में आज मोहनलाल गंज के कल्पना ग्रीक गार्डन में दिलीप साहू ने माँ कर्मा देवी की पूजा की इसके पश्चात यह रथ यात्रा बंथरा, सरोजनी नगर होते हुए मोहान पहुंची जहां मोहान के पूर्व चेयरमैन ओम कुमार साहू ने अपनी पूरी टीम के साथ रथ यात्रा का स्वागत किया, इसके पश्चात यह रथ यात्रा मलिहाबाद पहुंची जहां रामसेवक साहू ने अपनी पूरी टीम के साथ रथ यात्रा का स्वागत किया।

टीएमयू फार्माकोलॉजी की व्याख्यान प्रतियोगिता में जीता मुस्कान एंड ग्रुप

अवधनामा संवाददाता

- पीवीपीआई के तहत राष्ट्रीय फार्माकोविजिलेंस कार्यक्रम मनाया गया

लखनऊ। तीर्थंकर महावीर मेडिकल कॉलेज एंड रिसर्च सेंटर के फार्माकोलॉजी विभाग में भारतीय फार्माकोपिया आयोग, गाजियाबाद निर्देश पर भारत के फार्माकोविजिलेंस कार्यक्रम- पीवीपीआई के तहत राष्ट्रीय फार्माकोविजिलेंस कार्यक्रम मनाया गया। इस वर्ष फार्माकोविजिलेंस कार्यक्रम की थीम- फार्माकोविजिलेंस में जनता का विश्वास बढ़ाना थी। फार्माकोविजिलेंस में मेडिकल की फैकल्टी और स्टुडेंट्स की ओर से कार्यक्रम की थीम और संबद्ध स्वास्थ्य पर सत्रों की एक श्रृंखला आयोजित की गई। लुक एलाइक एंड साउंड एलाइक मेडिकेशन एरर पर आयोजित व्याख्यान प्रतियोगिता में मुस्कान, मुस्कान चौहान, नंदिनी सिंह, निखिल चंद्रा, निपुर वार्ष्णेय और निपुण शर्मा का ग्रुप विजेता रहा। प्रियांशा चावला, पूर्ति पोल्पी, पूर्वी सिंह, रवि यादव और रिद्धिमा सोलंकी का ग्रुप दूसरे और दीपांशु कुशवाह, धैर्य, धन्य शुक्ला और दिव्या मिश्रा का ग्रुप तीसरे स्थान पर रहा। प्रतियोगिता में स्टुडेंट्स ने उच्च जोखिम वाली दवा और दवा त्रुटियों से बचने के लिए विभिन्न तरीकों का वर्णन किया। प्रतियोगिता के निर्णायक मंडल में मेडिकल कॉलेज के प्राचार्य प्रो. एनके सिंह, एनाटॉमी विभाग के एचओडी प्रो. एसके जैन, पैथोलॉजी विभाग की एचओडी प्रो. सीमा अवस्थी और फार्माकोलॉजी विभाग के एचओडी एवम् एएमसी समन्वयक प्रो. प्रीथपाल सिंह मटरेजा शामिल रहे। एडवर्स ड्रग रिएक्शन मॉनिटरिंग सेंटर-एएमसी की ओर से रोगी की सुरक्षा और एडवर्स ड्रग रिएक्शन से बचाव के लिए डॉक्टर्स और मरीजों के लिए भी कार्यक्रम किए गए। दूसरे सत्र में स्टुडेंट्स ने टीएमयू अस्पताल में सार्वजनिक जागरूकता कार्यक्रम में पैम्फलेट वितरित करके एडवर्स ड्रग रिएक्शन से बचाव के लिए लोगों को जागरूक किया।

35 लोगों ने स्वैच्छिक रक्तदान कर बने महादानी

अवधनामा संवाददाता

लखनऊ। रविवार, बीरबल साहनी मार्ग स्थित श्री श्याम मंदिर में संस्थापक अध्यक्ष स्व सुरेंद्र कुमार अग्रवाल की पूर्ण स्मृति में रक्तदान महादान शिविर का आयोजन डॉ राम मनोहर लोहिया आयुर्वेदिक संस्थान लखनऊ द्वारा लगाया गया जिसकी शुरुआत उत्तर विधानसभा विधायक डॉ नीरज बोरा, विधान परिषद सदस्य अशोक अग्रवाल द्वारा शिविर की शुरुआत की गई जिसमें मनीष अग्रवाल को विधायक डॉ नीरज बोरा ने 63वा रक्तदान करने पर सम्मानित किया। रक्तदान में कामना शुक्ला, सुधा त्रिपाठी, शालिनी रस्तोगी, मोहित गुप्ता, केसर देव मोदी, श्याम मोदी, अनुज सिंघल, अजय शर्मा, पीयूष अग्रवाल, शशिकांत द्विवेदी, अंचित टंडन, राम शर्मा, खुश अग्रवाल, शुभम अग्रवाल, अभिषेक अग्रवाल, अमित अग्रवाल, श्यामलाल, सोनिया अग्रवाल, श्याम वर्मा, विपिन अग्रवाल, ओंकार सिंह, विवेक अग्रवाल, विशेष गोयल, दिवाकर चौधरी, वैभव महेश्वरी, रत्नेश गोयल, ऋषिका, मनीष अग्रवाल, सत्य प्रवेश, शरद अग्रवाल ने रक्तदान किया।

संविधान बचाने एवं निजी क्षेत्र में आरक्षण के लिए होगा बड़ा आंदोलन

राष्ट्रीय अधिवेशन में पहुंचे भारत के 26 प्रदेशों के प्रतिनिधि

अवधनामा संवाददाता

- भारत के संविधान से छेड़छाड़ करने वाले लोगों को खिलाफ कार्रवाई होनी चाहिए : भावनाथ

लखनऊ। डॉ अम्बेडकर राष्ट्रीय एकता मंच का 11वां राष्ट्रीय अधिवेशन उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ में गांधी सभागार निकट शहीद स्मारक कैसरबाग लखनऊ में संपन्न हुआ राष्ट्रीय अधिवेशन समारोह का प्रारंभ तथागत बुद्ध एवं बोधी सत्य साहब डॉ अम्बेडकर के प्रतिमा के समक्ष पुष्प अर्पित एवं दीप जलाकर किया गया समारोह की शुरुआत बुद्ध वंदना एवं त्रिशरण पंचशील से हुई संगठन के राष्ट्रीय संरक्षक पूर्व आईएएस मा. राम बहादुर जी ने राष्ट्रीय अधिवेशन कार्यक्रम का उदघाटन किया।

संगठन के राष्ट्रीय अध्यक्ष भवननाथ पासवान ने कहा कि आज डॉ अम्बेडकर राष्ट्रीय एकता मंच पूरे भारत में एक अलग पहचान बनाते हुए इस अधिवेशन देश के 26 प्रदेशों के प्रतिनिधि सम्मिलित हुए और विभिन्न मुद्दों पर चर्चा किया। चर्चा में विशेष रूप से भारत के संविधान से छेड़छाड़ करने वाले लोगों को खिलाफ कार्रवाई होनी चाहिए निजी क्षेत्र न्यायपालिका और सेवा में आरक्षण की व्यवस्था की मांग हर नागरिक को सामान और सस्ती शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाएं मिले अनुसूचित जाति एवं जनजाति तथा पिछड़े और कमजोर लोगों पर हो रहे अत्याचार पर सरकार रोक लगाएं नए पार्लियामेंट भवन का नामकरण संविधान निर्माता बाबासाहेब डॉ अम्बेडकर के नाम से किया जाए तुरंत में आरक्षण बहाल किया जाए सभी सरकारी विभागों एवं सार्वजनिक पदों की विशेष भर्ती अभियान के तहत भरा जाए नई पेंशन स्कीम को समाप्त कर पुरानी पेंशन स्कीम लागू करें किसानो की उपज का बीमा सीमा एवं न्यूनतम मूल्य बढ़ाई जाए हर नागरिक को समान और सस्ती शिक्षा एवं स्वास्थ्य सेवाएं मिले इन मांगों को लेकर पूरे देश से आए हुए प्रतिनिधियों ने समर्थन किया संविधान खतरे में है निजीकरण जोरों पर है सरकारी सेवाएं समाप्त हो रही है बड़ी तादात में नौजवान बेरोजगार बदहाली में जीने को मजबूर है जो लोग सरकारी सेवा में है जिनको सेवा के बाद जीवन यापन के लिए पेंशन जरूरी थी नई पेंशन स्कीम लाकर उनके भविष्य को भी अंधकार में डाल दिया गया है इसलिए भारत में सामाजिक संगठन एवं कर्मचारी संगठन की जिम्मेदारी बनती है की सभी जाति भेद आपस में मनमुट्ठा एक दूसरे की आलोचना करने के बजाय मुद्दे के आधार पर एक मंच पर आए जिससे भारत का संविधान निजीकरण लोकतंत्र की रक्षा हो सके ओबीसी एससी एसटी माइनॉरिटी को सरकारी सेवाओं में सभी स्तर पर अनुमान अनुपातिक भागीदारी दिलाने के लिए आंदोलन में साथ दें और साथ मैं चले भी तभी हम कुछ कर पाएंगे और भारत को अखंड अजय एवं समृद्ध भारत का निर्माण कर आज 76 वर्षों की आजादी के उपरांत भी संविधान में प्रदत्त समानता का अधिकार सम्मान शिक्षा व अन्य अधिकारों से समाज को अभी तक वंचित किया गया है समानता का अधिकार लागू कर दिया तो गरीबी व अमीरी की खाई की खाई मिट जाती लेकिन ये भ्रष्टाचारी मानसिकता के लोग कभी ऐसा नहीं होने देंगे कार्यक्रम का संचालन इजी एसपी सिंह ने किया मुख्य वक्ताओं में श्री अमृत प्रकाश पूर्व जिला जज राम सुचित पूर्व आईएएस राजेंद्र प्रसाद एडिशनल कमिश्नर माताफेर राकेश कुमार आर पी सरोज डॉक्टर नवनीत किशोर इंजी भीमराज राधेश्याम राम सिंह आसाराम सरोज डॉ अनिल कुमार फतेह बहादुर सिंह एडवोकेट एसपी एडवोकेट भास्कर पासवान डॉ शिव शक्ति डॉ रवि सरोज बलिराम पासवान अभिषेक चौधरी डॉक्टर अशोक चौधरी राजकुमार चौधरी सुशील कुमार आदि मौजूद रहे।

डॉ अब्दुर्रहीम की पुस्तक 'मेरी रेडियो वार्ताएं' का विमोचन

लखनऊ। उत्तर प्रदेश उर्दू अकादमी के सभागार में अभिनंदन ग्रंथ के तत्वाधान में लखनऊ विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रोफेसर सूर्य प्रसाद दीक्षित की अध्यक्षता में महत्वपूर्ण एवं सम्मानित साहित्यकारों की उपस्थिति में राज्य कर्मचारी परिषद के पूर्व सचिव और सुप्रसिद्ध हिंदी लेखक डॉ. दिनेश चंद्र अवस्थी की पुस्तक ÷मैं चलता चला आया÷ और मुमताज पीजी कॉलेज के पूर्व प्राचार्य डॉ0 अब्दुर्रहीम की पुस्तक ÷मेरी रेडियो वार्ताएं÷ का लोकार्पण किया गया। इस कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में सेवानिवृत्त आईएएस अधिकारी सुशांत यूनिवर्सिटी के चांसलर श्री जयशंकर मिश्र, उत्तर प्रदेश के पूर्व डीजीपी और राज्यसभा सदस्य श्री बृजलाल, प्रसिद्ध हिंदी लेखिका पद्मश्री विद्याविंदु और लखनऊ विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रोफेसर हरिशंकर मिश्र भी शामिल हुए।

CMYK

जिला कारागार के लिए 228.31 करोड़ की मंजूरी, जल्द शुरू होगा निर्माण

अवधनामा ब्यूरो

कुशीनगर। लंबे समय इंतजार के बाद जिला कारागार के निर्माण का रास्ता साफ हो गय। कैबिनेट की बैठक में 228.31 करोड़ रुपए की मंजूरी मिल गई है। कार्यदायी संस्था के नामित होते ही इसका निर्माण कार्य शुरू हो जाएगा। सबसे पहले चहारदीवारी का निर्माण होगा। जिला जेल के लिए प्रशासन ने लमुहा, भटवलिया, मजरा केवल छपरा और केवल छपरा में 327 किसानों से जमीन अधिग्रहण का काम पूरा हो चुका है। इसके निर्माण के लिए कार्यदायी संस्था अभी नामित नहीं हुई है। नामित होते ही सबसे पहले चहारदीवारी का निर्माण शुरू होगा।

पीएस शुक्ला, जेल अधीक्षक, देवरिया

जमीन खरीद चुका है। वहीं कुछ सरकारी जमीन को भी जेल के नाम स्थानांतरित कर दी गई है। 13 मई 1994 को देवरिया से अलग होकर कुशीनगर जिला बना। अस्तित्व में आने के बाद से ही कुशीनगर में जिला कारागार की जरूरत महसूस होने लगी, लेकिन 27 साल बाद भी वजूद में नहीं आ सका है। जिला जेल के निर्माण के लिए वर्ष 2010 से ही प्रयास किया जा रहा था। इसके निर्माण के लिए प्रदेश की योगी आदित्यनाथ की सरकार ने धन की मंजूरी दे दी है।

327 किसानों से खरीदी गई 24.66 हेक्टेयर जमीन

राजस्व विभाग के मुताबिक पडरौना तहसील के लमुहा गांव में किसानों से 18.333 हेक्टेयर, भटवलिया में 2.172 हेक्टेयर, मजरा केवल छपरा में 3.762 हेक्टेयर और केवल छपरा में किसानों से 0.393 हेक्टेयर सहित कुल 327 किसानों से 24.66 हेक्टेयर जमीन सहमति के आधार पर खरीदी गई है। इस मद में शासन की ओर से 46,29,64,360 रुपये स्वीकृत हुआ था। जमीन की रजिस्ट्री करने वाले सभी किसानों को मुआवजा दिया जा चुका है। किसानों के जमीन की रजिस्ट्री की प्रक्रिया भी पूरी हो गई है। बनने वाले जिला कारागार की जमीन के पास सिंचाई, पीडब्ल्यूडी और सीलिंग की जमीन है। उसे भी जिला कारागार के नाम हस्तांतरित करा लिया गया है। जमीन मिलने के बाद सिर्फ निर्माण के लिए रुपये की कमी थी। जिसे प्रदेश सरकार की कैबिनेट ने 228.31 करोड़ रुपये मंजूर कर दिया है।

किसानों से प्रशासन ने खरीद चुका है 24.66 हेक्टेयर जमीन

ट्रेन की चपेट में आने से अधेड़ व्यक्ति की मौत

अवधनामा ब्यूरो

कुशीनगर। अहिरौली थाना क्षेत्र के घोड़ादेऊर गांव के समीप स्थित गोरखपुर नरकटियागंज रेलवे ट्रैक पर ट्रेन की चपेट में आने से एक अज्ञात महिला की मौके पर मौत हो गई। मिली जानकारी के मुताबिक रविवार की सुबह अहिरौली बाजार थाना क्षेत्र अन्तर्गत गोरखपुर नरकटियागंज रेल मार्ग पर ट्रेन की चपेट मे आने से एक 50 वर्षीय महिला अज्ञात महिला की मौके पर मौत हो गई। तभी किसी ने घटना की जानकारी स्थानीय पुलिस को दी सूचना मिलते ही स्थानीय थाने से उपनिरीक्षक विनोद कुमार सिंह चन्दन प्रजापति हेड कास्टेबल सोनदेव यादव कास्टेबल अमित कुमार गुड्डू राजभर पंकज कुमार राहुल कुमार महिला कास्टेबल निरमा देवी मौके पर पहुंचकर शव की शिनाख्त कराने के प्रयास मे जुटे रहे।लेकिन शव की शिनाख्त नही हो पाई। उसके बाद पुलिस ने शव को अपने कब्जे मे लेकर पंचनामा तैयार कर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। समाचार लिखे जाने तक शव का शिनाख्त नही हो पाई थी।

गुरु गोरक्षनाथ इंस्टीट्यूट ऑफ़ मेडिकल साइंसेज के नेक काम से मिल रहीं है स्वास्थ्य सुविधाएं

अवधनामा संवाददाता

गोरखपुर। गुरु गोरक्षनाथ इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज बालापार के द्वारा रविवार को ग्रामसभा जंगल डुमरी नम्बर दो में एक विशाल स्वास्थ्य कैम्प का आयोजन किया गया। कैंप का उद्घाटन क्षेत्रीय विधायक महेंद्र पाल सिंह ने किया। इस दौरान उन्होंने वहां मौजूद लोगो को सम्बोधित करते हुए कहा की गुरु गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज लगातार जगह जगह विशाल स्वास्थ्य कैम्प का आयोजन करता आ रहा है। जिससे लोगों को स्वास्थ्य सम्बंधी सुविधाएं लगातार मिल रही है।

इस नेक काम के लिए मै गुरु गोरक्षनाथ इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज का आभार व्यक्त करता हूं। उन्होंने आगे कहा कि यह इंस्टीट्यूट जब से खुला है तबसे इस क्षेत्र में कई कैम्प लग चुके हैं। और इस कैम्प से सैकड़ो लोग लाभान्वित हुए है। इस दौरान कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि पिपराइच ब्लाक प्रमुख जनार्दन जैसवाल और भटहट ब्लाक प्रमुख प्रतिनिधि राघवेंद्र प्रताप सिंह भी मौजूद रहे। वहां मौजूद इंस्टीट्यूट के निदेशक कर्नल डा राजेश बहल ने लोगों सम्बोधित करते हुए कहा कि यह चिकित्सालय लोगों को अच्छी व बेहतरीन स्वास्थ्य सुविधाएं मुहैया कराने के लिए तत्पर है। उन्होंने वहां उपस्थित सभी लोगों का आभार व्यक्त किया। चिकित्सालय के डॉक्टरों में डॉक्टर राकेश सिंह, डॉक्टर ओपी सिंह, डॉक्टर प्रदीप कुशवाहा, डॉक्टर भरत, डॉ हरिवंश यादव, मौजूद रहे। स्वास्थ्य कैंप में कुल 785 मरीजों का परीक्षण किया गया। जिसमें 11 मरीज मोतियाबिंद के चिन्हित हुए और आवश्यक जांच व दवाइयां वितरित की गई। कैम्प के आयोजन में विजेंद्र जयसवाल अध्यक्ष अशोक निषाद एवम उनकी टीम का बहुत योगदान रहा। कैम्प का संचालन अनिल पांडेय ने किया। अंत में चिकित्सालय के प्रबंधक गिरिजेश कुमार मिश्रा ने कैम्प में उपस्थित सभी चिकित्सालय स्टाफ और नर्सिंग कॉलेज की छात्राओं का आभार व्यक्त किया।

कलम बोल दे तो अखरता बहुत है...

अवधनामा संवाददाता

अमेठी। विकास खंड क्षेत्र संग्रामपुर की ग्राम पंचायत बनवीरपुर में रविवार को अखिल भारतीय कवि सम्मेलन में काव्य रसधार बही जिसमें श्रोताओं ने जमकर तालियां बजाई।मां सरस्वती के चित्र पर दीप प्रज्वलन और माल्यार्पण करके अवधी साहित्य संस्थान के अध्यक्ष डा अर्जुन पांडेय भाजपा नेता अरूण कुमार पांडेय कांग्रेस नेता ओम प्रकाश द्विवेदी और विहिप के ब्लाक संयोजक प्रभाकर उपाध्याय ने कार्यक्रम का शुभारंभ किया। इस मौके पर मुख्य अतिथि भाजपा नेता अमरेंद्र सिंह पिंटू भी उपस्थित रहे। कवि सम्मेलन की औपचारिक शुरुआत कवि सुरेश शुक्ल नवीन की वाणी वंदना से हुई। युवा कवि दिवस प्रताप सिंह ने एक कर कई मुक्तक सुनाकर मंच को नयी ऊंचाई दी। सुल्तानपुर से आये बृजेश कुमार पांडेय इंदू सुल्तानपुरी ने लोकतांत्रिक व्यवस्था को आईना

दिखाते हुए पढ़ा जो बाहर ही बाहर संवरता है। देश की जो हरी खेती चरता बहुत है। चोरी के संग सीनाजोरी भी करता है। कलम बोल दे तो अखरता बहुत है। इसके अलावा प्रयागराज से आये कवि डा अशोक अग्रहरि ने आज के हालत पर गहरी चोट करके श्रोताओं की तालियां बटोरी। माता पिता की सेवा करने का संदेश देती कविता पढ़कर प्रतापगढ के लोकप्रिय गजलकार गजेंद्र सिंह विकट जमकर सराहे गए। चंद्र प्रकाश पांडेय मंजुल की रचनाएं भी सराही गयी। सुरेश शुक्ल नवीन के गीत और सस्वर काव्यपाठ ने मंच को ऊंचाई प्रदान की।

विधायक ने घर घर जाकर नये वोटर्स बनने के लिए की अपील

अवधनामा संवाददाता

गोरखपुर। सहजनवा विधानसभा के अंतर्गत घाघसरा व डोहरिया में वोटर चेतना विशेष महा अभियान के तहत बूथ संख्या 34, 35, 46, 65, 67, 71 पर फार्म 6 और 7 भरवाया कर जमा किया गया कार्यक्रम विधायक प्रदीप शुक्ला ने लोगों से अपील करते हुए कहा कि लोकतंत्र के सबसे बड़े पर्व चुनाव में आप सभी मताधिकार का प्रयोग अवश्य करें। जो युवा जनवरी 2024 में 18 वर्ष की आयु पूरी कर रहे हैं।

यह आवश्यक मतदाता बने इसके साथ ही जिन गलत लोगों का नाम वोटर लिस्ट में है उन्हें हटवाने का भी प्रयास करें विधायक ने विवाहित महिलाओं से अपील करते हुए कहा कि जो बहने विवाह के बाद अन्य जगह आई हैं और उनका नाम वोटर लिस्ट में नहीं है। वह अपना नाम फॉर्म भरकर अवश्य सूची में जुड़वा ले मतदाता आप सभी का अधिकार है इसका प्रयोग अवश्य करें विधायक ने कहा कि चुनाव आयोग 1 जनवरी 2024 में 18 वर्ष की आई पूरी करने वाले युवाओं को मतदाता बनाने के लिए 27 अक्टूबर से 11 दिसंबर के बीच विशेष अभियान चलाया जा रहा है आप सभी इसमें बढ़ चढ़कर हिस्सा लें इस दौरान मंडल अध्यक्ष शिवचरन प्रसाद, दयाशंकर सिंह, शिवराम कृष्णा, ध्रुव सिंह शिवराम कुमार, उमाशंकर पांडे ध्रुव कुमार गुप्ता रामनगर सिंह, संजय त्रिपाठी समेत कार्यकर्ता मौजूद है।

लोकतंत्र के सबसे बड़े पर्व चुनाव में आप सभी मताधिकार का प्रयोग अवश्य करें: प्रदीप शुक्ला

चुनाव आयोग 1 जनवरी 2024 में युवाओं को मतदाता बनाने के लिए 11 दिसंबर के बीच विशेष अभियान चला रहा है

जिला अध्यक्ष ने की मतदान करने अपील की

गोरखपुर। भारतीय जनता पार्टी के वोटर चेतन महा अभियान के अंतर्गत मतदाता सूची के पुनरीक्षण हेतु दिनांक 30 अक्टूबर से 5 नवंबर तक घर-घर संपर्क अभियान चलाया जा रहा है, जिस क्रम में प्रवासी के रूप में जिलाध्यक्ष युधिष्ठिर सिंह शक्ति केंद्र पाली बूथ नंबर 49, 60,62 में घर घर सम्पर्क करते हुए नये मतदाता को जोड़ने हेतु फार्म 6 को भरवाया। उन्होंने नये मतदाताओं से शतप्रतिशत मतदान करने की अपील भी की। इसी क्रम में पूर्व मंत्री अश्वनी त्रिपाठी ने शक्ति केंद्र बौंड्रा तथा भैंसला रिठुआखोर शक्ति केंद्र, नगर पंचायत अध्यक्ष प्रभाकर दुबे ने शक्ति केंद्र पनिका व तिलोरा, ब्लॉक प्रमुख शशी प्रताप सिंह ने शक्ति केंद्र रिठुआखोर, रमेश चंद्र गुप्ता जी ने शक्ति केंद्र सेमरडाड़ी, मनोज सिंह ने शक्ति केंद्र भरपहीं में संबंधित पार्टी पदाधिकारीओं एवं बुध अध्यक्षों के साथ सघन घर-घर संपर्क अभियान चलाया। जिसमें कुल मिलाकर लगभग 700 से अधिक लोगों को नए मतदाता के रूप में जोड़ा गया पाली भाजपा के सभी प्रवासी, संयोजक, प्रभारी एवं बूथ अध्यक्ष गणों ने पूरे मनोयोग से अपने-अपने दायित्व का निर्वहन किया। इस संपूर्ण अभियान का मंडल स्तर पर कुशल संयोजन इस अभियान के मंडल संयोजक त्रयम्बक उपाध्याय तथा सहसंयोजक श्रीमान विजय बहादुर सिंह ने किया।

भाजपा कार्यालय पर आदिल अमीन का भव्य स्वागत

गोरखपुर अवधनामा संवाददाता। रविवार को भारतीय जनता पार्टी महानगर कार्यालय बेनीगंज में महानगर अध्यक्ष राजेश गुप्ता ने सूफी संवाद महाभियान के जिला प्रभारी आदिल अमीन व सूफी संवाद के सह प्रभारी मोहम्मद वाजिक खान शिबू का स्वागत माला पहना करके किया और कहा की आप लोग निरंतर काम कर रहे हैं सूफी संवाद द्वारा अपने मुस्लिम भाइयों को मोदी जी की जो भी योजनाएं मुस्लिम भाइयों के लिए है उन तक आप लोग पहुंचाएं। आदिल अमीन ने कहा की पार्टी व आप के आदेश के अनुसार काम किया जाएगा । इसके अलावा हमारे प्रदेश अध्यक्ष डॉक्टर एहतेशाम हुदा के निर्देश पर हम सभी भारतीय जनता पार्टी की जो भी नीतियां हैं उनको अपने मुस्लिम भाइयों को बताएंगे। शिबू खान ने कहा हम लोग निरंतर सीरम योगी जी के कार्यों का निरंतर प्रचार प्रसार करते चले आए हैं आगे भी करेंगे। इस मौके पर कार्यालय पर वरिष्ठ समाजसेवी दुर्गेश श्रीवास्तव शाहरुख खान फैजान खान फहद हसन मोहम्मद आसिफ हसीब रहमान सुल्तान खान आदि लोग उपस्थित रहे हैं।

लोकतंत्र की रीढ़ हैं मतदाता: भूपेंद्र सिंह

देवरिया अवधनामा संवाददाता। वोटर चेतना महाअभियान के तहत आज देवरिया के गौरीबाजार मंडल के ग्राम सभा असनहर के बूथ संख्या 92 व 93 पर पहुंच जिलाध्यक्ष भूपेंद्र सिंह ने नए मतदाता बनाने के अभियान में हिस्सा लिया और नए मतदाता बनाए। इस अवसर पर भूपेंद्र सिंह ने कहा कि सशक्त लोकतंत्र की दृष्टि से यह महत्वपूर्ण है कि हर मतदाता को मतदान का अधिकार मिले। ऐसे में यह अभियान आगामी लोकसभा के चुनाव हेतु बेहद जरूरी है। नए मतदाताओं का नाम जोड़ना और अन्य का सत्यापन और सुधार किया जाना है। जिलाध्यक्ष ने इस मौके पर इस अभियान में जुटे कार्यकर्ता साथियों और बूथ स्तरीय कर्मचारियों का उत्साह बढ़ाया एवं उनका धन्यवाद भी किया। साथ मे वोटर चेतना अभियान के सायोंजक अजय उपाध्याय, मनीष मल, विजय बेलदार आदि उपस्थित रहे।

योग्यता आधारित हुई छात्रवृत्ति परीक्षा

अमेठी। राजकीय बालिका इंटर कॉलेज सहित जिले के कई राजकीय विद्यालयों में राष्ट्रीय आय एवं योग्यता आधारित छात्रवृत्ति परीक्षा आयोजित की गई। परीक्षा में छात्र छात्राओं ने उत्साह के साथ परीक्षा में शामिल हुए। राजकीय बालिका इंटर कालेज में केन्द्र व्यवस्थापक एवं विद्यालय की प्रधानाचार्या डा फूलकली गुप्ता के नेतृत्व में राष्ट्रीय आय एवं योग्यता आधारित छात्रवृत्ति परीक्षा का आयोजन किया गया। जिसमें कुल परीक्षार्थियों की सं 250 रही । जिसमें 121 बालक एवं 129 बालिकाएं थीं। जिसमें 35 बालक और 46 बालिकाएं अनुपस्थित रहीं । दिव्यांग छात्रा को एक घंटे का अतिरिक्त समय दिया गया। 18 शिक्षक शिक्षिकाओं ने कक्ष निरीक्षक की भूमिका निभाई। वहीं जिले के नौ परीक्षा केंद्रों पर हुई परीक्षा में कुल 1521छात्र छात्राएं शामिल हुए। उमारमण राजकीय इंटर कालेज जामो जी जी आई सी मुसाफिरखाना जी जीआई सी शाहगढ़ राजकीय बालिका इंटर कालेज गौरीगंज जी जी आई सी फुरसतगंज जी जी आई सी फतेपुर जी आई सी इंहौना और जी जी आई सी बाज़ार सुकुल को परीक्षा केंद्र बनाया गया था।

ग्रापए कुशीनगर जिला कार्यकारणी की बैठक

ग्रापए का सदस्यता ग्रहण कराते जिलाध्यक्ष शैलेष

अवधनामा ब्यूरो

कुशीनगर। ग्रामीण पत्रकार एसोसिएशन कुशीनगर जिला कार्यकारणी की बैठक रविवार को जिलाध्यक्ष शैलेश कुमार उपाध्याय की अध्यक्षता में एमआरएम पैलेस में हुई। बैठक में नव वर्ष 2024 की सदस्यता, तहसीलो में आयोजित होने वाले कार्यक्रम, पत्रकारो की समस्याओ पर चर्चा हुई। जिलाध्यक्ष श्री उपाध्याय ने बैठक को सम्बोधित करते हुए कहा कि 2024 की सदस्यता शुरू शुरू हो गयी है। तय हुआ की पत्रकारो के समस्याओ के समाधान हेतु शिघ्र ही जिलाधिकारी से मिला जाय। संचालन जिला महासचिव अमरनाथ पाण्डेय ने किया। बैठक में जिला कोषाध्यक्ष सतीष चन्द्र दूबे, जिला सचिव कामख्या नारायण मिश्र, तहसील अध्यक्ष तमकुही पारसनाथ पाण्डेय, कसया कृष्ण मोहन पाण्डेय, खड्डा महेन्द्र पाण्डेय पडरौना हरिशंकर चौबे, कसानगंज फणेन्द्र पाण्डेय, ब्लाक अध्यक्ष नेबुआ गिरिजेश मल्ल, सुकरौली मनोज यादव, विशुनपुरा विश्वजीत राय, नर्वदा सिंह, चन्द्रप्रकाश श्रीवास्तव, वेदप्रकाश त्रिपाठी, मनोज मिश्र, जाहिद हुसैन, अशोक सिंह, वेद मिश्रा, ओमप्रकाश श्रीवास्तव, अनिल जायसवाल, गोविन्द रौनियार, अजय तिवारी, संजय उपाध्याय, ऋषिकान्त मिश्र, जितेन्द्र दूबे, ओमप्रकाश पाण्डेय, सूर्यप्रकाश तिवारी, सत्यनारायण चौरसिया, अखिलेश तिवारी, अजय दीक्षित, प्रमोद सिंह, राजू गुप्ता, सूरजभान भारती, अजीत यादव आदि उपस्थित रहें।

भाजपा है तो विश्वास है भाजपा है तो भरोसा है: रविन्दर कुशवाहा

सलेमपुर अवधनामा संवाददाता। सलेमपुर के बरडीहा दलपत के बूथ संख्या 158,159 एवम 160 पर सांसद रविन्दर कुशवाहा ने पार्टी कार्यकर्ताओं के साथ वोटर चेतना महाअभियान के तहत घर-घर संपर्क कर पात्र नये मतदाताओं को जोड़ने के लिए अभियान चलाया। सांसद रविन्दर कुशवाहा ने घरों में जाकर व्यक्तिगत रूप से संपर्क किया और अभियान की जानकारी देते हुए बताया कि मतदाता सूची के सत्यापन, नये मतदाताओं के पंजीकरण एवं मतदाता सूची में सुधार करने के लिए भाजपा द्वारा भी 'वोटर चेतना अभियान चलाया जा रहा है।जिसमे जो 18 साल की उम्र पूरी कर चुके है या 1 जनवरी 2024 को 18 साल की उम्र पूरी करने वाले है उनके फार्म भरवा कर मतदाता बनाना है। जिनकी मृत्यु हो चुकी है या ये स्थान छोड़कर अन्य कहीं चले गये है अथवा फर्जी नाम मतदाता सूची में जुड़ा हो ऐसे मतदाताओं को नाम हटवाने के लिए फार्म भरवाना है। उन्होंने कहा कि भाजपा है तो भरोसा है, भाजपा है तो विकास है। केंद्र की मोदी और प्रदेश की योगी सरकार ने महत्वपूर्ण कार्य किये है। उक्त कार्यक्रम में अमित सिंह बबलू, बृजेश धर दुबे, संजय दूबे, अजय दूबे वत्स, विष्णुकांत तिवारी, प्रभाकर दूबे, आनंद कुशवाहा, अशोक कुशवाहा, कृष्णा मिश्रा आदि मौजूद रहे।

विपक्ष को पटखनी दे मतदाता फिर चुनेंगे भाजपा

देवरिया अवधनामा संवाददाता। वोटर चेतना महाअभियान के तहत देवरिया नगर के बूथ संख्या 203-204 पर शामिल होते सदर विधायक डॉ. शलभ मणि त्रिपाठी ने कहा कि वोटर चेतना महा अभियान का उद्देश्य भारतीय नागरिकों को मतदान के महत्व के बारे में जागरूक करना है। यह अभियान वोटर के लिए जागरूकता फैलाने का एक मिशन है। इस अभियान में हम सभी शामिल हो अधिक से अधिक लोगों को मतदाता बनाये। हमारे बनाये यही मतदाता फिर 2024 में विपक्ष को पटखनी देकर भाजपा को चुनेंगे। इस दौरान जिला मंत्री निर्मला गौतम, मीडिया प्रभारी अम्बिकेश पाण्डेय, नगर अध्यक्ष संजय पाण्डेय, निरंजन शुक्ला, राज दीक्षित, आनंद दीक्षित, संजय तिवारी, दीपक श्रीवास्तव, अमन शुक्ला, अखिलेश मिश्रा, शिवेन्द्र गिरी, अविनाश श्रीवास्तव आदि रहे।

रक्तदान का आयोजन करना महादान है

अवधनामा संवाददाता

गोरखपुर। ऑल इंडिया एक्स सर्विसमैन बैंक एम्पलाई एवं श्री गुरु नानक देव निशुल्क रक्तदान सेवा सोसायटी द्वारा एक रक्तदान शिविर श्री गुरु गोरक्षनाथ ब्लड बैंक के सहयोग से पाम पैराडाइज़ कम्युनिटी हॉल, गोरखपुर में आयोजित किया गया। इस अवसर पर गुरु श्री गोरक्षनाथ चिकित्सालय स्थित ब्लड बैंक के प्रभारी डॉ अवधेश अग्रवाल ने ऑल इंडिया एक्स सर्विसमैन बैंक एम्पलाई संस्थान के सभी पदाधिकारियों एवं उनसे जुड़े सदस्यों को बहुत बहुत धन्यवाद कहा । उन्होंने कहा की वर्तमान में डेंगू से पीड़ित मरीजों को प्लेटलेट्स की अति आवश्यकता है और ऐसे में संस्था ने रक्तदान कर सराहनीय कार्य किया है। श्री गुरु नानक देव निशुल्क रक्तदान सेवा सोसायटी के प्रति भी अपना धन्यवाद ज्ञापित करते हुए उन्होंने कहा की सोसायटी द्वारा रक्तदान का आयोजन करना महादान है। वहीं रक्तदाताओं को धन्यवाद दिया की वर्तमान में उनके रक्तदान से प्लेटलेट्स की कमी को कुछ हद तक दूर किया जा सकता है। आज की रक्तदान शिविर में ऑल इंडिया एक्स सर्विसमैन बैंक एम्पलाई के अध्यक्ष अरविंद कुमार सिंह, सचिव अजय कुमार मद्धेशिया, प्रदेश महामंत्री राजू सिंह, महामंत्री राजेश सिंह सहित संजीव कुमार सिंह, देवेश कुमार मिश्र, विकेश कुमार, अनिल कुमार निषाद, ऋषभ अग्रवाल, भानु प्रताप सिंह, संतोष कुमार सिंह, सुनीत, वन्दना सिंह, संस्कृति सिंह, संगीत कुमार सहित 30 महादानियों ने रक्तदान किया। इस अवसर जसपाल सिंह अध्यक्ष, गुरुद्वारा श्री गुरुसिंह सभा, जटाशंकर एवं श्री गुरु नानक देव निशुल्क रक्तदान सेवा सोसायटी, ब्लड बैंक के टेक्नीशियन स्टाफ उपस्थित रहे।

समस्त मतदान केंद्रों पर विशेष कैंप का किया गया आयोजन

देवरिया अवधनामा संवाददाता। विशेष संक्षिप्त मतदाता सूची पुनरीक्षण महाअभियान के अंतर्गत आज समस्त मतदान केंद्रों पर विशेष कैंप का आयोजन किया गया। विशेष कैंप के दौरान युवा मतदाताओं में विशेष उत्साह देखा गया। एडीएम प्रशासन गौरव श्रीवास्तव ने बीआरडी पीजी कॉलेज, मतदान केंद्र औरा चौरी, जंगल सहजौली, बोडिया अनन्त तथा महुअवा का निरीक्षण किया गया।महुअवा स्थित मतदान केंद्र में कोई बीएलओ नहीं मिला, जिस पर एडीएम प्रशासन ने गहरी नाराजगी व्यक्त की और निर्वाचन कार्य में शिथिलता बरतने पर बीएलओ के विरुद्ध कार्रवाई का निर्देश दिया। एडीएम प्रशासन ने बताया कि विशेष पुनरीक्षण अभियान के दौरान एक जनवरी 2024 को 18 वर्ष की आयु पूर्ण करने वाले युवाओं का नाम मतदाता सूची में शामिल किया जा रहा है। इसके अतिरिक्त ऐसे अन्य लोग जो आयु संबन्धी अर्हता पूरी करते हों और उनका नाम मतदाता सूची में न हो वे भी अपना नाम जुड़वा सकते हैं। नए मतदाताओं को अपना नाम मतदाता सूची में जुड़वाने के लिए फॉर्म-6 भरना होगा। यदि किसी मतदाता की मृत्यु हो चुकी है अथवा कोई किसी अन्य क्षेत्र का मतदाता बन चुका है, वो फॉर्म 7 भरकर अपना नाम सूची से विलोपित करा सकता है। इसी प्रकार यदि किसी मतदाता के नाम में कोई गलती है तो वह फॉर्म 8 भरकर सही करा सकता है। उन्होंने बताया कि मतदाता सूची में पंजीकरण कराने हेतु आगामी विशेष तिथियां 25 नवंबर, 26 नवंबर 02 दिसम्बर तथा 03 दिसम्बर निर्धारित की गयी है। इसके अतिरिक्त मतदाता एंड्रॉयड स्मार्टफोन धारक गूगल प्लेयस्टोर से वोटर हेल्पलाइन एप डाउनलोड करके अथवा www.voters.eci.gov.in पर भी आवेदन कर सकते हैं।

मारुति वैन व बाईक की सीधी टक्कर, चार घायल

अवधनामा ब्यूरो

कुशीनगर। अहिरौली बाजार थाना क्षेत्र के हाटा पिपराइच मार्ग पर झुंगहिया पेट्रोल पम्प के के निकट मारुति बैन व बाइक की आमने-सामने टक्कर हो गई जिसमें चार लोग गंभीर रूप से घायल हो गए। मिली जानकारी के अनुसार अहिरौली बाजार थाना क्षेत्र के खोड्डा के टोला अकटहिया अंशू उम्र 10 वर्ष, शिवम 11 वर्ष, सत्यम 13 वर्ष बैन में बैठ कर घूमने के लिए अहिरौली बाजार की तरफ जा रहा था और अमित गुप्ता उम्र 45 वर्ष थाना क्षेत्र के भड़कुलही निवासी किसी काम से तीनहवा के तरफ जा रहा था जैसे ही वे दोनों झुंगहिया पेट्रोल पम्प के निकट पहुंचे तभी मारुति बैन व बाइक सवारों की आमने-सामने टक्कर हो गई जिसमें चार घायल हो गए। जिसमें अमित गुप्ता बुरी तरह घायल हो गया। राहगीरों ने पुलिस को सूचना दिया घटना स्थल पर पुलिस पहुंची और परिजनों को बताया।अमित के परिजन निजी साधन से गोरखपुर राणा हॉस्पिटल ले गए जहां इलाज चल रहा है। शेष घायलों का इलाज घर पर चल रहा है।

मोदी के नेतृत्व में हैट्रिक बनायेगी भाजपा: रमापति

देवरिया अवधनामा संवाददाता। भारतीय लोकतंत्र में मतदान एक महत्वपूर्ण अधिकार है। मतदान का अधिकार न केवल एक नागरिक का अधिकार भर नहीं होता बल्कि एक सशक्त और मजबूत राष्ट्र के निर्माण का जरिया भी है। जिम्मेदार नागरिक इसका प्रयोग करके ही अच्छी सरकार का चयन कर लोकतंत्र की नींव को मजबूत बना सकते हैं। उक्त बातें सदर सांसद डा.रमापतिराम त्रिपाठी ने वोटर चेतना महाअभियान के तहत देवरिया नगर मण्डल द्वारा बूथ संख्या 170-171 पर लोगो को नये मतदाता बनाने का फार्म भरवाया और उपस्थित लोगों से कहा की जो लोग 18 वर्ष की आयु पूरी कर चुके है, उनसे सम्पर्क कर उन्हें मतदाता जरूर बनवाये। इस अभियान में सभी कार्यकर्ता पूरी ईमानदारी, मेहनत और ऊर्जा के साथ लगकर सफल करे क्योंकि यह अभियान ही तीसरी बार केन्द्र में भाजपा की सरकार प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में हैट्रिक बनायेगी। इस दौरान नगर अध्यक्ष संजय पाण्डेय,मीडिया प्रभारी भाजपा अम्बिकेश पाण्डेय, संजय तिवारी, दुष्यंत सिंह, अखिलेश मिश्रा, नित्यानंद पाण्डेय, हंसनाथ यादव, वीरेन्द्र सिंह, दिनेश तिवारी, राजू पाण्डेय, नन्हे मिश्रा, अक्षयवर पाण्डेय, ब्रह्मा सिंह आदि रहें।

हम कांग्रेस के कार्यकर्ता भाजपा सरकार की दमनकारी नीतियों से नहीं डरते

अवधनामा संवाददाता

सुल्तानपुर। कांग्रेस पार्टी का विधानसभा सदर (जयसिंहपुर) में मोतिगरपुर ब्लाक के नानेमऊ टिकरे गांव में दलित गौरव संवाद कार्यक्रम आयोजित हुआ। जिलाध्यक्ष अभिषेक सिंह राणा ने दर्जनों लोगों का दलित अधिकार मांग पत्र भरा।

कहा कि हम कांग्रेस के कार्यकर्ता भाजपा सरकार की दमनकारी नीतियों से नहीं डरते। रविवार को कांग्रेस ब्लाक अध्यक्ष राहुल मिश्र के संयोजन में नानेमऊ के टिकरे दलित बस्ती में आयोजित दलित गौरव संवाद कार्यक्रम में जिलाध्यक्ष अभिषेक सिंह राणा ने मौजूद लोगों का दलित अधिकार मांग पत्र भरा। कहा कांग्रेस ही सबकी सच्ची हितैषी है। संघर्ष के बल पर देश को आजाद कराया। सरकार बनी तो जमींदारी उन्मूलन खत्म किया, भूमिहीन को जमीन का पट्टा देकर अधिकार देने के साथ ही सर्व समाज की उन्नति के लिए कार्य किया। मनमोहन सिंह कि सरकार में सबके हितो को ध्यान में रखकर खाद्य सुरक्षा बिल व मनरेगा योजना , सूचना का अधिकार जैसी योजना लागू की। इस योजना से प्रेरणा लेकर बिदेशो में सरकार ने इस योजना का विरोध किया था। कोरोना काल में इसी योजना का लोगों को लाभ मिला।

नेता राहुल गांधी ने सरकार की गलत नीतियों का सदन से सड़क तक विरोध किया तो कुचक्र रचकर लोक सभा सदस्यता रद्द कर बंगला खाली कर दिया गया लेकिन वह डरे नहीं सरकार की गलत कार्यो का विरोध करते रहे समय आ गया है देश में लोकतंत्र स्थापित रहे 2024 लोकसभा में कांग्रेस का साथ दें और सरकार बनाकर लोकतंत्र स्थापित करें। कार्यक्रम में जिला उपाध्यक्ष जय प्रकाश पाठक, ब्लाक उपाध्यक्ष फिरतूराम, पूर्व बीडीसी मंगेलाल, ओमप्रकाश, राम कमल, रजित राम, करुणा शंकर, धर्मेंद्र श्रीवास्तव, सत्यनाम आदि रहे।

सम्पूर्ण समाधान दिवस में पहुची जिला पंचायत अध्यक्ष ऊषा सिंह,सुनी समस्याएं

सुलतानपुर अवधनामा संवाददाता। उप जिलाधिकारी बल्दीराय विदुषी सिंह की अध्यक्षता में बल्दीराय तहसील सभागार में सम्पूर्ण समाधान दिवस का आयोजन किया गया।सम्पूर्ण समाधान दिवस में जिला पंचायत अध्यक्ष ऊषा सिंह पहुँची। उन्होंने लोगों की समस्याओं को सुना। जिला पंचायत अध्यक्ष ने अधिकारियों को जल्द से जल्द समस्याओं का निस्तारण करने को कहा। नायाब तहसीलदार गुलाब सिंह,बीडीओ सत्य नारायण सिंह,थानाध्यक्ष बल्दीराय अमरेंद्र बहादुर सिंह,एसडीओ विद्युत विभाग अरुण यादव व खंड शिक्षा अधिकारी बल्दीराय रोजी सिंह सहित अन्य तहसील स्तरीय अधिकारियों की उपस्थिति में किया गया।उप जिलाधिकारी द्वारा जनता की समस्याओं को बहुत ही गम्भीरता के साथ सुनने के उपरान्त विभागीय अधिकारियों के माध्यम से मौके पर ही समस्याओं का निराकरण कराने के लिए आवश्यक दिशा निर्देश दिये। कुल 96 शिकायतें आई। जिसमें राजस्व विभाग 54,पुलिस विभाग 15, शिक्षा विभाग 3, चकबंदी विभाग 2, विकास विभाग 14 व पूर्ति विभाग 6 शिकायतें आई।जिसमें से दो शिकायतों का मौके पर निस्तारण किया गया।

सुल्तानपुर की धरती पर हवन होगा,अयोध्या में भगवान श्री राम मंदिर निर्माण कार्य पूरा होगा: यमुनाचार्य जी

सुल्तानपुर, भदैंया अवधनामा संवाददाता। ब्लॉक क्षेत्र के अंतर्गत अभियां कलां ग्राम सभा में चल रही संगीतमयी श्री मद् भागवत कथा ज्ञान यज्ञ के तीसरे दिन शनिवार को कथा व्यास कुल गुरु श्री यमुना चार्य जी महाराज ने ध्रुव जी की कथा सुनाते हुए कहा की अयोध्या में श्री राम मंदिर निर्माण कार्य चल रहा है।यह कथा तो कृष्ण भगवान की है। वही राम है।वही श्याम है। इसका अंत नहीं है।चाहे कृष्ण कहो या राम दोनों एक ही है।आप के ग्राम सभा में कथा भगवान श्री कृष्ण की चल रही है।और अयोध्या में भगवान श्री राम मंदिर का निर्माण हो रहा है। तो यह कथा जो सुनने आप लोग यहां आए हैं।इसका महत्व इसलिए ज्यादा है। की जब कथा का हवन होगा तो उधर अयोध्या में भगवान श्री राम मंदिर का निर्माण कार्य पूरा होगा। ध्रुव जी ने 5 वर्ष की अवस्था में कठोर तपस्या करके भगवान को प्रगट किया और भक्ति से भगवान को अपने बस में कर लिया जब भगवान आए भगवान को देखकर ध्रुव जी कुछ नहीं जानते थे लेकिन 12 श्लोकों से उन्होंने भगवान की स्थिति प्रार्थना की हे गोविंद आप मेरे अंदर हो इसीलिए मैं बोल पाता हूं आपकी वजह से इस संसार में सब कुछ बोल रहा हूं।जो कुछ बोल रहा हूं। आप सुन रहे हैं।

विद्या म्यूजिक एण्ड डांस इंस्टीट्यूट के बच्चे पारंपरिक नृत्य प्रतियोगिता में अव्वल

ललितपुर अवधनामा संवाददाता। टेन न्यूज ग्रेटर नोएडा के सहयोग एवं गलगोटिया कालेज ऑफ इंजीनियरिंग एण्ड टेक्नोलॉजी ग्रेटर नोएडा के ऑडिटोरियम में आयोजित पारंपरिक नृत्य प्रतियोगिता में ग्रेटर नोएडा के प्रसिद्ध संगीत एवं नृत्य स्कूल विद्या म्यूजिक एंड डांस इंस्टीट्यूट की छात्राओं ने बंगला नृत्य की शानदार प्रस्तुति दी और सभी आगंतुकों का मनमोह लिया। बांग्ला नृत्य के सफल मंचन पर कार्यक्रम व्यवस्थापक प्रभाकर देशमुख ने बच्चों द्वारा दी गई प्रस्तुति पर सभी बच्चों और अभिभावकों को धन्यवाद प्रेषित किया तथा इस नृत्य की निर्देशिका डा.प्रीति की हृदय से प्रशंसा की। विद्या म्यूजिक एंड डांस इंस्टीट्यूट के केंद्र व्यवस्थापक विनय सिन्हा ने बताया कि हमारा स्कूल ग्रेटर नोएडा का एक मात्र केंद्र है जो कला संस्कृति मंत्रालय से अधिकृत होने के साथ साथ प्रयाग संगीत समिति प्रयागराज से भी मान्यता प्राप्त इंस्टीट्यूट है। आयोजक मंडल ने विद्या म्यूजिक एण्ड डांस इंस्टीट्यूट की पूरी टीम को सफल मंचन के लिए बधाई दी। इंस्टीट्यूट की निर्देशिका डा.प्रीति ने बताया कि विद्या म्यूजिक एण्ड डांस इंस्टीट्यूट अपने स्थापना के 5 वर्ष पूर्ण कर चुका है तथा शास्त्रीय गायन नृत्य कथक, भरत नाट्यम सीखने का एकमात्र इंस्टीट्यूट है।

168 निर्माण श्रमिकों को मिला शासन की योजनाओं का लाभ

अवधनामा संवाददाता

मथुरा। चालू सत्र में 168 निर्माण श्रमिकों को शासन की विभिन्न योजनाओं का लाभ मिला है। जनपद में 1.80 लाख श्रमिक पंजीकृत हैं। जिनमें से सक्रिय श्रमिकों की संख्या 55 हजार है। लगभग 1470 आवेदन इस साल श्रम विभाग में पहुंचे। जिनमें से 1123 का निस्तारण कर दिया गया है, शेष पर कार्यवाही चल रही है। जांच प्रक्रिया के बाद पात्र पाए गए 168 श्रमिकों को योजना का लाभ मिला है। विशेष रूप से निर्माण श्रमिकों के लिए विभिन्न कल्याणकारी योजनाएं चलाई जाती हैं।

जैसे कन्या विवाह योजना, अगर कोई मजदूर कार्यालय में पंजीकृत है तो उनकी बेटी की शादी के लिए उन्हें 55 हजार रुपये एकमुश्त भुगतान करते हैं अगर अंतरजातीय विवाह करते हैं तो 61 हजार रुपये हैं। हमारे यहां मंडल स्तर पर सामूहिक विवाह भी होते हैं अगर सामूहिक विवाह में मजदूर की बेटी भी शामिल होती है तो 70 हजार रुपये एकमुश्त भुगतान किया जाता है। इसके अलावा अगर कोई पंजीकृत कर्मचारी को बेटा पैदा होता है तो बच्चे को कुपोषण से बचाने के लिए सरकार ने मातृत्व शिशु बालिका मदद योजना शुरू की हुई है। जिसके अंतर्गत लड़का पैदा होने पर एकमुश्त 20 हजार तथा लडकी पैदा होने पर एकमुश्त 25 हजार रुपये भुगतान करते हैं। लडकी की 25 हजार रूपये की श्रमिक विभाग की ओर से एफडी करा दी जाती है।

श्रमिकों से अपील है कि निर्माण श्रमिक सबसे पहले श्रम विभाग में पंजीयन करायें। पंजीयन करा के लिए उम्र 18 साल से लेकर 60 साल के बीच होनी चाहिए। कहीं निर्माण कार्य में लगे हों जहां काम करते हैं उनसे एक नियोजन प्रमाणपत्र ले लें। रजिस्ट्रेशन की प्रक्रिया सीएससी के माध्यम से होती है। सीएससी की भी श्रमिक को ही देय है। इसके बाद श्रमिक योजना के लिए पत्र हो जाते हैं।

एमएम पाल, सहायक श्रम आयुक्त मथुरा

सपा के बूथ जागरण व रात्रि प्रवास में रही भीड़

अवधनामा संवाददाता

अमृतपुर फर्रुखाबाद। अमृतपुर विधानसभा के अमृतपुर ग्राम में समाजवादी पार्टी का बूथ जागरण एवं रात्रि प्रवास कार्यक्रम का आयोजन हुआ। इस कार्यक्रम के आयोजक जिला पंचायत सदस्य मनोज मिश्रा ने अमृतपुर विधानसभा के अंतर्गत बूथ संख्या 45 से बूथ संख्या 50 तक के सर्व समाज के लोगों को आमंत्रित किया था। इस कार्यक्रम की शुरुआत समाजवादी पार्टी के जिला अध्यक्ष चंद्रपाल सिंह यादव की अध्यक्षता में की गई।

इस अवसर पर भारी भीड़ को देखते हुए चंद्रपाल सिंह यादव ने जिला पंचायत सदस्य मनोज मिश्रा की पीठ थपथपाई और कहा इतनी भारी संख्या की भीड़ यह जताती है कि आने वाला समय समाजवादी पार्टी का है जिसमें सभी धर्म और जाति के लोगों का सम्मान होता है। जिला पंचायत सदस्य मनोज मिश्रा द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम में कुछ विलंब से पहुंचे अमृतपुर विधानसभा के पूर्व प्रत्याशी डॉक्टर जितेंद्र सिंह यादव और लोकसभा प्रभारी डॉक्टर नवल किशोर शाक्य ने अपने विचार व्यक्त किए। डॉ जितेंद्र यादव ने कहा कि आज जिस प्रकार भारतीय जनता पार्टी धर्म के नाम का डिंडोरा सड़कों पर पीट रही है वह साफ जाहिर करता है कि भाजपा धर्म का इस्तेमाल सिर्फ वोट की राजनीति के लिए करती है। उन्होंने कहा गंगापार क्षेत्र से उनका पुराना रिश्ता है। उनके पूर्वज सन 1914 में यही रहते थे। लोकसभा प्रभारी डॉक्टर नवल किशोर शाक्य ने कहा कि अगर सपा प्रमुख अखिलेश यादव के नेतृत्व में नई सरकार बनती है तो गंगा एक्सप्रेसवे से लिंक रोड बनवाकर एक्सप्रेसवे से अधिक सुंदर रोड बनवाया जाएगा। जिससे अमृतपुर क्षेत्र की जनता का विकास हो सकेगा।उन्होंने कहा आज देश के अमीरों का हजारों करोड़ों का कर्ज माफ किया जा रहा है परंतु गरीब किसान द्वारा दस हजार कर्ज वापस न दे पाने पर उसके दरवाजे पर पुलिस पहुंच रही है। इस अवसर पर वरिष्ठ नेता युनूस अंसारी जिला उपाध्यक्ष जहान सिंह लोधी जिला पंचायत सदस्य मनोज मिश्रा जिला मीडिया प्रभारी विवेक यादव सुधांशु पाठक बूथ एवं जोन प्रभारी रूकमंगल सिंह ब्लॉक अध्यक्ष राजेपुर ने अपने विचार व्यक्त किए।

त्यौहारों के मौसम में विद्युत विभाग की अकर्मण्यता के चलते जनता बेहाल

अवधनामा संवाददाता

ललितपुर। स्थानीय कम्पनी बाग में बु.वि.सेना प्रमुख हरीश कपूर टीटू की अध्यक्षता में एक महत्वपूर्ण बैठक आहूत की गई। बैठक में दीपावली त्योंहार के मद्देनजर विद्युत विभाग की अकर्मण्यता को लेकर रोष व्यक्त किया गया।

इस मौके पर विद्युत विभाग के खिलाफ जमकर नारेबाजी की गई। सेना प्रमुख ने कहा कि महत्वपूर्ण त्योहारों के मौसम में मामूली फाल्ट होने पर पूरी रात-रात भर बिजली गायब रहती है। दीपावली जैसे महत्वपूर्ण त्यौहार के समय जनता जहां घरों की सफाई, पुताई आदि कामों में व्यस्त हैं लेकिन बिजली की आँख-मिचौनी के कारण व्यवधान उत्पन्न हो रहा है। कहा कि फाल्ट होने और मरम्मत होने की स्थिति का पता लगाने के लिए जनता जब विभाग द्वारा दिये गये मोबाइल पर फोन करती है तो विद्युत विभाग के संवेदनहीन जिम्मेदार कर्मचारी और अधिकारी फोन नहीं उठाते हैं और परेशान नागरिक मन मसोस कर रह जाते हैं। यहां तक कि अधिशासी अभियन्ता को भी फोन लगाने पर उनका फोन भी नहीं उठता है। अब ऐसी स्थिति में जनता अपनी गुहार किससे लगाये। उन्होंने कहा कि ऊपर से तो भरपूर बिजली जिले को मिल रही है परंतु ट्रान्सफार्मरों का उचित रखरखाव, मेन्टीनेन्स और स्थानीय फाल्ट के कारण बिजली घंटो तक गायब रहती है। यह भी कहा कि विद्युत विभाग में मेन्टीनेन्स स्टॉफ की भारी कमी है। स्टॉफ की कमी के कारण जो फाल्ट लगभग आधा घंटे में दूर हो जानी चाहिए उसको दूर करने में चार पांच घंटे या कभी कभी पूरी रात लग जाती है। बैठक में राजमल बरया, कदीर खां, राजकुमार कुशवाहा, बी.डी. चन्देल, प्रदीप, रामप्रकाश झा, रविकान्त गौतम, प्रकाश झा, जगदीश झा, रामप्रताप, संजू राजा, फूलसिंह, महिपाल, जाकिर, शंकर कुशवाहा, देवेन्द्र राजा, रोहित कुशवाहा, अमरसिंह बुन्देला, विनोद साहू, भैय्यन कुशवाहा, हनुमत, पुष्पेन्द्र शर्मा, अनिल अहिरवार, खुशाल बरार, नन्दराम कुशवाहा, गफूर खां, टिंकू सोनी, अमित जैन, कामता शर्मा आदि मौजूद रहे।

अन्नपूर्णा नेकी की दीवार का एसपी ने फीता काटकर किया शुभारंभ

अवधनामा संवाददाता

ललितपुर। अन्नपूर्णा सेवा संघ द्वारा अन्नपूर्णा भोजनशाला अन्नपूर्णा ऑक्सीजन बैंक अन्नपूर्णा एंबुलेंस सेवा अन्नपूर्णा क्लॉथ बैंक का निशुल्क संचालन पिछले कई सालों से लगातार किया जा रहा है। इसी क्रम में जनहित में जरूरतमंदों को पहनने के एवं आवश्यक सामग्री के लिए अन्नपूर्णा की नवीन योजना अन्नपूर्णा नेकी की दीवार का शुभारंभ मुख्य अतिथि एसपी मो.मुस्ताक के करकमलों से फीता काटकर किया गया। एसपी ने कहा कि जिस तरह से अन्नपूर्णा समाज के हित में कार्य कर रही है वह निश्चित रूप से अनुकरणीय है। भूखे को भोजन खिलाना सबसे अधिक अच्छा कार्य है और लगभग 1000 लोगों को अन्नपूर्णा सुबह शाम दोनों समय में लोगों को निशुल्क भोजन कराकर मानवता का अनुकरणीय उदाहरण पेश कर रही है। सीएमएस डा.राजेन्द्र प्रसाद ने कहा कि ऑक्सीजन जीवनदायिनी होती है। अन्नपूर्णा सेवा संघ द्वारा ऑक्सीजन गंभीर मरीजों के लिए उनके जीवन को रक्षा करने का कार्य करती है। डा.एमसी गुप्ता ने कहा कि एंबुलेंस सेवा मरीजों के निशुल्क भोजन हेतु गंभीर मरीजों के रेफर हेतु अन्नपूर्णा संस्था द्वारा प्रदान की जाती है जो कि गरीब मरीज के लिए वरदान का कार्य करती है। क्योंकि ललितपुर मध्य प्रदेश से घिरा हुआ क्षेत्र है जिसमें अधिकतर मरीज सागर ग्वालियर भोपाल जाना पसंद करते हैं तो सरकारी एंबुलेंस नहीं जाती है ऐसे में अन्नपूर्णा संस्था की एंबुलेंस मददगार साबित होती है। डा.चेतन ने अन्नपूर्णा क्लॉथ बैंक की प्रशंसा करते हुए कहा कि पिछले वर्ष शुरू हुआ क्लॉथ बैंक मरीज के साथ आए हुए तीमारदारों को रात्रि में ठंड से थेथार्न नहीं देता है उनको गद्दा और कंबल अन्नपूर्णा क्लॉथ बैंक द्वारा प्रदान किया जाता है रात्रि उपयोग के बाद ईमानदार उनको वापस क्लॉथ बैंक में जमा कर देता है।

आलू के रेट में भारी गिरावट से किसान भुखमरी के कगार पर

गाजीपुर। पूर्वांचल में आलू के पैदावार के लिए प्रसिद्ध है। आलू का दाम अचानक घट जाने से किसान भुखमरी के कगार पर है। किसान अपने आलू की लागत से आधे मूल्य पर खरीदार का इंतेजार कर रहे हैं लेकिन कोई खरीदार नही मिलने से वह अपना आलू कोल्ड स्टोरेज में छोड़ रहे हैं जिससे कोल्ड स्टोरेज मालिक बेहाल हो गये हैं। वर्तमान में 36 कोल्ड स्टोरेज जिले में चल रहे हैं। आलू उत्पादन के समय 800 रुपया प्रति कुंतल खेत में बिक रहा था, अधिक के लालच में किसान आलू न बेच कर कोल्ड स्टोरेज में रख दिया था। आज कोल्ड स्टोरेज में कुल लागत किराया और बोरे को लेकर 1160 रुपये प्रति कुंतल हो रहा है। वर्तमान समय में कोल्ड स्टोरेज में आज आलू 500 से 600 रुपये कुंतल किसान बेच रहे हैं लेकिन कोई खरीदार नही मिल रहा है। इस संदर्भ में कोल्ड स्टोरेज एसोसिएशन के संरक्षक राजन सिंह ने बताया कि आलू का दाम बहुत कम हो गया है।

बैठक में पुनिरीक्षण की तैयारियों पर चर्चा

सीतापुर अवधनामा संवाददाता। कलेक्ट्रेट सभागार में रविवार को डिप्टी कलेक्टर आकांक्षा गौतम की अध्यक्षता में अर्हता विशेष संक्षिप्त पुनरीक्षण-2024 के संबंध में बैठक की गई। बैठक के दौरान उन्होंने बताया कि 27अक्टूबर को निर्वाचक नामावलियों का प्रकाशन हो चुका है। उन्होंने बताया कि आगामी लोकसभा सामान्य निर्वाचन के सकुशल क्रियान्वयन हेतु बूथ पर सभी बूथ लेवल अधिकारी रहेंगे। बूथ लेवल एजेण्ट बना लिये जायें। जिनसे आपस में परस्पर समन्वय बनाये रखा जाये। उन्होंने कहा कि जनपद में 18 से 19 वर्ष के मतदाताओं के ज्यादा से ज्यादा फार्म आ जायें। जिसमें दावे और आपत्तियां, जो भी होंगी, जनता के बीच चला जायेगा तो उसका निस्तारण भी जल्द से जल्द हो जायेगा। उन्होंने बताया कि मृतक मतदाता के 295, शिफ्ट मतदाता के 65 एवं डुप्लीकेट मतदाता के 108 फार्म प्राप्त हुये हैं। उन्होंने कहा कि बूथ संबंधी सभी तैयारी पूर्ण कर ली जाये ताकि निर्वाचन सकुशल सम्पन्न हो सके। इस समय हम सबको निर्वाचन संबंधी कार्यों पर ही विशेष ध्यान केन्द्रित करना होगा। उन्होंने स्वीप संबंधी कार्यों के विषय में भी जानकारी दी। लोकसभा के चुनाव में निर्वाचन आयोग द्वारा जारी वोटर लिस्ट ही मान्य होगी। पंचायत चुनाव वाली वोटर लिस्ट से इनका कोई लेना-देना नही होगा। इस मौके पर कई दलों के प्रतिनिधि भी मौजूद रहे।

संतोष बने राष्ट्रीय व्यापार मंडल इटावा के शहर अध्यक्ष

इटावा अवधनामा ब्यूरो। राष्ट्रीय व्यापार मंडल की कार्यकारिणी का विस्तार किया गया जिसमें राष्ट्रीय अध्यक्ष राज बाबू रस्तोगी के अनुमोदन एवं राष्ट्रीय महामंत्री सुधीर कांत शर्मा की सहमति से प्रदेश उपाध्यक्ष आदेश चौधरी की उपस्थित में जिलाध्यक्ष विकार अहमद ने इटावा शहर अध्यक्ष संतोष पाण्डेय को मनोनीत किया। जिला अध्यक्ष श्री अहमद ने नव मनोनीत शहर अध्यक्ष श्री पांडेय से अपेक्षा की है कि वे व्यापारियों के हितों की रक्षा के लिए मजबूती से कार्य करेंगे और व्यापार मंडल को आगे बढ़ाने का कार्य करेंगे तथा शहर की कार्यकारणी का शीघ्र गठन करेंगे। उक्त कार्यक्रम की अध्यक्षता राजेंद्र चौधरी ने की और संचालन जिला महामंत्री सुनील तिवारी एडवोकेट ने किया इस अवसर पर जिला उपाध्यक्ष राम प्रकाश चित्रवंशी,देवेंद्र मिश्र, अखिलेश तिवारी, संजय दुबे, अवनीश चौधरी सहित पदाधिकारीगण उपस्थित रहे। श्री पांडेय जी के मनोनयन पर अशोक कुमार दुबे, नासिर जलील, राम कुमार परिहार, अनिल तिवारी, सिकंदर, धर्मेंद्र दुबे,आकाश चौधरी, संजीव दुबे आदि के लोगों ने शुभकामनाएं और बधाइयां दी।

शक्ति अभियान फेज IV के तहत भिन्न-भिन्न स्थानों पर महिलाओं/बालिकाओं किया गया जागरूक

हमीरपुर अवधनामा संवाददाता। दिनांक 05.11.2023 को मिशन शक्ति अभियान फेज-IV के क्रम में जनपद पुलिस टीम द्वारा, अपने-अपने थाना क्षेत्र अन्तर्गत जाकर बालिकाओं/महिलाओं को आत्मरक्षा, गुड टच एवं बैड टच व उनके अधिकारों के सम्बन्ध में जागरुक किया गया। इसी क्रम में डायल *112 का उपयोग करने के बारे में बताया गया, बालिकाओं को विभिन्न हेल्पलाइन नंबर 112/ 1090/ 102/108/1098* आदि से अवगत कराया गया। साइबर अपराधों से बचाव के उपायों के सबन्ध में भी जानकारी दी गई। साथ ही उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा महिलाओं/ बालिकाओं हेतु चलाई जा रही विभिन्न योजनाओं के संबंध में जानकारी दी गई। तथा विभिन्न हेल्पलाइन नंबर व महिलाओं/बालिकाओं से सम्बंधित योजनाओं के पैम्फलेट वितरित किये गए।

संविधान बचाओ यात्रा का मथुरा में भव्य स्वागत

अवधनामा संवाददाता

- देश की सत्ता भाई से भाई को लड़ाने वालों के हाथः नौटियाल
- मथुरा ऐतिहासिक रूप से समतावादियों की नगरी है

मथुरा। अखिल भारतीय समता फाउन्डेशन जनपद मथुरा कार्यालय पर भीम आर्मी के राष्ट्रीय संयोजक भाई मनजीत नौटियाल साहब संविधान बचाओ यात्रा में मथुरा आगमन पर सर्वप्रथम अखिल भारतीय समता फाउंडेशन के कार्यालय कृष्णा नगर बिजली घर पहुंचे, यहां पर मां, उदय भास्कर जिला अध्यक्ष भीम आर्मी मथुरा एवं राजवीर सिंह के नेतृत्व में स्वाफा पहनाकर फूल माला पुट्ठका उड़ाकर, स्मृति चिन्ह भेंट कर गगनभेदी नारों के बीच जोशीला भव्य स्वागत किया है।

इस मौके पर अपने संबोधन में भाई मनजीत नौटियाल राष्ट्रीय संयोजक भीम आर्मी ने आगा करते हुए कहां मथुरा ऐतिहासिक रूप से समतावादियों की नगरी है, लेकिन वर्तमान में देश की सत्ता भाई को भाई से लड़ाने वालों के हाथ में है ,वह किसी कीमत पर सदियों से सटे हुए लोगों को राष्ट्र की मुख्य धारा में नहीं आने देना चाहते इसलिए संविधान को धीरे-धीरे समाप्त कर बदलने की साजिश कर रहे हैं ,जिसका बहुजन समाज मुंहतोड़ जवाब देगा साथ ही समता फाउंडेशन द्वारा किए जा रहे जनहितकारी कार्यों की प्रशंसा भी की इस मौके पर स्वागत करने वालों में राजवीर सिंह उदय भास्कर जिला अध्यक्ष भीम आर्मी मथुरा, गौरव कुमार, एमके गौतम प्रधानाचार्य, पन्नालाल भारतीय पूर्व इंस्पेक्टर रमेश सैनी लुकेश कुमार राही, आकाश बाबू, राजू माहौर, कैलाश बौद्ध, मेहताब सिंह, विनोद बघेल उमेश पंडित, चरण सिंह आदि मौजूद रहे।

तीन हत्यारोपी गिरफ्तार

अवधनामा संवाददाता

सीतापुर। महमूदाबाद कोतवाली ने तीन हत्यारोपियों को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने हत्या में प्रयुक्त कार व डंडा बरामद किया है। तीनों आरोपी लखनऊ के निवासी हैं। पुलिस ने तीनों को न्यायालय में पेश किया है। विगत 3 नवंबर को महमूदाबाद कोतवाली क्षेत्र के ग्राम खबीबपुर शारदा नहर के किनारे एक व्यक्ति अज्ञात शव मिला था। शव की शिनाख्त शत्रोहन पाल पुत्र रामप्रताप पाल निवासी मकान नंबर 104 बड़ी देवरिया थाना चिनहट जिला लखनऊ के रुप में हुई।

इस मामले में परिजनों की तहरीर पर पुलिस ने अजय सिंह पुत्र स्वर्गीय अजीत सिंह निवासी कन्हैयानगर मोहम्मदपुर खत्री गुडम्बा लखनऊ, नितिन सिंह पुत्र अखिलेश सिंह निवासी कल्यानपुर मोहम्मदपुर खत्री गुडम्बा लखनऊ, व जयेश कुमार सिंह पुत्र विश्व विजय सिंह निवासी 4 ए सनराइज अपार्टमेन्ट सेक्टर 10 इंसाफ नगर जिला लखनऊ को नामजद केस दर्ज किया था। महमूदाबाद कोतवाली पुलिस ने महमूदाबाद कोतवाली क्षेत्र के कैमहरा मोड़ कोल्ड स्टोर के पास नाकेबंदी की। यहां पर पुलिस ने अजय सिंह, नितिन सिंह, जयेश कुमार को गिरफ्तार किया है। वारदात के संबंध में एएसपी एनपी सिंह ने बताया कि आरोपियों की निशानदेही पर घटना में प्रयुक्त आलाकत्ल 1 हॉकी का डण्डा व चार पहिया वाहन बरामद किया गया है। उन्होंने बताया कि शत्रोहन प्रापर्टी डीलर का कार्य करते थे। गत 2 नवंबर को वैभव खण्ड गोमती नगर लखनऊ में जमीन को बेचने व खरीदने को लेकर शत्रोहन का अजय सिंह, नितिन सिंह, जयेश कुमार से विवाद हो गया। विवाद के चलते तीनों ने शत्रोहन की हॉकी के डण्डे से प्रहार हत्या कर दी। जिसके बाद शव को चार पहिया वाहन में रखकर थाना महमूदाबाद क्षेत्र में आए। यहां पर शव फेंक कर फरार हो गए थे। उन्होंने बताया कि आरोपियों को न्यायालय में पेश किया गया है। गिरफ्तारी करने वाली पुलिस टीम में दृप्रभारी निरीक्षक ओमवीर सिंह चौहान, उपनिरीक्षक अरविन्द कुमार कटियार, प्रदीप पाण्डेय, पुलिसकर्मी, मनोज कुमार सिंह, राजेन्द्र यादव, प्रमोद कुमार सिंह, मोहित चौधरी, साधु सरण, विकास शामिल हैं।

भारतीय ज्ञान परम्परा और भक्ति काव्य पर हुई संगोष्ठी

सुलतानपुर। राणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय में शनिवार को हिन्दी विभाग द्वारा भारतीय ज्ञान परम्परा और भक्ति काव्य विषय पर संगोष्ठी आयोजित की गई। संगोष्ठी में बतौर मुख्य वक्ता बोलते हुए प्राचार्य प्रोफेसर दिनेश कुमार त्रिपाठी ने कहा कि भारत की ज्ञान परम्परा प्राचीन और समृद्ध है। इसी के बल पर दुनिया में भारत का डंका बजता है। इसे सम्भालने और आगे बढ़ाने की जिम्मेदारी देश के विद्यार्थियों की है । असिस्टेंट प्रोफेसर ज्ञानेन्द्र विक्रम सिंह रवि ने कहा कि सामाजिक बदलाव में भारतीय भक्ति साहित्य की भूमिका महत्वपूर्ण है। भक्ति काव्य ने भारत की ज्ञान परम्परा को सरल शब्दों में जनमानस तक पहुंचाया है। एम ए प्रथम सेमेस्टर के छात्र आशुतोष पाण्डेय ने कहा कि भक्ति काव्य धारा ने देश में एक नये आंदोलन की शुरुआत की । एम ए तृतीय सेमेस्टर की छात्रा आकांक्षा सिंह ने बताया कि गोस्वामी तुलसीदास ने अपने काव्य के माध्यम से नई जनचेतना पैदा की। उनके बिना भक्ति काव्य की परम्परा पूरी नहीं हो सकती।

पत्रकार के निधन पर शोक जताया

सीतापुर अवधनामा संवाददाता। तंबौर थाना क्षेत्र के ग्राम सिकरी बेहटा निवासी

हरिओम शुक्ला पुत्र विजय शंकर शुक्ला एक हिंदी अखबार में पत्रकार थे। बुखार के कारण उनका निधन हो गया था। उनके निधन की सूचना से पत्रकारिता जगत में शोक की लहर है। पत्रकार हरिओम शुक्ला के निधन को लेकर पत्रकारों ने शोक जताया है। उपजा के जिलाध्यक्ष महेंद्र अग्रवाल ने शोक संवेदना व्यक्त करते हुए कहा कि पत्रकारिता जगत के लिए अपूर्णनीय क्षति है। उन्होंने कहा कि हमारी संवेदनाएं परिवार के साथ हैं। उनके निधन पर पत्रकार अनिल विश्वकर्मा, हिमांशू सिंह, अशोक यादव, संदीप श्रीवास्तव, अवनीश मिश्रा, अमित शुक्ला, रविंद्र तिवारी, पुलकित शर्मा, अनुज सक्सेना, विनीत शुक्ला, हरेंद्र यादव, राजीव बाजपेयी, जियाउल हक आदि ने शोक जताया है।

भारत और मलेशिया के बीच जारी संयुक्त सैन्य अभ्यास का हुआ समापन

ऑपरेशंस

संयुक्त सैन्य अभ्यास के दौरान दोनों देशों की सेनाओं ने मल्टी-डोमेन ऑपरेशंस की एक श्रृंखला को कवर किया गया।

उमरोई। भारतीय सेना और मलेशिया सेना के बीच मेघालय के उमरोई में जारी संयुक्त गुरिल्ला युद्ध सैन्य अभ्यास हरिमाउ शक्ति 2023 का रविवार को सफलतापूर्वक समापन हो गया। यह अभ्यास 23 अक्टूबर को शुरू हुआ था, जो पांच नवंबर तक चला। इस अभ्यास को दोनों देशों के बीच द्विपक्षीय संबंधों के मजबूत करने, दोनों देशों की सेनाओं की परिचालन क्षमताओं को बढ़ाने के लिए डिजाइन किया गया था। संयुक्त सैन्य अभ्यास के दौरान दोनों देशों की सेनाओं ने मल्टी-डोमेन ऑपरेशंस की एक श्रृंखला को कवर किया गया। इस श्रृंखला के तहत सामरिक अभ्यास और ड्रोन, मानव रहित हवाई वाहन और हेलीकॉप्टर जैसी आधुनिक प्रौद्योगिकियों के उपयोग पर ध्यान केंद्रित किया गया।

इस अभ्यास में मलेशिया की पांचवीं रॉयल बटालियन के सैनिकों और राजपूत रेजिमेंट के भारतीय कर्मियों ने एक दूसरे का सहयोग किया। मालूम हो कि दोनों देशों के बीच इस सैन्य अभ्यास उद्देश्य उप-पारंपरिक परिदृश्य में मल्टी डोमेन ऑपरेशन के संचालन के लिए सैन्य क्षमता को बढ़ाना है।

प्रशिक्षण अभ्यास के दौरान, दोनों देशों की सेनाओं ने एक संयुक्त कमान पोस्ट स्थापित किया। इस अभ्यास में दोनों पक्षों के करीब 120 जवान शामिल हुए। इस अभ्यास का पिछला संस्करण नवंबर 2022 में मलेशिया के क्लुआंग में आयोजित किया गया था।

किसी भी अदालत के फैसले को सीधे खारिज नहीं कर सकती विधायिका: सीजेआई डीवाई चंद्रचूड़

नई दिल्ली। प्रधान न्यायाधीश डीवाई चंद्रचूड़ ने शनिवार को कहा कि विधायिका अदालत के फैसले में खामी को दूर करने के लिए नया कानून बना सकती है, लेकिन उसे सीधे खारिज नहीं कर सकती है। एक कार्यक्रम को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि न्यायाधीश इस पर गौर नहीं करते हैं कि जब वह मुकदमों का फैसला करेंगे तो समाज कैसी प्रतिक्रिया देगा। सरकार की विभिन्न शाखाओं और न्यायपालिका में यही फर्क है। सीजेआई ने कहा, एक विभाजनकारी रेखा यह है कि अदालत का फैसला आने पर विधायिका क्या कर सकती है और क्या नहीं कर सकती है। अगर किसी विशेष मुद्दे पर फैसला दिया जाता है और इसमें कानून में खामी का जिक्र किया जाता है तो विधायिका

उस खामी को दूर करने के लिए नया कानून बना सकती है। विधायिका यह नहीं कह सकती कि फैसला गलत है और इसलिए हम फैसले को खारिज करते हैं। उन्होंने कहा कि विधायिका किसी भी अदालत के फैसले को सीधे खारिज नहीं कर सकती है। न्यायाधीश मुकदमों का फैसला करते समय संवैधानिक नैतिकता का अनुसरण करते हैं न कि सार्वजनिक नैतिकता का। यह तथ्य कि न्यायाधीश निर्वाचित नहीं होते हैं, यह हमारी कमजोरी नहीं, बल्कि हमारी ताकत है।जस्टिस चंद्रचूड़ ने कहा, अमेरिकी सुप्रीम कोर्ट एक साल में 80 मुकदमों पर फैसला सुनाता है। हमने इस साल कम-से-कम 72 हजार मुकदमों का निस्तारण किया है और अभी दो महीना बाकी है। इससे हमारे द्वारा किए जाने वाले कार्यों में अंतर समझ में आता है। उन्होंने कहा कि न्यायपालिका में प्रवेश स्तर पर संरचनात्मक बाधाएं हैं। यदि समान अवसर उपलब्ध होंगे तो अधिक महिलाएं न्यायपालिका में आएंगी। प्रधान न्यायाधीश ने भारतीय क्रिकेट टीम को विश्व कप के लिए शुभकामना देते हुए कहा कि वह उन्हें प्रेरित करती है।

सोशल मीडिया पर भड़काऊ पोस्ट करने वालों पर सख्त हुई केरल पुलिस

तिरुवनंतपुरम। कोच्चि में कलामासेरी के पास एक ईसाई प्रार्थना सभा में हाल ही में हुए विस्फोटों के बाद केरल पुलिस ने कड़ी कार्रवाई की है। पुलिस ने सोशल मीडिया के माध्यम से सांप्रदायिक रूप से भड़काऊ सामग्री फैलाने के लिए 54 लोगों के खिलाफ मामला दर्ज किया है। पुलिस ने शनिवार को कहा कि मलप्पुरम जिले में सबसे अधिक 26 मामले दर्ज किए गए हैं। वही, एर्नाकुलम जिले में 15 और तिरुवनंतपुरम में पांच मामले दर्ज किए गए हैं।

पुलिस ने अपने एक आधिकारिक बयान में बताया कि त्रिशूर और कोट्टायम में दो-दो मामले दर्ज किए गए हैं, जबकि पथानामथिट्टा, अलाप्पुझा, पलक्कड़ और कोझिकोड ग्रामीण में एक-एक मामला सामने आया है। पुलिस ने कहा कि उन्होंने कई फर्जी प्रोफाइलों की भी पहचान की है, जिसका इस्तेमाल भड़काऊ पोस्ट को शेयर करने के लिए किया गया था। पुलिस ने कहा कि सांप्रदायिक रूप से भड़काऊ

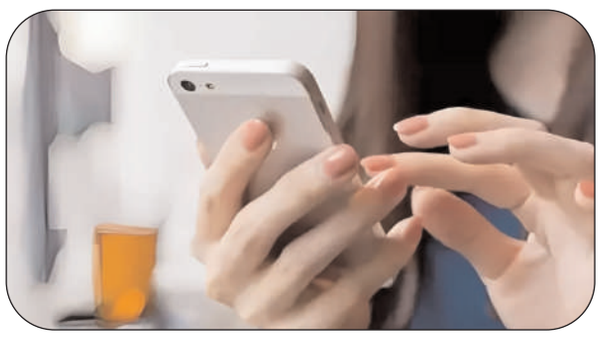

सामग्री फैलाने वाले फेक प्रोफाइलों के आईपी एड्रेस की पहचान करने के लिए सोशल मीडिया कंपनी फेसबुक, इंस्टाग्राम, एक्स (पूर्व में ट्विटर), व्हाट्सएप और अन्य सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म से अनुरोध किया गया है। केरल पुलिस ने बताया कि राज्य में साइबर सेल ऐसे हैंडलों की पहचान करने के लिए लगातार चौबीसों घंटे काम कर रहा है।

मालूम हो कि केरल के एर्नाकुलम स्थित एक कन्वेंशन सेंटर में 29 अक्टूबर को एक के बाद एक कई धमाके हुए थे। यह धमाके उस समय हुए जब कलामासेरी इलाके में ईसाइयों की प्रार्थना सभा हो रही थी। धमाके के समय घटनास्थल पर 2000 लोग मौजूद थे, जिनमें से तीन की मौत हो गई। वहीं, 45 अन्य लोग घायल हो गए थे।

महिला सैनिकों को मिला दिवाली उपहार, सेना में सभी रैंक को एक समान अवकाश का अधिकार

नई दिल्ली। रक्षा मंत्रालय से सशस्त्र बलों में तैनात महिलाओं के छुट्टियों को लेकर एक प्रस्ताव जारी किया गया है। इस प्रस्ताव में महिलाओं की छुट्टियों को लेकर एक नियम बनाया गया है। जारी नियम में

बताया गया है कि सेना में सभी महिलाओं के लिए एक समान छुट्टियों का प्रावधान किया जाएगा चाहे वह अधिकारी हो या किसी अन्य रैंक का हो जारी नियम में कहा गया है कि रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने सशस्त्र बलों में महिला सैनिकों, नाविकों और वायु योद्धाओं के लिए उनके अधिकारी समकक्षों के बराबर मातृत्व, बाल देखभाल और बाल गोद लेने की छुट्टियों के नियमों के विस्तार के प्रस्ताव को मंजूरी दे दी है। नियम जारी होने के साथ, सेना में सभी महिलाओं के लिए ऐसी छुट्टियों का अनुदान समान रूप से लागू होगा, चाहे वह अधिकारी हो या किसी अन्य रैंक का हो।रक्षा मंत्रालय का कहना है कि पीएम मोदी के नेतृत्व वाली सरकार 'नारी शक्ति' को आत्मनिर्भर और सशक्त बनाने के लिए तमाम प्रयास कर रही है। अब तीनों सेनाओं की महिला सैनिकों के लिए अफसरों के बराबर छुट्टियां मंजूर कर एक आदर्श बदलाव की शुरुआत की है।

बढ़ते वायु प्रदूषण को थामने के लिए हवा में मारा जा रहा तीर

दिल्ली में हर एक किमी पर सेंसर की जरूरत

नई दिल्ली। सालों की कसरत और करोड़ों रुपये फूंकने के बाद भी वायु प्रदूषण को लेकर दिल्ली- एनसीआर की स्थिति जस की तस है। हर साल सर्दियों का मौसम शुरू होते ही इसके ऊपर जहरीली हवाओं की एक गहरी धुंध छा जाती है। जैसे ही वायु प्रदूषण का स्तर बढ़ता है कि एक-दूसरे पर आरोप-प्रत्यारोप लगने शुरू हो जाते है, जबकि हकीकत यह है कि दिल्ली-एनसीआर में बढ़ने वाले वायु प्रदूषण के सटीक और सही स्त्रोतों की अब तक पहचान ही नहीं हो पायी है, सिर्फ कुछ मोटे-मोटे आंकड़ों के आधार पर हवा में तीर चलाए जा रहे है। यह स्थिति तब है कि जब वायु प्रदूषण के खिलाफ के जंग छेड़ने से पहले दिल्ली-एनसीआर सहित वायु प्रदूषण से घिरे सभी राज्यों को मॉनिटरिंग के लिए छोटे-छोटे क्षेत्रों में सेंसर लगाने के लिए कहा गया था, जो नहीं लगे। वायु प्रदूषण पर पर्यावरण मंत्रालय को हर तरीके का तकनीकी सहयोग मुहैया कराने वाले आईआईटी कानपुर के प्रोफेसर सच्चिदानंद त्रिपाठी के मुताबिक, छोटे छोटे क्षेत्रों में वायु प्रदूषण के स्त्रोतों की पता लगाने के लिए सेंसर की जरूरत इसलिए भी है, क्योंकि जब दिल्ली में सभी उद्योगों को पीएनजी और सीएनजी में शिफ्ट कर दिया गया

मौसम

हर साल सर्दियों का मौसम शुरू होते ही इसके ऊपर जहरीली हवाओं की एक गहरी धुंध छा जाती है।

है, व्यवसायिक इस्तेमाल में लिए जाने वाले वाहनों को सीएनजी में बदल दिया गया है। इसके बाद भी हवाओं में कभी नाइट्रोजन ऑक्साइड तो कभी सल्फर की बढ़ी हुई मात्रा देखने को मिलती है। यह कहां से आ रही है। वहीं जिन क्षेत्रों में वायु प्रदूषण का स्तर ज्यादा बढ़ा हुआ है, उसके पीछे का सही कारण क्या है। इसकी पहचान करने के लिए ब्लॉक स्तर पर निगरानी बढ़नी पड़ेगी। बकौल प्रोफेसर त्रिपाठी, दिल्ली को भी कई बार इसकी याद दिलाई गई, लेकिन यह नहीं हो पाया। यानी हर एक किलोमीटर पर सेंसर लगाने की जरूरत है, लेकिन

फिलहाल दिल्ली में महज 40 सेंसर हैं। ऐसे में रियल टाइम जानकारी उपलब्ध नहीं हो पा रही है। गौरतलब है कि दिल्ली-एनसीआर को वायु प्रदूषण से बचाने के लिए अकेले पराली संकट पर केंद्र ने लगभग ढ़ाई हजार करोड़ रुपये खर्च किया है। जिसमें पंजाब को सबसे अधिक एक हजार करोड़ से ज्यादा मदद दी गई है।

चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ जनरल अनिल चौहान ने भारतीय सेना की गजराज कोर का किया दौरा

सोनीतपुर। चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ जनरल अनिल चौहान ने शनिवार को भारतीय सेना के तेजपुर स्थित गजराज कोर का दौरा किया। उन्हें मौजूदा परिचालन स्थिति और तैयारियों के बारे में लेटेस्ट जानकारी दी गई। रक्षा अधिकारियों ने कहा कि चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ जनरल ने पूर्वी कमान के भारतीय सेना और वायु सेना के अधिकारियों को संबोधित किया और भविष्य की चुनौतियों से निपटने के लिए संयुक्तता और एकीकरण की आवश्यकता और रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भरता के महत्व पर जोर दिया। गजराज कोर उत्तरी सीमाओं पर कामेंग सेक्टर के लिए जिम्मेदार है। गजराज कोर की स्थापना 4 अक्टूबर, 1962 को भारत-चीन संघर्ष के बीच हुई थी। कोर ने पूर्वी डायस्पोरा में पारंपरिक और उग्रवाद विरोधी दोनों अभियानों में सराहनीय रणनीतिक भूमिका निभाई है।

एक्शन मोड में मुख्यमंत्री केसीआर दिवाली के बाद करेंगे धुआंधार प्रचार

हैदराबाद। बीआरएस अध्यक्ष और तेलंगाना के मुख्यमंत्री के. चंद्रशेखर राव (केसीआर) आगामी विधानसभा चुनाव के लिए 13 से 28 नवंबर तक 54 प्रजा आशीर्वाद रैलियों को संबोधित करेंगे। केसीआर रविवार पांच नवंबर से नौ नवंबर तक 12 निर्वाचन क्षेत्रों का दौरा करेंगे। दीपावली के बाद

केसीआर 13 नवंबर से दौरे फिर से शुरू करेंगे। बीआरएस प्रमुख 28 नवंबर को गजवेल में रैली को संबोधित करेंगे। वह नौ नवंबर को गजवेल और कामारेड्डी दोनों क्षेत्रों में अपना नामांकन पत्र दाखिल करेंगे, जहां से वह चुनाव लड़ रहे हैं। अब तक केसीआर 42 सभाओं को संबोधित कर चुके हैं।

बता दें, तेलंगाना के मुख्यमंत्री के चंद्रशेखर राव शनिवार को कोन्यापल्ली में भगवान श्रीवेंकटेश्वर स्वामी के दर्शन करने पहुंचे। मुख्यमंत्री केसीआर का मंदिर के पुजारियों ने पूर्णकुंभ के साथ स्वागत किया। सबसे पहले मुख्यमंत्री ने मंदिर की परिक्रमा कर ध्वजदंड बांधकर मंदिर में प्रवेश किया। उन्होंने नामांकन दस्तावेज मंदिर के पुजारियों को प्रस्तुत किए। इन दस्तावेजों को मूलविरट्टू में रखा गया और मुख्यमंत्री केसीआर के गोत्र, नाम और संकल्प के साथ पूजा की गई

इजरायल की कार्रवाई के खिलाफ सड़कों पर उतरे लोग, फलस्तीनी समर्थन में लगाए नारे

न्यूयॉर्क। नैशविले, सिनसिनाटी, लास वेगास और यहां तक कि ओरोनो, मेन के विरोध प्रदर्शनों में गाजा में युद्ध विराम और घेराबंदी को समाप्त करने की मांग की गई। ये प्रदर्शन एशियाई और यूरोपीय राजधानियों में व्यापक विरोध प्रदर्शन

इजरायली सरकार द्वारा बमबारी में मानवीय रोक के लिए संयुक्त राज्य अमेरिका के आह्वान को अस्वीकार करने के एक दिन बाद हुआ। विरोध प्रदर्शन मृतकों का शोक मनाओ; जीवित लोगों के लिए आखिरी दम तक लड़ो और गाजा को जीवित रहने दो! जैसे संदेशों के साथ किया जा रहा था। समाचार एजेंसी एएनआई के मुताबिक, इजरायल के विनाश के लिए यहूदी विरोधी आह्वान के रूप में इसकी निंदा की गई है। राजधानी और अन्य जगहों पर भी खुलकर विरोध प्रदर्शन हुआ, जब जनमत सर्वे में हमास के खिलाफ सैन्य अभियान में इजरायल के लिए समर्थन दिखाया गया। हालांकि, इस सर्वे के बाद फलस्तीनियों की चिंता काफी बढ़ गई थी। मालूम हो कि हमास के हमले में लगभग 1,400 इजरायली मारे गए और इजरायल के बमबारी अभियान में अब तक 9,000 से अधिक गाजावासियों की मौत हो गई है। फलस्तीनी समर्थन ने सिनसिनाटी पर धावा बोल दिया और मार्च करने वाले सैकड़ों लोगों ने सड़कों को जाम कर दिया, चौराहे बंद कर दिए और पुलिस की उपस्थिति में फलस्तीनी समर्थक नारे लगाए। रैली और मार्च में अलग-अलग समूहों के लोग एक साथ नजर आए थे। यह कार्यक्रम सिनसिनाटी सोशलिस्ट्स द्वारा आयोजित किया गया था, लेकिन इसमें मुसलमान, काले कार्यकर्ता, कॉलेज के छात्र और शांति समर्थक भी शामिल हुए थे। सैन फ्रांसिस्को में, हजारों प्रदर्शनकारियों, जिनमें से कई यूनियन सदस्य, जिनमें शिक्षक और स्वास्थ्य देखभाल कर्मचारी भी शामिल थे, सिटी हॉल के सामने सिविक सेंटर प्लाजा में भर गए। कई लोगों ने गाजा में चल रहे युद्ध में मारे गए हजारों फलस्तीनियों के सम्मान में फलस्तीनी झंडे लहराए और फुटपाथ पर फैली एक वेदी पर स्मृति चिन्ह और फूल छोड़े।

अनावश्यक रूप से कोर्ट में लाया गया चुनाव की तारीख का मामला

इस्लामाबाद। पाकिस्तान के मुख्य न्यायाधीश काजी फैज ईसा ने कहा कि देश में आम चुनाव की तारीखों का मामला अनावश्यक रूप से कोर्ट में लाया गया है। उन्होंने कहा कि देश में चुनाव के संबंध में निर्णय पाकिस्तान के राष्ट्रपति और देश के चुनाव आयोग द्वारा किया जाना चाहिए था। समाचार एजेंसी एएनआई ने पाकिस्तानी अखबार डॉन के हवाले से यह जानकारी दी है। मुख्य न्यायाधीश काजी फैज ईसा ने कहा कि अदालत ने इस मामले पर फैसला सुनाते हुए पूरी तरह से सावधान थी कि देश में आम चुनाव को लेकर राष्ट्रपति या चुनाव आयोग के अधिकार क्षेत्र का अतिक्रमण न हो। सीजेपी ने शनिवार को जारी फैसले में कहा कि एक मामला जिसे राष्ट्रपति और ईसीपी द्वारा निपटाया जाना चाहिए

युद्धग्रस्त इजरायल पहुंचे बोरिस जॉनसन और स्कॉट मॉरिसन

तेल अवीव। ब्रिटेन के पूर्व प्रधानमंत्री बोरिस जॉनसन और ऑस्ट्रेलिया के पूर्व प्रधानमंत्री स्कॉट मॉरिसन इजरायल पहुंचे हैं। द टाइम्स ऑफ इजरायल की रिपोर्ट के अनुसार, हमास के साथ चल रहे संघर्ष के बीच तेल अवीव के लिए समर्थन दिखाने के लिए दोनों नेताओं ने इजरायल का दौरा किया।

अपनी यात्रा के दौरान, जॉनसन और मॉरिसन कथित तौर पर इजरायल के राष्ट्रपति इसाक हर्जोग और गाजा में आतंकवादियों द्वारा बंधक बनाए गए बंधकों के परिवार के सदस्यों से मिलेंगे। द टाइम्स ऑफ इजरायल की रिपोर्ट के मुताबिक, दोनों नेता दक्षिणी गाजा सीमा के कस्बों का भी दौरा करेंगे, जो 7 अक्टूबर को इजरायल पर हमास के हमले से तबाह हो गए हैं।

संयुक्त राष्ट्र में पूर्व इजरायली राजदूत डैनी डैनन ने बोरिस जॉनसन और स्कॉट मॉरिसन की यात्रा की मेजबानी की है। उन्होंने कहा कि मॉरिसन और जॉनसन इजरायल रक्षा बलों के सैनिकों और इजरायल के दक्षिणी समुदायों से भी मिलेंगे।

X (पूर्व में ट्विटर) पर शेयर की गई एक पोस्ट में डैनी डैनन ने कहा, आज सुबह, इजरायल के बेन गुरियन हवाई अड्डे पर मुझे मेरे दोस्त ग्रेट ब्रिटेन के पूर्व प्रधानमंत्री बोरिस जॉनसन और ऑस्ट्रेलिया के पूर्व प्रधानमंत्री स्कॉट मॉरिसन मिले। दोनों इजरायल के सच्चे दोस्त है। दिन के दौरान हम इजरायल के दक्षिणी समुदायों का दौरा करेंगे और अपने वीर आईडीएफ सैनिकों से मिलेंगे। इजरायल के सभी लोगों की ओर से, हम आपके दृढ़ समर्थन के लिए आपको धन्यवाद देते हैं।

यात्रा

संयुक्त राष्ट्र में पूर्व इजरायली राजदूत डैनी डैनन ने बोरिस जॉनसन और स्कॉट मॉरिसन की यात्रा की मेजबानी की है।

स्कॉट मॉरिसन ने कहा कि वह इजरायल के लोगों और राज्य और दुनिया भर में यहूदी समुदाय के साथ एकजुटता के प्रदर्शन के रूप में इजरायल आने के लिए पूर्व प्रधानमंत्री जॉनसन के साथ शामिल होने के अवसर के लिए आभारी हैं। द सिडनी मॉर्निंग हेराल्ड की रिपोर्ट के अनुसार, उन्होंने इसे सीधे तौर पर समझने का अवसर बताया कि मैदान पर क्या हो रहा है। इससे पहले 19 अक्टूबर को ब्रिटेन के प्रधानमंत्री ऋषि सुनक युद्धग्रस्त देश के साथ एकजुटता व्यक्त करने के लिए तेल अवीव पहुंचे थे। इजरायल में उतरने के बाद, सुनक ने एक्स पर पोस्ट किया, मैं इजराइल में हूं, एक राष्ट्र शोक में है। मैं आपके साथ शोक मनाता हूं और आतंकवाद जैसी बुराई के खिलाफ आपके साथ खड़ा हूं। इजरायल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने ऋषि सुनक के साथ एक निजी बैठक की।

पाकिस्तान के डेरा इस्माइल खान में हुआ आतंकवादी हमला

इस्लामाबाद। पाकिस्तान के डेरा स्माइल खान में आतंकवादी हमला हुआ है। इस हमले में एक पुलिस चेक पोस्ट को निशाना बनाया गया। इस आतंकवादी हमले में एक पुलिसकर्मी के घायल होने की खबर सामने आ रही है। एआरवाई न्यूज ने यह जानकारी दी। जानकारी के मुताबिक, पुलिस अधिकारियों ने बताया कि आतंकवादियों ने डेरा इस्माइल खान में टैंक के गुल इमाम इलाके में एक पुलिस चेक पोस्ट को निशाना बनाया. एआरवाई न्यूज की रिपोर्ट के अनुसार, पुलिस प्रवक्ता के अनुसार, पुलिस कर्मी की पहचान वहीद गुल के रूप में हुई जो आतंकवादियों की गोलीबारी में घायल हो गया। इससे पहले शुक्रवार को पाकिस्तान के ग्वादर में सुरक्षा बलों को ले जा रहे दो वाहनों पर आतंकवादियों के हमले में कम से कम 14 पाकिस्तानी सैनिक मारे गए थे।

हमास ने जो किया वह भयावह था..... फलस्तीनियों के साथ जो हो रहा है वह असहनीय

वाशिंगटन। पिछले महीने सात अक्टूबर को हमास ने इजरायल के ऊपर हमला किया। उस हमले के बाद इजरायल ने जवाबी हमले से इसे युद्ध का रूप दे दिया जो युद्ध अब तक जारी है। लगभग एक महीने से चल रहे इस युद्ध में दोनों पक्षों से हजारों लोगों की मौत हो चुकी है। इस युद्ध को लेकर पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा ने एकबार फिर इस युद्ध की कड़ी निंदा की है। बराक ओबामा ने कहा है कि यह संघर्ष सदियों पुरानी बात है जो अब सामने आ गई है। न्यूयॉर्क टाइम्स के अनुसार, ओबामा ने इस

निंदा

इस युद्ध को लेकर पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा ने एकबार फिर इस युद्ध की कड़ी निंदा की है।

युद्ध में दो खेमे में लोगों को बांटने के लिए सोशल मीडिया को दोषी ठहराया। इस बयान में ओबामा ने न केवल 7 अक्टूबर को इजरायल पर हुए हमले की निंदा की बल्कि उन्होंने फलस्तीन में नागरिकों की पीड़ा के बारे में बात की। ओबामा ने अपने बयान में कहा, हमास ने जो किया वह भयावह था और उसको जस्टफाइ नहीं किया जा सकता है। उन्होंने आगे कहा, और यह भी सच है कि जो फलस्तीनियों के साथ जो हो रहा है वह भी असहनीय है। न्यूयॉर्क टाइम्स के अनुसार, पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति ने कहा, यह भी सच है कि यहूदी लोगों का एक इतिहास है जिसे तब तक खारिज किया जा सकता है जब तक कि आपके दादा-दादी, आपके परदादा, या आपके चाचा या आपकी चाची आपको यहूदी विरोधी भावना के पागलपन के बारे में कहानियां न बताएं और जो सच है वह यह है कि अभी ऐसे लोग हैं जो मर रहे हैं जिनका हमास ने जो किया है उससे कोई लेना-देना नहीं है। ओबामा ने दृढ़तापूर्वक अपने पूर्व सहयोगियों से पूरी सच्चाई स्वीकार करने का आग्रह किया और समर्थन का आह्वान करते हुए कहा कि जब इजरायल-हमास युद्ध की बात आती है तो संतुलन बनाना बेहद महत्वपूर्ण है। हमास द्वारा 7 अक्टूबर के हमले के बाद गाजा में संघर्ष बढ़ गया है जहां लगभग 2500 आतंकवादियों ने गाजा पट्टी से इजरायल में सीमा पार कई लोगों को बंधक बना लिया है।

हाई लेवल से मिले निर्देश पर भारत को किया गया बदनाम

ओटावा। खालिस्तान समर्थक हरदीप सिंह निज्जर की हत्या को लेकर कनाडा और भारत में फिर तकरार सामने आई है। भारत के उच्चायुक्त संजय कुमार वर्मा ने खालिस्तानी आतंकवादी हरदीप सिंह निज्जर की हत्या के संबंध में ट्रूडो के आरोपों पर एक बार फिर सबूत मांगे हैं। भारतीय राजदूत ने शुक्रवार को द ग्लोब एंड मेल को दिए एक साक्षात्कार में कहा कि निज्जर की हत्या में भारत की कथित संलिप्तता के बारे में कनाडा या उसके सहयोगियों द्वारा भारत को ठोस सबूत नहीं दिखाए गए हैं।

संयुक्त राष्ट्र की टीमों ने नेपाल में भूकंप पर दी प्रतिक्रिया

न्यूयॉर्क। नेपाल में संयुक्त राष्ट्र की टीमें देश के पश्चिम में आए विनाशकारी भूकंप का जवाब दे रही हैं। अब तक इस विनाशकारी भूकंप में 150 से अधिक लोगों की मौत हो चुकी है और सैकड़ों अन्य घायल हुए हैं। शुक्रवार की आधी रात से कुछ देर पहले रुकुम (पश्चिम) और जाजरकोट के दूरदराज और ग्रामीण जिलों में 6.4 तीव्रता का शक्तिशाली भूकंप आया। लोग अपने घरों से बाहर भागे, उनके दिमाग में अप्रैल-मई 2015 के घातक भूकंप की यादें अभी भी ताजा हैं।

नेपाल में संयुक्त राष्ट्र बाल कोष की प्रतिनिधि एलिस अकुंगा ने कहा कि बच्चे और उनके परिवार काफी जोखिम में हैं। जानकारी के मुताबिक, प्रभावित क्षेत्रों में हजारों स्कूली बच्चे रहते हैं और उन पर असर पड़ेगा।

उन्होंने एक बयान में कहा, ÷नुकसान की पूरी जानकारी आने वाले दिनों में सामने आएगी और दुख की बात है कि प्रभावित लोगों की संख्या बढ़ने की संभावना है।÷ उन्होंने कहा कि यूनिसेफ की टीमें घटनास्थल पर हैं, प्रभाव का आकलन कर रही हैं और तत्काल सहायता प्रदान कर रही हैं।

अकुंगा ने कहा, हम स्वास्थ्य, पोषण, शिक्षा, जल, स्वच्छता, बाल संरक्षण और सामाजिक सुरक्षा के

क्षेत्रों में इस महत्वपूर्ण समय पर आवश्यक समर्थन का आकलन कर रहे हैं।÷ संयुक्त राष्ट्र की अन्य एजेंसियों ने भी अपनी प्रतिक्रिया तेज कर दी है। विश्व स्वास्थ्य संगठन चिकित्सा टीमें जुटा रहा है और संयुक्त राष्ट्र उपग्रह केंद्र को उपग्रह छवि विश्लेषण के माध्यम से दूरस्थ क्षति का आकलन करने के लिए सक्रिय किया गया है।

मानवीय मामलों के समन्वय के लिए संयुक्त राष्ट्र कार्यालय के मुताबिक, भूकंप के कारण हुए भूस्खलन के कारण जाजरकोट तक पहुंच बाधित हो गई है। सड़क को फिर से खोलने के प्रयास जारी हैं। अब तक सबसे ज्यादा नुकसान जाजरकोट और रुकुम (पश्चिम) में हुआ है। सरकार ने खोज और बचाव के लिए सेना के हेलीकॉप्टर तैनात किए हैं और अतिरिक्त चिकित्सा कर्मियों को क्षेत्रीय और क्षेत्रीय अस्पतालों में भेजा है।

वैशाली ने झोंगयी टेन को हराया, ग्रैंडमास्टर बनने के करीब

भारत की आर वैशाली ने पूर्व महिला विश्व चैंपियन चीन की झोंगयी टेन को हराकर 10वें दौर के बाद यहां फिडे महिला ग्रां प्री में एकल बढ़त बरकरार रखी। वैशाली अपने छोटे भाई आर प्रज्ञानानंदा के साथ अपने-अपने वर्ग के कैंडिडेट्स टूर्नामेंट के लिए क्वालीफाई करने वाली भाई-बहन की पहली जोड़ी बनी।

ग्रैंडमास्टर बनने के करीब पहुंची भारत की आर वैशाली ने पूर्व महिला विश्व चैंपियन चीन की झोंगयी टेन को हराकर 10वें दौर के बाद यहां फिडे महिला ग्रां प्री में एकल बढ़त बरकरार रखी। वैशाली अपने छोटे भाई आर प्रज्ञानानंदा के साथ अपने-अपने वर्ग के कैंडिडेट्स टूर्नामेंट के लिए क्वालीफाई करने वाली भाई-बहन की पहली जोड़ी बनी। ये दोनों अगले साल कनाड में चुनौती पेश करेंगे और विश्व चैंपियनशिप फाइनल में जगह बनाने का प्रयास करेंगे।

वैशाली की 'लाइव रेटिंग' भी 2498 तक पहुंच गई है और वह ग्रैडमास्टर बनने से सिर्फ दो अंक दूर हैं। अगर वह ऐसा करने में सफल रहती हैं तो यह उपलब्धि हासिल करने वाली दुनिया में भाई-बहन की पहली जोड़ी बनेगी। वैशाली आठ अंक के साथ शीर्ष पर हैं जबकि यूक्रेन की अन्ना मुजिचुक उनसे आधा अंक पीछे है।

मुजिचिक से आधा अंक पीछे मंगोलिया की बातखुयाग मुनगुतुल हैं जिनसे वैशाली अंतिम दौर में भिड़ेंगी। अंतिम दौर का नतीजा चाहे कुछ भी रहे वैशाली कम से कम दूसरे स्थान पर रहना तय है। ओपन वर्ग में ग्रैंडमास्टर विदित गुजराती ने शानदार प्रदर्शन जारी रखते हुए एकतरफा मुकाबले में रोमानिया के डीक बोगडेन डेनियल को हराया।

काले मोहरों से खेलते हुए चौथी जीत के बाद विदित अमेरिका के हिकारू नाकामूरा और रूस के आंद्रेई इसिपेंको के साथ संयुक्त रूप से शीर्ष पर चल रहे हैं। इन तीनों के 7.5 अंक हैं। इस चार लाख 60 हजार डॉलर इनामी टूर्नामेंट में जब सिर्फ एक दौर बचा है तब अर्जुन एरिगेसी भी कैंडिडेट्स टूर्नामेंट में जगह बनाने की दौड़ में हैं। उन्होंने अमेरिका के सैमुअल सेवियान को हराया। अर्जुन सात अंक के साथ संयुक्त रूप से चौथे स्थान पर चल रहे हैं और कैंडिडेट्स टूर्नामेंट में जगह बनाने की दावेदारी मजबूत करने के लिए उन्हें अंतिम दौर में नाकामूरा को हराना होगा। इस टूर्नामेंट से दो खिलाड़ी कैंडिडेट्स टूर्नामेंट के लिए क्वालीफाई करेंगे।

प्रज्ञानानंदा (छह अंक) ने यूक्रेन के एंटोन कोरोबोव से ड्रॉ खेला। पी हरिकृष्णा, अरविंद चिदंबरम और एसएल नारायणन ने भी 10वें दौर में ड्रॉ खेला। इन सभी के 5.5 अंक हैं। महिलाओं के वर्ग में तानिया सचदेव और डी हरिका ने जीत दर्ज की। दोनों के 5.5 अंक हैं। वंतिका अग्रवाल और दिव्या देशमुख भी जीत दर्ज करने में सफल रहे। इन दोनों के पांच अंक हैं।

भारत ने दक्षिण अफ्रीका को 243 रन से हराया

विश्व कप 2023 के 37वें मुकाबले में भारत ने दक्षिण अफ्रीका को 243 रन से हरा दिया है। कोलकाता के ईडन गार्डन्स में भारत ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करते हुए 326 रन बनाए थे। इसके जवाब में दक्षिण अफ्रीका की टीम सिर्फ 83 रन बना सकी और भारत ने इस टूर्नामेंट में अजेय रहते हुए एक और आसान जीत हासिल की। भारत ने दक्षिण अफ्रीका को 243 रन से हरा दिया है। इसके साथ ही टीम इंडिया के अजेय रहने का सिलसिला जारी है। भारत लगातार आठ जीत के साथ अंक तालिका में शीर्ष पर बना हुआ है और अब यह भी तय हो गया कि भारत शीर्ष पर ही रहेगा। वहीं, दक्षिण अफ्रीका को दूसरी हार का सामना करना पड़ा है। हालांकि, यह टीम भी पहले ही सेमीफाइनल में पहुंच चुकी है, लेकिन यह हार दक्षिण अफ्रीका के मनोबल के लिए बेहद नुकसानदेह होगी।

आईपीएल 2024 नीलामी से पहले सभी 10 टीमें इन खिलाड़ियों को कर सकती है रिलीज

19 दिसंबर को आईपीएल 2024 नीलामी का आयोजन दुबई में होगा। हालांकि, ये पहली बार होगा जब इंडियन प्रीमियर लीग की नीलामी विदेश में होगी। नीलामी से पहले सभी 10 टीमें आईपीएल फ्रेंचाइजी तैयारी कर रहे हैं कि किन खिलाड़ियों को रिटेन करें और किसे रिलीज किया जाए।

आईपीएल 2024 की नीलामी 19 दिसंबर को दुबई में होगी। हालांकि, ये पहली बार होगा जब इंडियन प्रीमियर लीग की नीलामी विदेश में होगी। नीलामी से पहले सभी 10 टीमें आईपीएल फ्रेंचाइजी तैयारी कर रहे हैं कि किन खिलाड़ियों को रिटेन करें और किसे रिलीज किया जाए।

चेन्नई सुपर किंग्स

एमएस धोनी की कप्तानी में 2023 में पांचवीं बार आईपीएल खिताब अपने नाम करने वाली चेन्नई सुपर किंग्स को रिलीज खिलाड़ियों की सोचना होगा। इसी कड़ी में फ्रेंचाइजी द्वारा सबसे ज्यादा महंगे खिलाड़ी के तौर पर खरीदे गए बेन स्टोक्स का सबसे ऊपर होगा। स्टोक्स चोट से जूझ रहे हैं। चेन्नई ने स्टोक्स को खरीदने के लिए 16.25 करोड़ रुपये की भारीभरकम राशि खर्च की थी। लेकिन वह चोट की वजह से पूरे सीजन में केवल दो ही मैच खेल पाए थे। इसके अलावा सीएसके ड्वेन प्रेटोरियस और पेसर आकाश सिंह को भी रिलीज कर सकती है।

गुजरात टाइटंस

आईपीएल 2023 की उपविजेता टीम गुजरात टाइटंस इस बार पेसर यश दयाल को रिटेन कर सकती है। दयाल के अलावा गुजरात विदेशी ऑलराउंडर्स दासुन शनाका और ओडेन स्मिथ को भी रिलीज कर सकता है। ओडेन जहां आईपीएल 2023 में कोई मैच नहीं खेले थे, तो वहीं दासुन शनाका गेंद और बैट से प्रभावित करने से चूक गए थे। कुल मिलाकर शनाका तीन मैचों में कुल 26 रन बना सके थे।

मुंबई इंडियंस

पांच बार की चैंपियन मुंबई इंडियंस की टीम क्रिस जोर्डन, रिले मेरेडिथ और संदीप वारियर को

रिलीज कर सकती है। आईपीएल 2023 में पूरे सीजन में उपलब्ध नहीं होने के बाद जसप्रीत बुमराह, झाय रिचर्डसन और जोफ्रा आर्चर के अगले पूरे सीजन के लिए मौजूद रहने की संभावना है।

रॉयल चैलेंजर्स बैंगलोर

मुंबई की तरह ही आरसीबी भी सिद्धार्थ कौल और रील टॉप्ले जैसे पेसर्स को रिलीज कर सकती है। बैंगलोर के पास मोहम्मद सिराज और हर्षल पटेल के रूप में बेहतरीन पेस अटैक है। आरसीबी साथ ही आईपीएल नीलामी में पेसर मिशेल स्टार्क पर भी दांव लगा सकती है।

साथ ही दिनेश कार्तिक या फिल एलेन को रिलीज कर सकती है। पिछले आईपीएल सीजन में एलेन एक भी मैच नहीं खेले थे। वहीं दूसरी ओर, कार्तिक आईपीएल 2022 में अपना दम नहीं दिखा सके और 13 मैचों में केवल 140 रन ही बना सके।

सनराइजर्स हैदराबाद

सनराइजर्स हैदराबाद के लिए हर साल की तरह एक बड़ा सवाल ये कि क्या एडेन मार्करम को फ्रेंचाइजी कप्तान बनाए रखेगी। आईपीएल 2023 में टीम का प्रदर्शन बेहद खराब रहा था और वो पॉइंट्स टेबल में आखिरी पायदान पर रही थी। हालांकि, हैदराबाद इस बार अकील हुसैन, आदिल राशिद और समर्थ व्यास को रिलीज कर सकता है।

कोलकाता नाइटराइडर्स

हैदराबाद की तरह ही कोलकाता का भी पिछला सीजन निराशाजनक रहा था। शार्दुल ठाकुर और लॉकी फर्ग्यूसन जैसे खिलाड़ियों पर भारी पैसा खर्च करने के बाद भी केकेआर को फायदा नहीं हुआ। वहीं बांग्लादेशी ओपनर लिटन दास को ओपनिंग में कुछ मौके दिए गए थे लेकिन वह उन्हें भुना नहीं पाए। वहीं जेसन रॉय ने दिए गए मौके का पूरा फायदा नहीं उठाया।

पंजाब किंग्स

शिखर धवन की कप्तानी में पंजाब किंग्स भानुका राजपक्षे, शाहरुख खान और सैम करन को रिलीज करके ऑक्शन में उन्हें फिर से खरीदने की कोशिश कर सकती है। आईपीएल 2023 में इन तीन खिलाड़ियों को खरीदने के लिए पंजाब ने 24.75 कोरड़ रुपये की भारी भरकम रकम खर्च की थी।

दिल्ली कैपिटल्स

अनुभवहीन बैटिंग ऑर्डर और गेंद से खराब प्रदर्शन के कारण दिल्ली इस बार चेतन सकारिया और लुंगी एंगीडी को रिलीज कर सकती है। दिल्ली के पास गेंदबाजी में ढेरों विकल्प हैं। वहीं दूसरी ओवर पिछले आईपीएल में खराब प्रदर्शन के बाद युवा बल्लेबाज यश धुल को भी रिलीज किया जा सकता है।

लखनऊ सुपर जायंट्स

कई मौके मिलने के बाद भी दीपक हुड्डा और मनन वोहरा पिछले सीजन में कमाल नहीं दिखा पाए। ऐसे में नीलामी से पहले लखनऊ हुड्डा और वोहरा दोनों को रिलीज कर सकता है। हाल ही में लखनऊ ने रोमारियो शफर्ड को रिलीज किया जिसे बाद मुंबई ने अपने खेमे में जोड़ दिया।

राजस्थान रॉयल्स

संजू सैमसन की कप्तानी में राजस्थान रॉयल्स के लिए अच्छा प्रदर्शन नहीं कर पाए थे। तीसरे नंबर पर बल्लेबाजी के लिए उतरते हुए रूट तीन मैचों में केवल 3 रन बना सके थे। हालांकि, दो मैचों में वह पावर हिटिंग की कम क्षमता के लिए बल्लेबाजी के लिए नहीं उतरे थे। टीम इस बार स्पिन विभाग में केसी करियप्पा को बाहर कर सकती है।

दूल्हे का सहरा पहनने के लिए तैयार हैं रणदीप हुड्डा, 10 साल छोटी ग्लैमरस गर्लफ्रेंड से इस महीने करेंगे शादी!

फिल्मी गलियारों में एक और कपल की शहनाई बजने वाली है। हाल ही में परिणीति चोपड़ा और राघव चड्ढा की शादी हुई, जिसके साक्षी राजनीति और फिल्म इंडस्ट्री के कुछ सितारे शामिल हुए। अब ग्लैमर वर्ल्ड का एक और सितारा शादी करने वाला है। एक्टर रणदीप हुड्डा को लेकर शादी की खबरें सामने आई हैं।

रणदीप हुड्डा काफी समय से लिन लैशराम के साथ रिलेशन में हैं। ई टाइम्स की खबर के अनुसार, सिंगल होने की लंबी पारी खेलने के बाद अब एक्टर शादी के बंधन में बंधने के लिए तैयार हैं। वह इस महीने के अंत में शादी कर सकते हैं। रणदीप हुड्डा ने अभी तक अपनी शादी से जुड़ी जानकारी को ऑफिशियल नहीं किया है, मगर सोशल मीडिया पर उनके सिर पर दूल्हे का सहरा सजने की चर्चा तेज है।

खबर के अनुसार, रणदीप हुड्डा प्राइवेट वेडिंग करेंगे। यानी शादी में परिवार और रिश्तेदारों के अलाना सिर्फ करीबी दोस्तों को न्योता दिया जाएगा। फिलहाल उनकी वेडिंग को लेकर बहुत ज्यादा जानकारी सामने नहीं आई है। 47 साल के रणदीप और 37 साल की लिन ने कभी भी अपने रिश्ते के बारे में खुलकर बात नहीं की है। हालांकि, इंस्टाग्राम पर उनकी कुछ क्लोज फोटोज जरूर रही हैं, जिससे उनका रिलेशन लाइमलाइट में बना रहा।

मणिपुर की रहने वालीं लिन लैशराम मॉडल और एक्ट्रेस हैं। उन्होंने मैरी कॉम, रंगून, उमरिका जैसी फिल्मों में काम किया है। इतना ही नहीं, लिन ने शाह रुख खान की मूवी ओम शांति ओम में कैमियो भी किया है। लिन, मिस नॉर्थ ईस्ट ब्यूटी पेजेंट की फर्स्ट रनर अप रह चुकी हैं।

रणदीप हुड्डा की फिल्मों की बात करें, तो वह स्वातंत्र्यवीर सावरकर में दिखाई देंगे, जिसमें वह स्वतंत्रता सेनानी की भूमिका में नजर आएंगे। इसी फिल्म से एक्टर डायरेक्शन के क्षेत्र में कदम भी रखेंगे।

एक्स-बॉयफ्रेंड राहुल पंड्या के साथ जहरीले रिश्ते पर बोली ऐश्वर्या शर्मा, कहा मैंने अपना आत्मसम्मान खो दिया था

बिग बॉस 17 एक बड़ा शो है। इसने सभी का ध्यान खींचा है और सोशल मीडिया इस सीज़न के प्रतियोगियों के बारे में कहानियों से भरा हुआ है। टेलीविजन की सबसे खूबसूरत जोड़ी में से एक ऐश्वर्या शर्मा और नील भट्ट इस शो का हिस्सा हैं।

बिग बॉस 17 एक बड़ा शो है। इसने सभी का ध्यान खींचा है और सोशल मीडिया इस सीज़न के प्रतियोगियों के बारे में कहानियों से भरा हुआ है। टेलीविजन की सबसे खूबसूरत जोड़ी में से एक ऐश्वर्या शर्मा और नील भट्ट इस शो का हिस्सा हैं। इससे पहले, स्मार्ट जोड़ी में ऐश्वया ने खुलासा किया था कि

ब्रेकअप के बाद वह टूट गई थीं और नील ने उन्हें मजबूती से संभाला था। कुछ दिनों पहले राहुल पंड्या ने ऐश्वया से अपने ब्रेकअप के बारे में बात की थी। उन्होंने कहा कि जब उन्होंने ब्रेकअप कर नील से शादी की तो वह टूट गए थे। उन्होंने बताया कि वे कैसे मिले और साथ में समय बिताया। उसने खुलासा किया कि कैसे उसके पिता उसे पसंद नहीं करते थे और इसलिए उसे दूर भेज दिया था। अब, ऐश्वया शर्मा ने बिग बॉस 17 के घर में अपने पिछले रिश्ते के बारे में खुलासा किया है।

बिग बॉस 17 की लाइव स्ट्रीमिंग में देखा गया कि ऐश्वर्या घर के सदस्यों को बता रही थीं कि कैसे नील भट्ट ने उन्हें अपने पिछले रिश्ते के दौरान खोए हुए आत्मसम्मान को वापस पाने में मदद की। उन्होंने खुलासा किया कि उसने अपना आत्मसम्मान खो दिया था क्योंकि वह पहले एक जहरीले रिश्ते में थी। उन्होंने कहा कि नील ने उन्हें वह प्यार दिया जो वह हमेशा से चाहती थीं। ऐश्वया ने राहुल का नाम तो नहीं लिया लेकिन परोक्ष रूप से ये बात उन्हीं के बारे में थी। शो में ऐश्वया और नील के बीच नोकझोंक भी हो चुकी है। लेकिन इससे उनके रिश्ते पर कभी असर नहीं पड़ा। वे व्यक्तिगत रूप से गेम खेल रहे हैं और हाल ही में ऐश्वया भी नील से नाराज थीं क्योंकि उन्होंने उन्हें गेम खेलने से रोका था। हाल ही में ऐसी खबरें आई हैं कि ऐश्वर्या के एक्स-बॉयफ्रेंड राहुल पंड्या बिग बॉस 17 के घर में वाइल्ड कार्ड प्रतियोगी के रूप में प्रवेश करेंगे। हालाँकि, इस बारे में कुछ भी पुष्टि नहीं की गई थी। अगर वह घर में प्रवेश करते हैं तो हमें शो में एक और विवाद देखने को मिलेगा। हमने देखा कि कैसे समर्थ जुरेल की एंट्री ने ईशा मालवीय और अभिषेक की जिंदगी में तूफान ला दिया। मनोरंजन समाचार में यह एक बड़ी खबर थी।

अनन्या पांडे और आदित्य रॉय कपूर के रिलेशनशिप को लेकर सारा अली खान ने एक्ट्रेस को छेड़ा

कॉफ़ी विद करण 8 की धमाकेदार शुरुआत हो चुकी है। पहले एपिसोड में रणवीर सिंह और दीपिका पादुकोण थे। प्रशंसकों को उनके शादी की वीडियो की झलक मिली और अभिनेत्री के डेटिंग बयान पर एक बड़ा विवाद खड़ा हो गया।

कॉफ़ी विद करण 8 की धमाकेदार शुरुआत हो चुकी है। पहले एपिसोड में रणवीर सिंह और दीपिका पादुकोण थे। प्रशंसकों को उनके शादी की वीडियो की झलक मिली और अभिनेत्री के डेटिंग बयान पर एक बड़ा विवाद खड़ा हो गया। अब, एक नई रील आ गई है जहां हम सीज़न के सभी मेहमानों को देख सकते हैं। इस बार सारा अली खान अनन्या पांडे के साथ आई हैं। दोनों लड़कियों ने करण जौहर से खुलकर बातचीत की। जब मेजबान सारा अली खान से पूछता है कि अनन्या पांडे के पास ऐसी कौन सी चीज है जो उसके पास नहीं है, तो सारा कहती है ए नाइट मैनेजर। यह सुनकर अनन्या पांडे कहती हैं कि वह अनन्या कोय कपूर हैं।

जैसा कि हम जानते हैं, अनन्या पांडे और आदित्य रॉय कपूर के डेटिंग की अफवाह है। दोनों ने उसका जन्मदिन एक विदेशी स्थान पर मनाया। इससे पहले उन्हें एक रेस्टोरेंट में हाथों में हाथ डाले देखा गया था। अनन्या पांडे और आदित्य रॉय कपूर 2022 से एक साथ हैं। दोनों के बीच उम्र का अंतर होने के कारण किसी को विश्वास नहीं हुआ कि दोनों वास्तव में एक साथ थे।

कॉफी विद करण में अनन्या पांडे हमेशा खबरों में रहती हैं। सबसे पहले वह तारा सुतारिया और टाइगर श्रॉफ के साथ आई थीं। वहां उन्होंने कहा कि उनके जीवन में पहला किस टाइगर श्रॉफ के साथ हुआ था जब उन्होंने स्टूडेंट ऑफ द ईयर 2 में काम किया था। बाद में, लोग विजय देवरकोंडा और अनन्या पांडे के बीच की केमिस्ट्री के दीवाने हो गए। उन्होंने साथ में फिल्म लाइगर की।

चाहे अनन्या पांडे हों या आदित्य रॉय कपूर, दोनों ने कभी भी अपने अफेयर के बारे में सार्वजनिक तौर पर बात नहीं की है। अब वे बातें छिपा नहीं रहे हैं। ऐसा लगता है कि दोनों इस प्रेमालाप का आनंद ले रहे हैं क्योंकि अनन्या पांडे का ध्यान अपने करियर पर है। नेटिज़न्स प्रोमो से नाखुश हैं क्योंकि लोगों को लगा कि इसमें कोई नया चेहरा नहीं है। सारा अली खान, अनन्या पांडे, आलिया भट्ट और करीना कपूर खान कई मौकों पर शो में आ चुकी हैं।

अंकिता लोखंडे और सना रईस खान के बीच हुई तकरार, हदें भी हुई पार? सलमान खान लगाएंगे क्लास

वीकेंड का वार का एक प्रोमो जारी किया गया और हमने देखा कि सलमान खान शो में गायक किंग का स्वागत करते हैं। इसके बाद किंग प्रतियोगियों के साथ एक गेम खेलता है। वह उन्हें गार्डन एरिया में बने बड़े दिल के पास आने के लिए कहता है जिसमें एक दरवाजा भी है।

बिग बॉस 17 शहर में चर्चा का विषय बना हुआ है। यह शो सोशल मीडिया पर काफी लोकप्रिय रहा है। शो की टीआरपी उतनी अच्छी नहीं है लेकिन शो के चाहने वाले बहुत हैं। अंकिता लोखंडे, विककी जैन, ऐश्वर्या शर्मा, नील भट्ट, ईशा मालवीय, अभिषेक कुमार, सनी आर्य, अनुराग धोबाल, जिग्ना वोरा, मुनव्वर फारुकी, फिरोजा खान उर्फ खानजादी, मन्नारा चोपड़ा, नवीद सोले, रिंकू धवन, अरुण श्रीकांत, समर्थ जुरेल, मनस्वी ममगई, सना रईस खान और सोनिया बंसल इस साल बिग बॉस के प्रतियोगी हैं। सलमान खान का वीकेंड का वार एपिसोड हमेशा से दर्शकों का पसंदीदा रहा है। बिग बॉस 17 के प्रतियोगियों के साथ सलमान खान का यह तीसरा वीकेंड का वार है।

वीकेंड का वार का एक प्रोमो जारी किया गया और हमने देखा कि सलमान खान शो में गायक किंग का स्वागत करते हैं। इसके बाद किंग प्रतियोगियों के साथ एक गेम खेलता है। वह उन्हें गार्डन एरिया में बने बड़े दिल के पास आने के लिए कहता है जिसमें एक दरवाजा भी है।

उनका कहना है कि प्रतियोगियों को बताना होगा कि उन्होंने अपने दिल के दरवाजे किसके लिए बंद किए हैं। जिन प्रतियोगियों का नाम बाकी प्रतियोगी लेंगे उन्हें दिल के पीछे खड़ा होना होगा और दूसरा प्रतियोगी दिल का दरवाजा बंद कर लेगा। ऐश्वर्या शर्मा विक्की जैन का नाम लेती हैं क्योंकि वह उस पर भरोसा नहीं कर सकतीं। अरुण महाशेट्टी ने अभिषेक कुमार का नाम लिया। अगली हैं अंकिता लोखंडे और वह सना रईस खान का नाम लेती हैं। मनोरंजन समाचार में यह अब एक बड़ी कहानी है। अंकिता ने कहा कि सना धोखेबाज और पीठ में छुरा घोंपने वाली लोग हैं। सना ने भी जवाब देते हुए कहा कि अंकिता के लिए उनका दिल कभी खुला नहीं था क्योंकि उन्हें कभी भी उनका व्यवहार सच्चा पसंद नहीं आया। सना ने अंकिता को धोखेबाज़ भी कहा और अंकिता ने गुस्से में उनके चेहरे पर दरवाज़ा बंद कर दिया। अंकिता ने बहुत सख्ती से दरवाज़ा बंद कर दिया और इससे सना को चोट लग सकती थी। सलमान खान कभी भी इस तरह के व्यवहार का मनोरंजन नहीं करते हैं और यह देखना दिलचस्प होगा कि क्या वह इस तरह से दरवाजा बंद करने के लिए अंकिता की आलोचना करेंगे जिससे सना को चोट लग सकती थी।

शारिब रुदौलवी
पर विशेष

प्रोफ़ेसर शारिब रुदौलवी ने ता उम्र समाजी व मिली खिदमत अंजाम दीं। वह एक अदीब व दानिश्वर होने के साथ साथ माहिर तालीम भी थे और खास तौर पर लड़कियों की तालीम पर ज़ोर देते थे। उन की ख्वाहिश थी की समाज की हर बची पढ़े। इस ख्वाब की तकमील के लिए उनोहने अपनी बेटी शोआ फातिमा के नाम पर एक कॉलेज शुरू किया और यहाँ ज़रूरतमंदो की मुफ्त तालीम का इंतेज़ाम किया। बुनियादी तौर पर वो उर्दू दुनिया के एक जाने मने तनक़ीद निगार थे जिसके ऐतेराफ़ में उन्हें यश भारती, बहादुर शाह ज़फर अवार्ड के अलावा बहुत से एज़ाज़ात से नवाज़ा जा चूका है। उन की पुरकशिश शख्सियत से हर कोई मुतास्सिर था और यही वजह है की उन के इंतेक़ाल पर एक बड़ा हल्क़ा अफ़सुर्दा नज़र आया। प्रोफ़ेसर शारिब रुदौलवी की कामयाब शख्सियत को चंद सत्रों या चंद सफ़हात में बयान नहीं किया जा सकता। ये सफह उनकी रौशन शख्सियत का अक्स है जिसे पेश किया जा रहा है, वक़्त की तंगी के सबब खास एडिशन के लये मज़ामीन मौसूल नहीं हो सके इस लिये उसकी तारिख में तौसी कर दी है, खुसूसी एडिशन इंशाल्लाह कुछ दिन बाद शाये किया जायेगा। (अवधनामा)

प्रोफ़ेसर शारिब रुदौलवी अवधी तहज़ीब के परवरदा

मासूम मुरादाबादी

प्रोफ़ेसर शारिब रुदौलवी अवधी तहज़ीब के परवरदा एक बुलंद क़ामत नक़्क़ाद, अदीब व शायर थे। उनकी शख्सियत में बला की जाज्बियत थी। वो लिबास व अफ़कार दोनों के मुामले में नुदरत के तरफ़दार थे। तबीयत में बला का इन्कसार और आजिज़ी थी। यही वजह है कि इलमी-ओ-अदबी हलक़ों में उन्हें बड़े एहतराम की निगाह से देखा जाता था। वो उर्दू अदीबों और शायरों की इस नस्ल की आख़िरी निशानी थे जो एक मख़सूस अदबी और तहज़ीबी माहौल में परवान चढ़ी थी और जिसने हमारे इलमी-ओ-अदबी सरमाए में बेश-बहा इज़ाफ़े किए। अब ऐसे लोग नज़र नहीं आते।

प्रोफेसर शारिब रुदौलवी की ज़िंदगी का बेशतर हिस्सा यहां दिल्ली में दर्सो-तदरीस में गुज़रा। सुबकदोशी के बाद वो अपनी जड़ों की तरफ़ लौट गए। करतुल-ऐन हैदर ने "आख़िर शब के हमसफ़र" में लिखा है कि आख़िरी उम्र में इन्सान अपनी जड़ों की तरफ़ लौटता है। प्रोफ़ेसर शारिब रुदौलवी ने भी ऐसा ही किया। इसी लिए वो रिटायरमेंट के बाद लखनऊ चले गए और वहां उन्होंने सरगर्म ज़िंदगी गुज़ारी और आख़िरी वक्त इलमी व अदबी महफ़िलों की शान बढ़ाते रहे। उनके बाद अब लखनऊ में इस पाया का कोई दूसरा अदीब या दानिश्वर मौजूद नहीं है। मैं जब भी किसी अदबी तक़रीब में लखनऊ गया तो वहां प्रोफ़ेसर शारिब रुदौलवी को हमेशा स्टेज पर सदारत करते हुए देखा। वो बिलाशुबा उर्दू के सबसे बुज़ुर्ग अदीब-ओ-नक़्क़ाद थे और 88 बरस की उम्र में भी उनका हाफ़िज़ा पूरी तरह दुरुस्त था। वो इसी अंदाज़ में इलमी-ओ-अदबी गुफ़्तगू करते थे जैसी मैंने उन्हें अब से चालीस बरस पहले दिल्ली की अदबी महफ़िलों में करते हुए देखा था। पिछले दिनों जब मैं उत्तरप्रदेश उर्दू एकेडमी की गोल्डन जुबली तक़रीब में शिरकत के लिए लखनऊ गया तो वो इस यादगार तक़रीब की सदारत कर रहे थे और उन्होंने इसी रंग में तक़रीर भी की। इस तक़रीब को उर्दू सहाफ़त के दो सौ साल के उनवान से मंसूब किया गया था। ये अलग बात है कि इस में सहाफ़ीयों की तादाद आटे में नमक के बराबर थी। इसी तक़रीब में प्रोफ़ेसर शारिब रुदौलवी ने मीर तकी मीर के तीन सौ साल पूरे होने पर एकेडमी को एक तक़रीब मुनाक़िद करने का मश्वरा भी दिया था, जो मंज़ूर कर लिया गया था।

प्रोफ़ेसर शारिब रुदौलवी 01 सितंबर 1935 को बाराबंकी के मर्दुमख़ेज़ ख़ित्ते रुदौली के एक ज़मींदार घराने में पैदा हुए। इब्तिदाई तालीम वहीं हुई। उसके बाद उन्होंने लखनऊ यूनीवर्सिटी से बी.ए. और एम.ए. करने के बाद पी.एच.डी. भी की। दौरान तालीम जिन असातज़ा से उन्होंने कस्ब-ए-फ़ैज़ किया, उनमें प्रोफ़ेसर मसऊद हसन रिज़वी अदीब, प्रोफ़ेसर एहतशाम हुसैन, प्रोफ़ेसर आले-अहमद सरवर और प्रोफ़ेसर नूर-उल-हसन हाश्मी के असमा-ए गिरामी शामिल हैं। उन्होंने "जदीद तन्क़ीद के उसूल" के मौज़ू पर 1965 में प्रोफ़ेसर एहतशाम हुसैन की निगरानी में डाक्टरेट मुकम्मल की। डाक्टरेट करने से कब्ल ही वो दिल्ली के दयाल सिंह कॉलेज में लेक्चरर के तौर पर ख़िदमात अंजाम दे रहे थे। जनवरी 1990 में जवाहर लाल नेहरु यूनीवर्सिटी के शोबा उर्दू में उनका तक़र्रुर बतौर रीडर हुआ और 1993 में वो यहां प्रोफ़ेसर बने और यहीं से 2000 में सुबुकदोश हुए। सुबुकदोशी के बाद उन्होंने अपनी अहलिया प्रोफ़ेसर शमीम निकहत के साथ अपनी बेटी शुआ फ़ातिमा के नाम पर एक कॉलेज क़ायम किया जहां आज भी ज़रूरतमंद बच्चों और बच्चियों को मुफ़्त तालीम दी जा रही है।

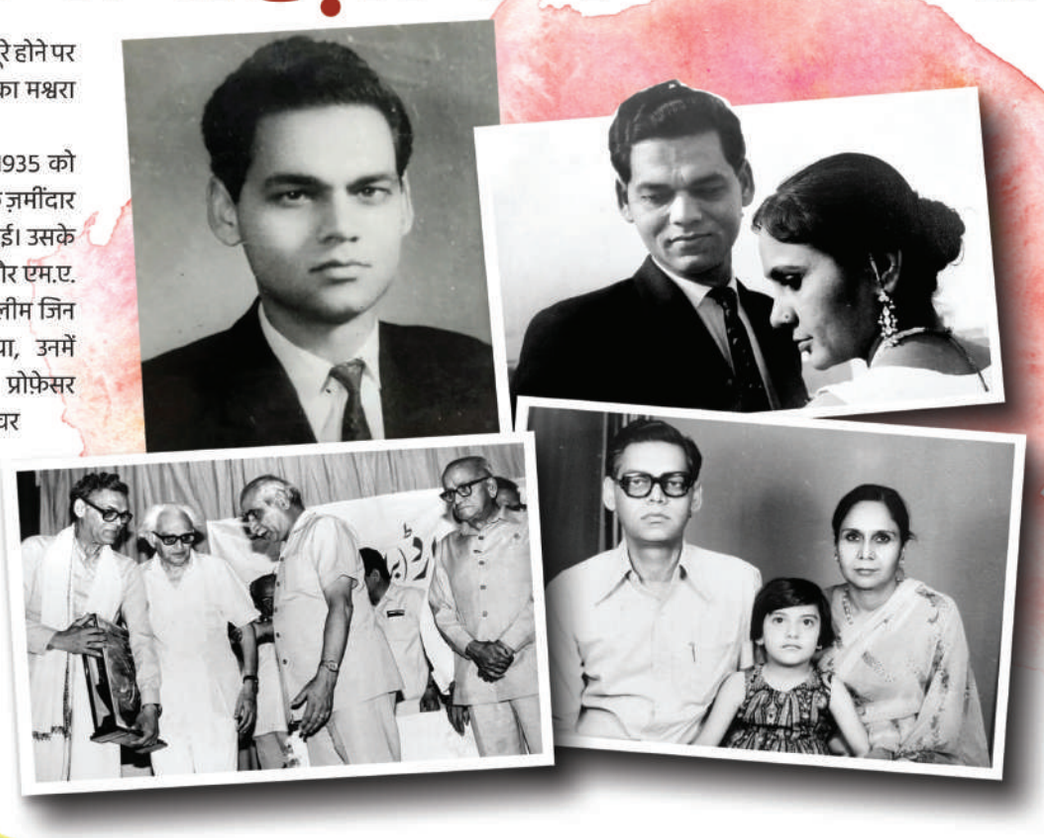

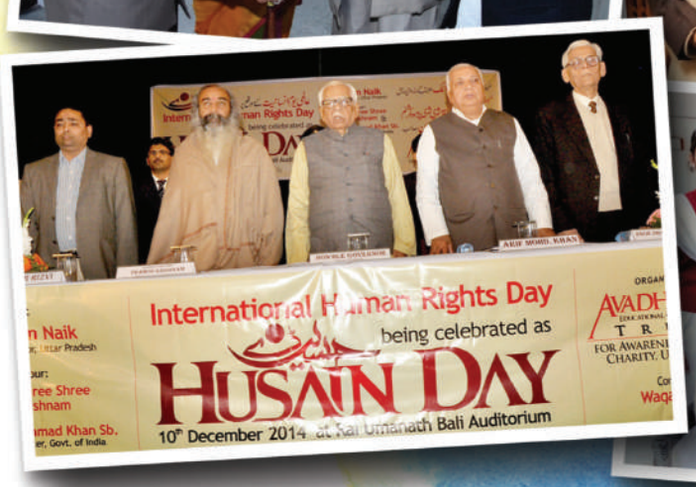

प्रोफ़ेसर शारिब रुदौलवी का इब्तिदाई ज़ौक़-ए-शायरी था, लेकिन अदबी हलक़ों में उनकी पहचान एक मुमताज़ मुहक्क़िक़ और नक़्क़ाद के तौर पर हुई। उन्होंने कोई छः साल तरक़्क़ी उर्दू ब्यूरो में बतौर प्रिंसिपल पब्लीकेशन ऑफिसर भी ख़िदमात अंजाम दीं।

ये बात कम ही लोगों को मालूम है कि उन्होंने लखनऊ यूनीवर्सिटी के ज़माना-ए-तालिब इलमी के दौरान 1955 में एक पंद्रह रोज़ा अख़बार "पासबान तुलबा" शाया किया था और इसी बरस कुछ अरसा लखनऊ के रोज़नामा "उर्दू" के मुदीर भी रहे। 1955 में ही उन्होंने मारुफ़ व मुमताज़ सहाफ़ी हफ़ीज़ नोमानी के साथ रोज़नामा "तहरीक" भी निकाला था। हफ़ीज़ नोमानी उसके मुदीर थे और शारिब रुदौलवी नायब मुदीर। वो एक अरसे तक रोज़नामा "अवधनामा" के एडिटोरियल एडवाइज़र भी रहे। उनकी पहली किताब "मिरासी-ए-अनीस में ड्रामाई अनासिर 1959 में शाया हुई थी। 1936 से 1960 का दरमियानी दौर-ए-तरक़्क़ी पसंद तहरीक के उरूज का दौर था। अपने इल्मी और अदबी सफ़र के आग़ाज़ में ही प्रोफ़ेसर शारिब रुदौलवी इस तहरीक से वाबस्ता हो गए थे। इस दौरान उन्हें जिन शख्सियात के साथ काम करने का मौक़ा मिला, उनमें सज्जाद ज़हीर, प्रोफ़सर एहतशाम हुसैन और अली सरदार जाफ़री के नाम काबिल-ए-ज़िक्र हैं। उनकी फ़िक्र और तहरीरों पर सबसे ज़्यादा असर अपने उस्ताद प्रोफेसर एहतशाम हुसैन का था। प्रोफेसर क़मर रईस के लफ़्ज़ों में:

"डाक्टर शारिब रुदौलवी का शुमार सय्यद एहतशाम हुसैन के तिलामज़ा अरशद में होता है। उन्होंने उर्दू तन्क़ीद में साइंटिफिक तजज़िया और मारुज़ी तर्ज़-ए-फ़िक्र को रिवाज दिया, जो एहतशाम हुसैन के तन्क़ीदी अस्लूब का इम्तियाज़ी अंसर रहा है। क़दीम अदब के नमूने हों या जदीद या मुआसिर अदब के रुजहानात वो यकसाँ सहूलत से उनका जायज़ा लेते हैं और अक्सर सही नताइज तक पहुंचते हैं।" (तरक़्क़ी-पसंद अदब के मेम्मार सफ़ा 310)

प्रोफ़ेसर शारिब रुदौलवी ने 18 अक्तूबर 2023 को लखनऊ में मुख्तसर अलालत के बाद वफ़ात पाई और कर्बला अब्बास बाग़ में मदफ़ून हुए। उनकी वफ़ात पर अल्लामा इक़बाल का ये शेर याद आता है।

जो बादाकश थे पुराने, वो उठते जाते हैं,
कहीं से आब बकाए दवाम ले साक़ी!

शारिब रुदौलवी निधन से पूर्व राज्यपाल राम नाईक दुखी

शायर तथा उर्दू साहित्यकार शारीब रुदौलवी के दुखद निधन से मैं आहत हूँ ऐसा पूर्व राज्यपाल श्री राम नाईक ने कहा। अपने शोक संदेश में श्री राम नाईक कहते है, लखनऊ आने के बाद मुझे जिन चंद महानुभावों का विशेष स्नेह मिला उनमें बड़े अजीज थे शारीब रुदौलवी जी! मेरे मन में उर्दू के प्रति स्नेह भाव बढ़ाने के सफल प्रयास उन्होंने किए। मैं खुशकिस्मत हूँ की मेरी संस्मरणात्मक पुस्तक 'चरैवेति! चरैवेति!!' में उन्होंने विशेष रुचि दिखायी, इतनाही नहीं तो उसका अन्य भाषाओं में अनुवाद हो व उर्दू भाषिक भी उसे पढे इसलिए उन्होंने विशेष प्रयास किए। जब मैं पिछली बार लखनऊ आया था तब वें अपनी जीवनी लिख रहे थे और उन्होंने मुझे उसमें से मेरे बारे में लिखे अंश भी मुझे स्वयं पढ़ कर बताए थे। मैं भाग्यशाली हूँ कि मुझे उनका इतना स्नेह मिला। शारीब रुदौलवी जी को जन्नत मिले, उनके परिवारजनों तथा उर्दू साहित्य प्रेमियों को इस दुखद पल में संबल मिले, ऐसी प्रार्थना भी पूर्व राज्यपाल राम नाईक ने की है।

अखिलेश यादव ने व्यक्त किया शोक

प्रोफेसर शारिब रुदौलवी के इंतेक़ाल पर पूर्व मुख्यमंत्री और समाजवादी पार्टी के राष्ट्रिय अध्यक्ष अखिलेश यादव ने शोक व्यक्त किया है उन्होने कहा कि मशहूर शायर लेखक और यश भारती से सम्मानित शारिब रुदौलवी का इंतेक़ाल अपूरणीय क्षति है ईशवर दिवंगत आत्मा कि शांति एवं शोकाकुल परिवार को दुःख की घड़ी में संबल प्रदान करे।

आह! शारिब भाई एक रौशन दिमाग़ न रहा, शहर में एक चिराग़ था न रहा

1956 से मेरे करम-फ़रमॉ दोस्त व भाई शारिब रुदौलवी के इन्तेक़ाल की ख़बर मेरे लिए इन्तेहाई रंज-ओ-ग़म वाली है। दिल तहोबाला है इस बात पर आमादा भी नही कि शारिब भाई यू साथ छोड़ गये। आंखों में उनके साथ का माज़ी रवॉ है। आज दुनिया-ए-अदब का ताबनाक आफ़ताब ना रहा जिसकी कमी की तलाफ़ी शायद मुमकिन नही। उनकी इल्म-ओ-अदब पर गहरी गिरफ़्त, उनकी इन्केसारी, सादगी, लहजे की शीरीं और हर किसी को अपना बना लेने की अदा का आज ख़ात्मा हो गया।

जिन्हे अब गर्दिश-ए-अफ़लाक
पैदा कर नही सकती।
कुछ ऐसी हस्तियॉ भी दफ़्न हैं,
गोर-ए-गरिबॉ में।

परवरदिगार से दुआ है कि शारिब भाई की मग़फिरत फ़रमाये और उनके दरजात आली करे। हम और मेरा पूरा ख़ानदान शारिब रुदौलवी के अहल-ए-ख़ानदान से ताज़ियत पेश करता है।

अम्मार रिज़वी

एक शफ़ीक़ सरपरस्त न रहा

शारिब साहब के इंतिक़ाल की ख़बर मेरे शौहर के जाने के बाद मेरे लिए दूसरा बड़ा सदमा है। उनके चले जाने से ऐसा महसूस हो रहा है जैसे कोई मुशफ़िक़ सरपरस्त ने साथ छोड़ दिया। उनके वजूद से एक सरपरस्ती का एहसास होता था। उनसे जब भी बात होती तो वो भी हमदर्दी और मुहब्बत का इज़हार करते। मुझे हिम्मत देते और मुसीबतों से न घबराने की तलक़ीन करते। 08 अक्तूबर को शमीम निकहत फ़िक्शन ऐवार्ड प्रोग्राम के बाद जब मैं उनसे मुलाक़ात करने घर गईं तो मैं अपने जज़बात को रोक न सकी क्योंकि उनके घर में हमेशा अपने शौहर के साथ जाती थी उन्होंने दुआएं देते हुए मुझसे कहा था अब बच्चों और अवधनामा की ज़िम्मेदारी तुम्हारी है तुम्हें हिम्मत से काम लेना होगा। इसके बाद वो अस्पताल में एडमिट हो गए। वहां भी जब मैं अयादत के लिए गई तो उन्होंने कहा था कि वक़ार साहब ने फ़िक्शन ऐवार्ड के मेयार को बुलंद किया था और मैंने उसे क़ायम रखा मेरी दुआ है कि आगे भी ये प्रोग्राम ऐसे ही अपनी शनाख़्त क़ायम रखे। मुझे क्या मालूम था कि ये उनकी आख़िरी दुआ होगी। ये ग़म कभी भुलाया नहीं जा सकता। ख़ुदा उनकी मग़्फ़िरत फ़रमाए।

तक़दीस फ़ातिमा (प्रोपराइटर अवधनामा)

प्रो. शारिब रुदौलवी के निधन पर प्रियंका गांधी ने किया शोक व्यक्त

अवधनामा के सम्पादकीय सलाहकार प्रोफेसर शारिब रुदौलवी के निधन पर कांग्रेस महासचिव और उत्तरप्रदेश प्रभारी प्रियंका गाँधी ने शोक व्यक्त किया है प्रियंका गाँधी का शोक पत्र आज प्रदेश कांग्रेस अल्पसंख्यक सेल के अध्यक्ष शाहनवाज़ आलम के साथ प्रतिनिधि मंडल मरहूम शारिब रुदौलवी के भांजे आसिम रज़ा से मिला और पत्र सौंपते हुए शोक व्यक्त किया। प्रियंका गाँधी ने पत्र में कहा है कि उर्दू जगत के परशिदज विद्वान प्रोफेसर शारिब रुदलवी साहब के निधन की सूचना से अत्यंत दुःख पंहुचा है, उनके निधन से देश के बौद्धिक जगत की अपूरणीय क्षति हुई है।